मध्यप्रांत का कण्डेल नहर सत्याग्रह (1920)

नीलेश शर्मा इतिहास विभाग रा.दु.वि.वि. (जबलपुर)

बारडोली का सत्याग्रह जो भारत में प्रसिद्ध हुआ था, वैसा ही छत्तीसगढ़ में रायपुर जिले के धमतरी तहसील का ''कण्डेल नहर सत्याग्रह'' है। यह अभी तक बहुत कम लोगों को ज्ञात है। स्वयं महात्मा गांधी ने कण्डेल नहर सत्याग्रह को ''दुसरी बारडोली'' कहकर परिभाषित किया है। धमतरी तहसील के समीपस्थ कण्डेल नामक ग्राम में यह सत्याग्रह हुआ था, इसलिये इसका नाम ''कण्डेल नहर सत्याग्रह'' पड़ा।

कण्डेल नहर सत्याग्रह के निम्न कारण थे –

नहर विभाग द्वारा कण्डेल गांव के निवासियों पर चोरी का झूठा आरोप लगाया जाना।नहर विभाग द्वारा ग्रामवासियों से नाजायज ढंग से जुर्माने की रकम वसूल करना।जुर्माने की रकम वसूल करने के लिये ग्रामवासियों पर अत्याचार करनां क्षेत्रीय अभिलेखों के अध्ययन से ऐसा ज्ञात होता है कि संपूर्ण छत्तीसगढ़ में रायपुर जिले के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रवर्तक श्री नारायणराव मेघावाले, पंडित सुन्दरलाल शर्मा, नत्थूजी जगताप एवं छोटेलाल श्रीवास्तव आदि कर्मठ कार्यकर्ता थे। पंडित रविशंकरशुक्ल से पहले रायपुर जिला में राष्ट्रीय जागरण के प्रवर्तक उपरोक्त क्षेत्रीय कार्यकर्ता ही थे। इसकी पुष्टि पंडित द्वारका प्रसाद मिश्र ने भी अपनी पुस्तक ''लिविंग एन एरा'' में किया है। रायपुर में राष्ट्रीय गतिविधि प्रारंभ होने से पहले धमतरी में पर्याप्त जागृति हो चुकी थी।

धमतरी तहसील में सन् 1918 में श्री वामनराव लाखे की अध्यक्षता में जन जागृति के प्रतीक स्वरूप पहला राजनीतिक परिषद आयोजित किया गया। दादा साहब खापर्ड़े कीअध्यक्षता में दूसरा राजनीतिक सम्मेलन भी धमतरी में सन् 1919 में आमंत्रित किया गया। सन् 1920 का वर्ष भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिये नयी जागृति लेकर आया। इसी वर्ष पंडित सुन्दरलाल शर्मा, छोटेलाल श्रीवास्तव एवं पंडित नारायणराव मेधावाले के नेतृत्व में कण्डल नहर सत्याग्रह प्रारंभ हुआ।

सन् 1916 के पूर्व पूर्वार्ध के शासकीय प्रतिवेदन से ज्ञात होता है कि अनेक सार्वजनिक संस्थाओं तथा संगठनों की ओर से सेक्रेटरी ऑफ स्टेट तथा वायसराय के पास शिष्टमंडल भेजने की अनुमति हेतु आवेदन पत्र प्राप्त हुये थे। भारत में अन्य प्रान्तों के साथ मध्य प्रान्त के भावी प्रशासन हेतु विशेष रूप से अनेक वैकल्पि योजनायें प्राप्त हुई। अभी तक इस प्रांत में सुधारों हेतु कोई भी न्यायोचित और संतुलित योजना नहीं रखी गई थी। सन् 1915–16 के

शासकीय प्रतिवेदन से यह ज्ञात होता है कि सरकारी अधिकारियों के प्रति लोगों का रूख काफी सामान्य हो गया था। प्रशासन के अनेक विकास कार्यों के प्रति जन–समुदाय के बढ़ते हुये सहयोग तथा विश्वास के उत्साहवर्धक संकेत प्राप्त हुये। इन्हीं योजनाओं के संदर्भ में मध्यप्रान्त में महानदी नहर योजना का शुभारंभ समारोह सर बी. रार्बटसन द्वारा किया गया। मध्यप्रान्त में महानदी वृहद् योजनाओं की श्रेणी में महानदी नहर योजना का स्थान प्रथम या इस नहर – योजना का श्रेय श्री ईरियह को जाता है, वे सिंचाई के मुख्य अभियंता थे।

मध्यप्रान्त तथा बरार शासन ने रायपुर जिलान्तर्गत धमतरी तहसील के माड़म–सिल्ली ग्राम के पास सन् 1914 में सेलरिया नदी के एक वृहत् बांध का निर्माण किया था। इसके द्वारा सेलरिया नदी को एक वृहत् जलाशय का रूप देने के पश्चात् इस सिंचित जल को महानदी में बहाकर रूद्री ग्राम के पास एक और बांध महानदी में निर्माण किया गया। यहां से एक नहर निकाल कर उसके द्वारा निकटवर्ती ग्रामों की खेती की सिंचाई के लिये जल पहुंचाने का कार्य कुछ वर्षों से प्रारंभ किया गया था। नहर विभाग को इससे पर्याप्त आय नहीं हो पाती थी।

नहर विभाग के अधिकारियों ने दस वर्षीय नहर आबपसी नामक एक मसविदा तैयार किया। समझौते में गांव के कृषकों के लिये विशेष आपत्ती की बात यह थी कि उसका प्रति एकड़ लगान व निस्बतकाली जमीन के लगान के प्रति एकड़ से अधिक निर्धारित किया गया था, जिसे कृषक देने में असमर्थ थे। समझौते के सम्बन्ध में ग्रामवासियों का सुझाव था कि दस वर्षों में सिंचाई के लिये गांव की नहर आबपासी के लिये जो धन व्यय करना होगा, उससे उस गांव में सिंचाई के लिये एक वृहत् आबपासी का तालाब सदा के लिये निर्मित हो सकता है। इसी विचार से प्रेरित होकर अनेक गांव के कृषक इस समझौते के लिये तैयार नहीं हुए, जिसमें छोटेलाल श्रीवास्तव का कण्डेल नामक गांव भी था।''

नहर विभाग को अपने अब तक के कार्य से संतोष नहीं था। ऐन–केन प्रकारेण प्रगति देना भी अनिवार्य था। इसलिये सर्वप्रथम कण्डेल ग्राम को ही नहर विभाग ने अपना कार्य–क्षेत्र चुना/ कण्डेल ग्राम के मालगुजार छोटेलाल श्रीवास्तव छत्तीसगढ़ के कर्मठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे।

नहर विभाग के कण्डेल गांव को जाने वाली शाखा नहर की नाली को काटकर उस गांव के संपूर्ण खेती में पानी देने का विचार किया जिससे उस गांव के खेतों की सिंचाई होना संभव हो कसे। ऐसी परिस्थिति में उस गांव के किसानेां पर चोरी से पानी ले जाने का झूठा आरोप लगाकर जुर्माना सहित नहर पानी का लगान वसूल करने का मार्ग प्रशस्त हो जाता। किंतु नहर विभाग के दुर्भाग्य से अथवा गांव वालों के सौभाग्य से उस राशि को ही वहां तथा समीपवर्ती गांवों में इतनी वर्षा हुई कि कोई यह नहीं कह सकता था कि इस भीषण वर्षा के बावजूद नहर–नाली काटकर गांव वालों की खेती की सिंचाई की आवश्यकता हुई होगी। किंतु सूर्य के प्रकाश जैसे उज्जवल तथ्य को नहर विभाग के कर्मचारी विचार करने में सर्वथा असमर्थ रहे। उस गांव के सभी किसानों पर पानी ले जाने का मिथ्या

आरोप लगाकर नहर विभाग ने 4304 रूपये नहर पानी का लगान लगाने में अपनी दक्षता का परिचय दिया तथा तत्क्षण उसकी वसूली की कार्यवाही का भी आदेश देने में अपनी कार्यपटुता दिखलाई।

रामपुर जिले के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के लिये इस अविवेकपूर्ण तथा कुत्सित कार्य का विरोध करने के अतिरिकत कोई मार्ग नहीं था। स्थानीय नेताओं ने सत्याग्रह करने का दृढ़ निश्चय किया। सीमावधि के अंतर्गत कर पटाने विधेयक शासन के सूचना पत्र की कोई चिन्ता गांव वालों ने नहीं की। शासन के लिये गांववासी का यह उपेक्षापूर्ण व्यवहार असहाय हो गया। नहर विभाग ने उस गांव के समस्त मवेशियों को कुर्क कर लिया गया एवं नीलामी के लिये मवेशियों को सर्वप्रथम धमतरी के रविवारीय बाजार में लाया गया। स्थानीय कर्मठ कार्यकर्ताओं के प्रचार एवं प्रयत्न के परिणामस्वरूप इन उपयोगी मवेशियों पर बोली बोलना तो दूर रखा प्रत्युत्तर सर्वसाधारण जन भी मवेशियों के निकट जाने में महान कलंक का अनुभव करने लगे।

कण्डेल नहर सत्याग्रह का समाचार तहसील में सर्वत्र विद्युत की तरह फैल गया। सत्याग्रह प्रचार हेतु तहसील के चारों ओर देशभक्त एवं स्वयंसेवकों की ट्राली मवेशियों और शासकीय कर्मचारियों के पहुंचने के पूर्व ही पहुंच जाती थी। शासकीय कर्मचारियों की सर्वत्र वहीं गति होती थी। जो गति उनकी धमतरी बाजार में हुई थी। रात–दिन के आवागमन एवं चारे की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण मवेशी अकाल मृत्यु को प्राप्त हुये। परंतु मदान्ध शासन को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी।

अन्त में शासन ने कण्डेल ग्राम के समस्त स्थानीय कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया। स्थानीय नेताओं ने गिरफ्तारी के प्रति कोई भी तत्परता नहीं दिखायी। इसके विपरीत पंडित सुन्दलाल शर्मा नहर सत्याग्रह की अखिल भारतीय रूप प्रदान करने के लिये 2 दिसम्बर 1920 को महात्मा गांधी के पास कलकत्ता गये और वहां उनको नहर सत्याग्रह की परिस्थिति से अवगत कराया। सन् 1920 में ही महात्मा गांधी ने कण्डेल ग्राम जाकर ग्रामवासियों को उनकी नहर सत्याग्रह की सफलता के लिये धन्यवाद दिया तथा उनको सत्याग्रह के मौलिक गुणों से अवगत कराया। कण्डेल नहर सत्याग्रह में स्थानीय नेताओं ने नहर सत्याग्रह को लोकप्रिय बनाने हेतु तहसील के समस्त क्षेत्रों में प्रचारात्मक कार्य किया। महात्मा गांधी को रायपुर लाने का भार शर्मा जी को देकर स्वयं नारायण राव मेधावाले स्थानीय कार्यक्रमों में संलग्न रहे। समष्टि की बेदी पर व्यष्टि की बलि स्थानीय नेताओं की विशेषता रही है। सन् 1920 में ही महात्मा गांधी ने रायपुर–धमतरी को प्रथम यात्रा की। अतः छत्तीसगढ़ के स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में रायपुर जिले का कण्डेल नहर सत्याग्रह विख्यात है।

शासन पर इसकी विपरीत प्रतिक्रिया हुई। वस्तुस्थिति का पता लगाने ब्रिटिश अधिकारियों का कण्डेल ग्राम में आगमन हुआ। अधिकारी वर्ग को भी ऐसा आभास हुआ कि नहर विभाग के कुत्सित मनोवृत्ति से प्रेरित होकर ही ऐसा कार्य किया था। गांव वालों की दृढ़ता एवं सत्यता के आगे शासन को झुकना पड़ा। अंत में शासन को लगान माफ करने की घोषणा करनी पड़ी।

राययपुर जिले का यह नहर सत्याग्रह असहयोग आन्दोलन (1920) के पूर्व ही पूर्ण सफलता के साथ संपन्न हुआ।

जहां तक विषय वस्तु के महत्व का सवाल है, उपरोक्त नहर सत्याग्रह का महत्व गुजरात के प्रसिद्ध बारडोली सत्याग्रह (1928) और बिहार के चम्पारन–सत्याग्रह (1916) से कुछ भी कम नहीं है। स्वयं महात्मा गांधी ने इसे ''दूसरी बारडोली'' की संज्ञा से विभूषित किया था। अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि देश में गांधी युग के विधिवत सूत्रपात के पहले ही यहां असहयोग तथा सत्याग्रह पर आधारित आंदोलन हुआ था जो कण्डेल नहर सत्याग्रह के नाम से विख्यात है। यह नहर सत्याग्रह सन् 1917 में प्रारंभ होकर सन् 1920 में महात्मा गांधी के रायपुर आगमन के पूर्व ही सफलतापूर्वक समाप्त हो गया था।

निष्कर्ष : कण्डेल नहर सत्याग्रह इस बात को प्रमाणित करता है कि उस समय मध्य प्रान्त का रायपुर जिला राष्ट्रीय गतिविधियों का केन्द्र था। यह आन्दोलन जन आन्दोलन का प्रतीक था। यह आन्दोलन राष्ट्रीय नेताओं द्वारा ही नहीं बल्कि क्षेत्रीय नेताओं द्वारा प्रारंभ किया गया था जो क्षेत्रीय इतिहास की बहुत बड़ी उपलब्धि है। दुख की बात है कि आज भी क्षेत्रीय इतिहास हमारे समक्ष उपेक्षित है।

संदर्भ–सूची:

1.श्रीमति सावित्री मिश्रा – छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन के सूत्रधार, 1967 पृ. 19

2.छत्तीसगढ़ में गांधी जी, गांधी शताब्दी समारोह समिति, रविशंकर विश्वविद्यालय,रायपुर द्वारा प्रकाशित 1970 प्रस्तावना।

3.Raipur District Gazetteer of Madhya Pradesh, 1973, p. 78.

4.मध्यप्रदेश संदेश, स्वाधीनता रजत जयंती विशेषांक, सूचना तथा प्रकाशन विभाग म.प्र. भोपाल, 1976 ए, पृ. 52–53

5.Raipur District Gazetteer, Op. Cit. p. 77.

6.रायपुर नगर निगम रिपोर्ट, 1972, पृ. 31

7.नारायण लाल परमार – छत्तीसगढ़ के रत्न भाग – 2, 1970, पृ. 56–57.

8.महाकौशल दीपावली विशेषांक, रायपुर, 1971 पृ. 109.

9.कमला कांत वर्मा, छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का परिचय, 1975 पृ. 7.

Growth of Msmes In India: A Five Year Comparative Study On Employment, Enterprise And Investment

Dheeraj Rahim[1], Dr. Ashok Soni[2]

1. RESEARCH SCHOLAR, R.D.V.V. AND ASSISTANT PROFESSOR, DEPARTMENT OF COMMERCE, HAWABAGH WOMENS COLLEGE, JABALPUR, M.P.
2. HOD, DEPARTMENT OF COMMERCE, HAWABAGH WOMENS COLLEGE, JABALPUR, M.P.

ABSTRACT: Micro, Small and Medium Enterprises (MSME) sector has emerged as a highly vibrant and dynamic sector of the Indian economy over the last five decades. MSMEs not only play crucial role in developing nation but it also helps in providing employment by increase in number of enterprises with the help of large amount of investments by government distributing it equally every year from income and wealth of nation. MSMEs are complementary to large industries as ancillary units and this sector contributes enormously to the socio-economic development of the country.

The present article deals with MSMEs and in their role economic growth and employment generation in the Indian context. The article discusses the growth of MSMEs during 2009-2014 in the terms of employment, enterprise and investment. The environment of MSMEs in the nation has drastically changed from in house development to global scenario.

KEYWORDS: MSMEs, employment, enterprise, investment.

INTRODUCTION: The MSME sector is an important pillar of Indian economy as it contributes greatly to growth of Indian economy with a vast network of around 30 million units, creating employment of about 70 million, manufacturing more than 6000 products, contributing about 45% to manufacturing output and about 40% of exports, directly and indirectly.

Despite the significant contributions of the MSME sector, the sector continues to face certain constraints like, as pointed out in PM's Task Force Report, 2010, availability of adequate and timely credit, high cost of credit, collateral requirements, access to equity capital and rehabilitation of sick enterprises, etc. It thus emerges that adequate, timely and affordable credit is one of the bigger issues for the MSME sector.

At present, a literature survey indicates that no study for the estimation of credit gap for the MSME sector is available in India. However, the National Commission on Enterprises in the unorganized Sector (NCEUS) had estimated the credit gap only for the micro enterprises at 73% as at end March 2012-the terminal year of the 11th Five Year Plan, with the caveat that the number of such unorganized micro enterprises was estimated at 70 million with an average credit off take of ` 1.23 lakh per enterprise. This is in contrast to the MSME sector, which is estimated to have 32.2 million enterprises with an average credit off take of ` 7.16 lakh as at end March, 2012, based on scheduled commercial banks data on number of MSME accounts.

REVIEW OF LITERATURE:

1. Lahiri R. (2012) studied the definitional aspect of MSMEs and explore the opportunities availed and the challenges faced by them. It was observed that MSMEs in India is passing threw a tough situation due to extreme competition from large industries due to lack of infrastructure, anti-dumping policy, challenges on product Standardization, total quality management etc.

2. Chandraiah M. (2013) in his research paper focused on economic policy introduced by government of India in 1991. The policy shifted at the behest of IMF and World Bank which led to unequal competition between multinational companies and small Indian enterprises. There is need to promote this sector because Small sector is a vital constituent of overall industrial sector of any country particularly India.

3. S. L. Gupta & R. Ranjan (2014) concluded that the policy of liberalization which was aimed to deregulate the market and keep investments flowing was successful to increase the number of units, but their overall productivity leaves a lot to be desired. It was also revealed that Increase in number of Units and Employment have shown proportionate growth over the period but export and production has been fluctuating significantly and per unit increase in rate of production was unable to match with overall increase in production rate. It indicates that new units added during the years actually taking time to match the overall production rate of older units due to new innovation and techniques. Similar is the case for Exports from MSMEs It was observed that investment coming from outside is meant to tap local market rather than to export.

4. Gohill, Mike (2009) evaluated the problems faced by Indian small business sector in this transformation era, and viewed that less than 5% of the small businesses are successful remaining continues to function with

various problems, prominent among them is lack of managerial experience of entrepreneurs.

5. Mungaya et al. (2012) conducted a survey about the fact that the tax plays an important role in the growth of MSMEs. Findings indicate that the majority of the respondents perceives the adverse impact of existing tax policies on the growth of MSMEs and suggest for reforming the tax policies in the Country. The findings would help the stakeholders in designing measures to align the tax-system to MSMEs in a more effective manner.

6. According to a review of literature on MSEMs done by The Challenge of Employment in India: An Informal Economy Perspective, Volume-I, Main Report, National Commission for Enterprises in the unorganized Sector (NCEUS), April, 2009, :
The Third Census of Small Scale Industries (2001-02) (Government of India, 2004) revealed that over 99 per cent of small scale industries (SSIs) exist in the form of micro (tiny) enterprises whose average per unit fixed investment was a meager Rs.1.47 lakh. Further, over 94 per cent of all small enterprises are unorganized sector enterprises as per the NCEUS definition and they belong to the lower segment of micro-enterprises i.e. with an investment below 5 lakh.

7. The Challenge of Employment in India: An Informal Economy Perspective (NCEUS, 2009) shows that Banks show their reluctance to extend credit to small enterprises because of the following reasons:
1. High administrative costs of small-scale lending
2. Asymmetric information
3. High risk perception and
4. Lack of collateral

OBJECTIVE OF THE STUDY: The major objectives of the study are as follows:

1. To analyze the employment provided by MSMEs in India during the year 2009-2014.
2. To examine the changing pattern of enterprises in Micro, Small and Medium Enterprises (MSMEs) in India and analyze the impact of Micro, Small and Medium Enterprise Development (MSMED) Act, 2006 during 2009-2014.
3. To analyze the fixed investment opportunities and threats of MSMEs in India during 2009-2014.

DATA ANALYSIS AND INTERPRETATION: Data used in the study are secondary in nature and mostly collected from the Annual reports published by the Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises. The study covers a period from 2009-2014 and includes parameters namely No. of enterprises, employment and fixed investments which have been used for performance analysis of MSMEs in employment, enterprise and investment that period. The period 2009-2014 had been selected because the data is recent which shows the recent changes in MSMEs in the development of nation. The data is authentic as it is collected from the annual report published by the Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises.
The data was analyzed and split up according to the year of employment, enterprise and investment. Further the data was analyzed by percentage method, taking the year 2009-2010 as base year which provided the increase in yearly employment, enterprise and investment methods till 2009-2010.
Following are the tabular and graphical representation of the yearly employment, enterprise and investment and the increase in percentage ratio

- Table I and Figure I shows us the yearly employment and increase in percentage ratio for the period 2009-14.
- Table II and Figure II shows us the number of enterprises per year and increase in percentage ratio for the period 2009-14.
- Table III and Figure III shows us the yearly investment and increase in percentage ratio for the period 2009-14.

From Table I and Figure I given above we can see the numbers of persons employed in these industries have increased from 921.79 lakhs in 2009-2014 to 1114.29 lakhs in 2013-14, which indicates that there has 20.9% (taking 2009-2010 as base year) increase in employment in a span of 5 years.

TABLE I: Yearly increase in employment

YEAR	TOTAL EMPLOYMENT (IN LAKHS)	PERCENTAGE INCREASE (~)
2009-2010	921.79	
2010-2011	965.15	4.7%
2011-2012	1011.69	9.8%
2012-2013	1061.40	15.2%
2013-2014	1114.29	20.9%

FIGURE I: Yearly increase in employment

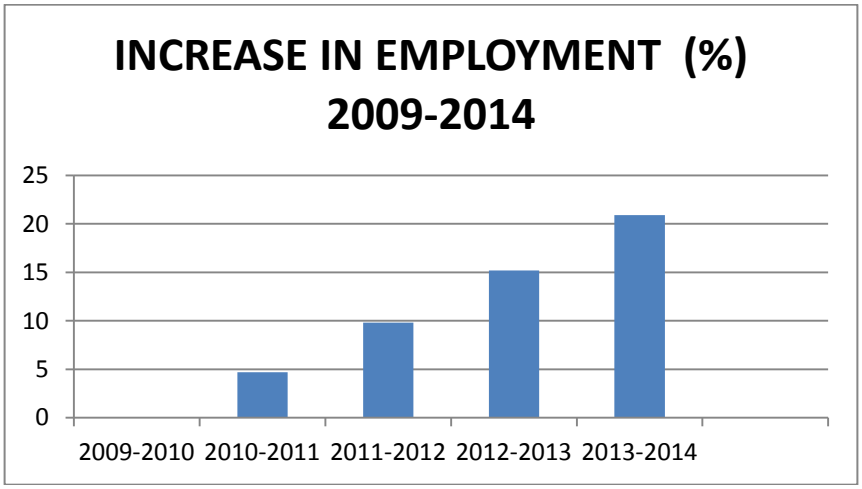

From Table II and Figure II given above we can see clearly the total numbers of enterprises have increased from 410.80 lakhs in 2009-2010 to 488.46 lakhs in 2013-14. The enterprises have grown 19% (taking 2009-2010 as base year) in a span of 5 years. The growth rate 2011-12 & 2012-13 is almost equal.

TABLE II: Yearly increase in number of enterprises

YEAR	NO. OF MSME ENTERPRISES (IN LAKHS)	PERCENTAGE INCREASE (~)
2009-2010	410.80	
2010-2011	428.73	4.4%
2011-2012	447.64	9%
2012-2013	447.54	9%
2013-2014	488.46	19%

FIGURE II: Yearly increase in number of enterprises

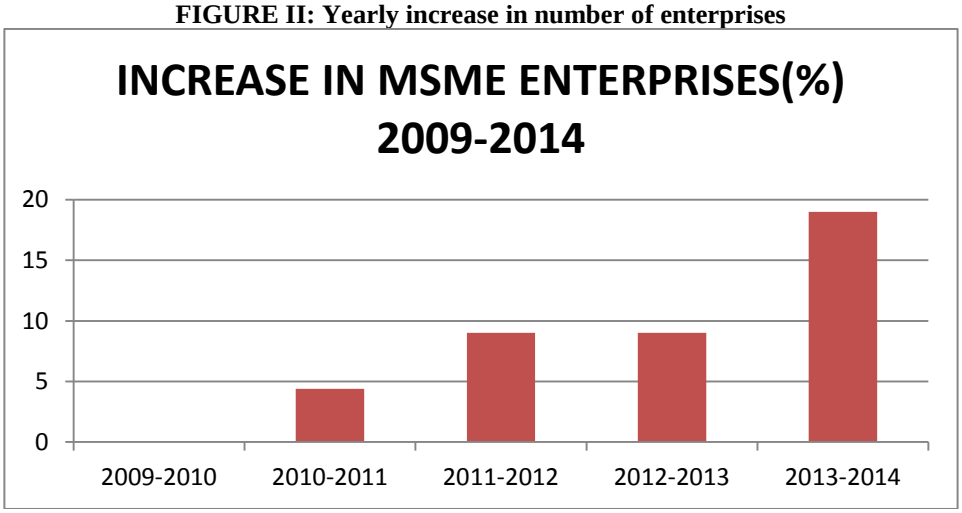

From Table III and Figure III given above we can see clearly The fixed investments in these industries have gone up from Rs.103854608 lakhs in 2009-2010 to Rs. 136370054 lakhs in 2013-14. The fixed investments in these industries have increased by 31.6% (taking 2009-2010 as base year) in 5 years. This indicates that lot of investment has been made in MSMEs to increase their development in the interest of nation.

TABLE III: Yearly increase in investment

YEAR	TOTAL INVESTMENT (IN LAKHS)	PERCENTAGE INCREASE (~)
2009-2010	103854608	
2010-2011	110593409	6.5%
2011-2012	118275764	13.9%
2012-2013	126876367	22.2%
2013-2014	136370054	31.6%

FIGURE III: Yearly increase in investment

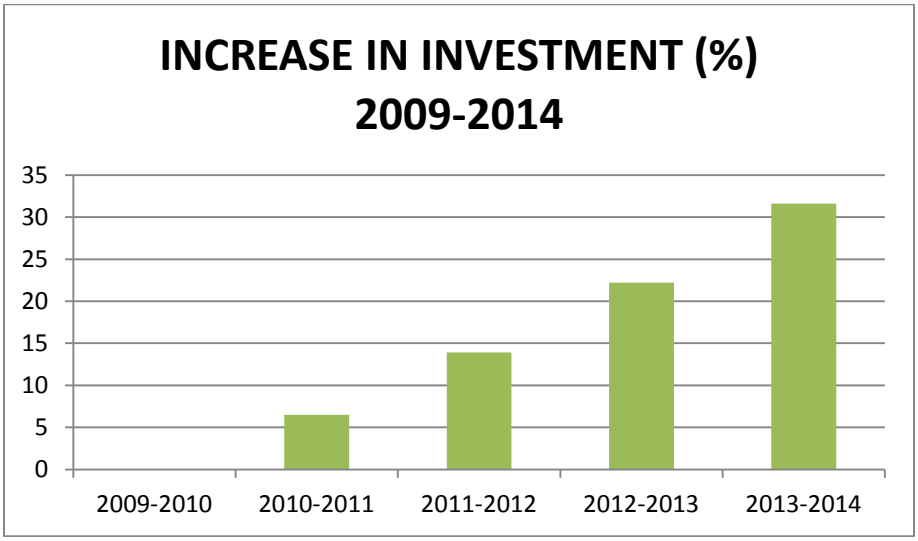

The compiled data shown in Table IV and Figure IV below shows us that the growth rates increasing year by year. This indicates that lot of investment has been made in MSMEs to increase their development and the contribution in the Indian economy. The father of nation, Mahatma Gandhi said that the small and micro enterprises are the backbone of Indian industrial sector. The sayings of father of nation has been holding true in Indian economy. Therefore, the central as well as state governments should give priority in the development of this sector by making them more competitive.

TABLE IV: OVERALL INCREASE IN EMPLOYMENT, ENTERPRISE & INVESTMENT

YEAR	EMPLOYMENT % INCREASE (~)	ENTERPRISE % INCREASE (~)	INVESTMENT % INCREASE (~)
2009-2010			
2010-2011	4.7%	4.4%	6.5%
2011-2012	9.8%	9%	13.9%
2012-2013	15.2%	9%	22.2%
2013-2014	20.9%	19%	31.6%

FIGURE IV: OVERALL INCREASE IN EMPLOYMENT, ENTERPRISE & INVESTMENT

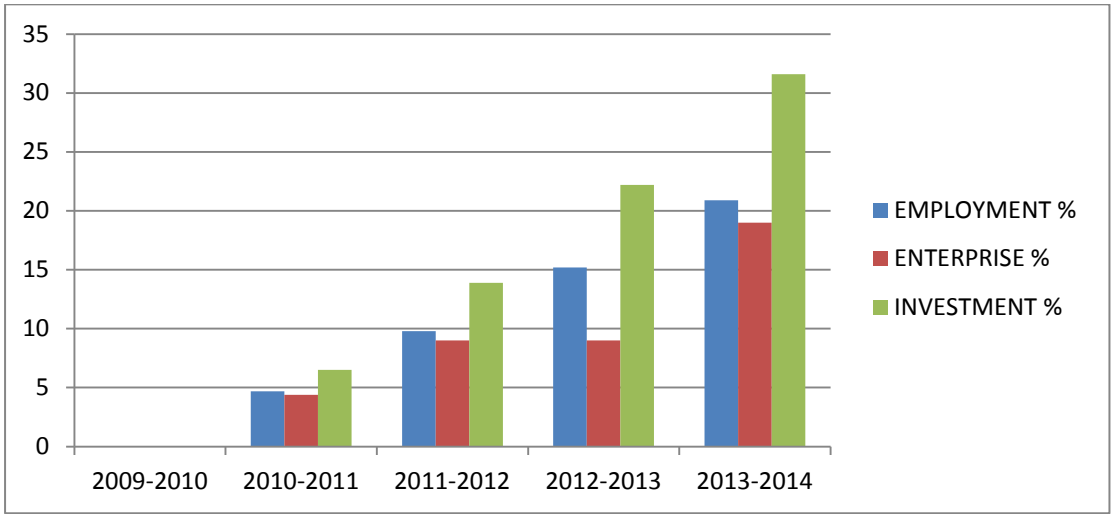

CONCLUSION:

The MSMEs in India face a tough situation due to extreme competition from large industries due to withdrawal of subsidy, lack of infrastructure, anti dumping policy, challenges on product standardization, total quality management etc. but the industry continued to sustain and remain in the field and now is the most prestigious sector. The MSME sector has often been termed the 'engine of growth' for developing economies regarding employment, enterprise and investment. During the period 2009-2014 the growth has taken place aiming at consolidating and developing the nation significantly.More specifically, the analysis showed the impact of MSMEs in employment, enterprise and investment in India which shows a positive impact on the persistent development and the sustainable development of MSME industry amongst large industries in India over the 2009-2010 period.The analysis shows that the government played a facilitator role and had improved access to MSMEs by encouraging them, instead of becoming an active player itself. To empower the MSME sector to take its rightful place as the growth engine of Indian economy, it is necessary to support the MSMEs, educate and empower them to make optimum utilization of the resources, both human and economic, to achieve success. The MSMEs need to be educated and informed of the latest developments taking place globally and help the MSMEs to acquire skills necessary to keep pace with the global developments. There has been a definite change in attitude of the government from protection to promotion of the MSMEs. The government has taken several policy initiatives but needs to ensure proper co-ordination and implementation of such schemes. Finally it can be said that MSMEs are here to stay and would be providing generous amount of employment, enterprise and investment in the near future which would be an economy booster for the nation and its people.

BIBLIOGRAPHY:

1. Veena, et al. A Study of Impact of Liberalisation on MSMEs in India.*International Research Journal of Management Sociology & Humanities*. 2015; 6(4); 473-474.
2. Singh J., et al. Problems Related to the Financing of Small Firms in India. *International journal of innovative research & development*. 2014; 3(1); 320.
3. Department of Commerce, Industry & Employment, Government of Madhya Pradesh. Available from: < http://www.mpindustry.gov.in>. [January 2016].
4. Srinivasan T., et al. Lead bank services for the growth of MSMEs sectors in India. *International Journal in Management and Social Science*. 2015; 3(2); 203-211.
5. Siddiqui M., et al. Engines of Growth - A Study of the Growth and Performance of Indian MSMEs in the Present Scenario. *International Journal of Core Engineering & Management*. 2015; 2(1); 46.
6. National Commission for Enterprises in the Unorganized Sector. Available from: <www.nceus.gov.in>. [January 2016].
7. National Commission for Enterprises in the Unorganized Sector (NCEUS), *The Challenge of Employment in India: An Informal Economy Perspective, Volume-I, Main Report, April 2009*. Available from: <http://nceus.gov.in/> [January 2016]
8. Baral S., et al. An empirical study on changing face of MSMEs towards emerging economies in India. *RADIX INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH IN SOCIAL SCIENCE*. 2013; 2(1).
9. Lahiri R., et al. Financing Micro, Small and Medium Enterprises (MSMES) In India During Post Liberalization Period: A Study On Traditional And Unconventional Approaches Of Financing. *Indian Streams Research Journal*. 2012; 2(8).
10. MSME Development Act 2006, Ministry of the District Industry Centers (DIC) MSME, Government of India. Available from: <http://www.msme.gov.in> [January 2016].

श्री लक्ष्मी नरसिंह भगवान की जयजबलपुर में कलचुरी काल

अभिनव कुमार सिंह,बी.,ए.

प्रकृति का आनन्दधाम, मध्यप्रदेश, अपार वन सम्पदा, उर्वराभूमि अनेक दुर्लभ वनस्पतियों और अन्य पशु –पक्षियों, प्र्याप्त जल स्त्रोतो और कृषि योग्य भूमि से परिपूर्ण है। यह प्रदेश पुरातत्व की दृष्टि से देश का अत्यन्त समृद्धि शाली क्षेत्र है, जहां आदिकाल से विभिन्न संस्कृतियों का संगम हाता रहा है। इस विशाल क्षेत्र में भारतीय संस्कृति के विभिन्न रूप पल्लवित और परिष्कृत हुए हैं।

राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 7 पर स्थित जबलपुर, भारतवर्ष के केन्द्र में पुण्य सलिला नर्मदा के किनारे स्थित सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न और अपनी अतीत की स्कृतियों को संजोये हुए हैं। भारत का केन्द्र बिन्दु करौंदी ग्राम, जबलपुर से उत्तर पूर्व करीब 60 किलोमीटर दूर है।जबलपुर के नामकरण पर विद्वानों के अनेक मत हैं। कलचुरि राजाओं के अभिलेखों के अनुसार प्राचीन नाम जाउलीपत्तन था, जिसका उल्लेख अब तक के प्राप्त तीन अभिलेखों में पाया जाता है।

पहला उल्लेख कलचुरि राजा यशःकर्ण के जबलपुर ताम्रपत्र मे है।

''नर्मदा तीरे समावासे जाऊलीपत्त्न पाटिकरंजा ग्रामे''

दूसरा उल्लेख कलचुरि राजा नरसिंहदेव के भेड़ाघाट अभिलेख में आता है–

''देवीयास्मै वैद्यनाथभिधाय प्रादाछेबी जाउलीपत्तलायाम''

तीसरा उल्लेख कलचुरि राजा विजयसिंह देव के ताम्रपत्रों में ''जाउली पत्तालाया'' आया है।

स्थान नामों का उल्लेख इतिहास के महत्वपूर्ण तथ्यों का उद्घाटन करता है। स्थान, नाम की कुद न कुछ सार्थकता और महत्ता होती है। कभी कभी कुछ नामों में ऐसा परिवर्तन होता है कि उनका वास्तविक अर्थ खोजना कठिन हो जाता है।

नमों का अध्ययन अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इनके अध्ययन से उन तथ्यों और परम्पराओं का परिचय मिलता है, जिसके आधार पर किसी नगर का नामकरण किया जाता था। नगरों के नामकरण में उनके पर्यावरणीय पक्ष का महत्वपूर्ण योगदान होता था। उदाहरण के लिए कुछ नगर और ग्राम नामों का अध्ययन किया जाये तो एक महत्वपूर्ण तथ्य यह उभरकर आता है कि वन प्रदेश होने के कारण इस क्षेत्र के ग्राम और नगरों के नाम वृक्षों के नाम से विशेष रूप से संबंधित हैं, जो भू भाग पर पाये जाते हैं। इनमें पीपल या पीपर, बरगद या बड़, आम, जामुन, इमली, बेर, बेल, सेमर, महुआ, आचार आदि पर रखे गये। इस क्षेत्र में पिपरिया, जमुनिया, इमलिया, बैलखेडा, बेलखेड़ी, अमहरा, अमगवां, बरखेरा, सिमरा, सिमरिया, चारखेड़ा, हरदुआ आदि नाम विभिन्न वृक्षों से संबंधित नाम हैं।

कुछ नाम जलाशय से संबंध रखते हैं तथा कभी–कभी वृक्षों और जलाशयों से संयुक्त स्थान, नाम भी मिलते हैं। इस प्रकार के नाम के उदाहरण सागर व बेलसरा आदि हैं।पशुओं और वन्य जीवों के नाम के आधार पर भी स्थान नाम रखने की परम्परा का पता चलता है। जैसे रिछाई, बघैली, भैंसदेही, हथियागढ़, आदि। इसी प्रकार गीध से गिधौरा, कौआताल, मोरडोगरी, धामनगांव, झिंगुरी, आदि। कुछ स्थानों के नाम विशेष ध्वनि के आधार पर रखने की परम्परा के भी उदाहरण मिलते हैं, जैसे दमदमा, तुरतुरिया आदि।देवताओं और संस्थापक व्यक्तियों के नाम पर भी नगर नाम रखने की परम्परा मिलती है। जैसे– रामपुर, रामनगर, नारायणपुर, विजयराघवगढ़, सूरजपुर, महेशपुर आदि इसी प्रकार कुछ नाम राजा–रानी और अधिकारियों के नाम पर रखे जाने की परम्परा मिलती है जैसे– राजपुर, राजाडीह, रानीसागर, रानीगांव आदि। कुछ स्थान नाम जातिवाचक हैं जैसे तिलगवां, लोहारी, बम्हनी आदि। कुछ स्थान नाम मानवीय संबंधों के वाचक हैं, मामा–भांजा, जिठानी–देवरानी, नानापुरी आदि। कुछ स्थान नाम ग्रामवासियों के गुणों पर रखे गए हैं, जैसे चोरगांव और ठगपाली आदि।जबलपुर नगर के नामकरण संबंधी अध्ययन से नामोत्पत्ति और इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है कि किस प्रकार से विदेशी जातियों का भारतीय समाज में सम्मिश्रण हुआ।

जबलपुर नगर के नामकरण संबंधी अध्ययन से नामोत्पत्ति और इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है कि किस प्रकार से विदेशी जातियों का भारतीय समाज में सम्मिश्रण हुआ।जबलपुर नगर के नामकरण के संबंध में अभी तक एक निश्चित सर्वमान्य मत नहीं है और विद्वानों में नामकरण के संबंध में मतभेद हैं। ''भौगोलिक नामार्थ परिचय'' के मत का सम्बंध जबलपुर नगर के भौगोलिक परिवेश से जुड़ा है। इसके अनुसार जबलपुर नगर पहाड़ियों से घिरा है। इसीलिए इसका नामकरण ''अरबी'' शब्द ''जबल'' (पहाड़ी) से हुआ है और शेष भाग ''पुर'' संस्कृत से जुड़ा है। इस संबंध में कुछ विद्वानों का मत है कि जबलपुर में मुसलमानों का आगमन बस्ती बसने के बहुत दिनों बाद हुआ। इस कारण से इसका नाम अरबी भाषा में रखा जाना संभव नहीं लगता है। हाल ही में प्रोफेसर विश्वम्भर भारण पाठक ने भी इस मत का खंडन किया है।जबलपुर के नामकरण के संबंध में दूसरा महत्वपूर्ण मत रायबहादुर हीरालाल ने प्रतिपादित किया है। उनके अनुसार जबलपुर से 6 मील की दूरी पर त्रिपुरी (वर्तमान) तेवर कलचुरि राजाओं की दीर्घकालीन राजधानी थी। इन राजाओं के काई ताम्रलेखों में जाबालिपत्तन या जाउलीपत्तला का उल्लेख है। यही जबलपुर का पुराना नाम ज्ञात होता है और जाबालिपत्तन का अपभ्रंश सा दिखता है। जाबालि एक प्रख्यात ऋषि थे। इनका मत प्रचलित धर्म से कुछ विपरीत था। क्या आश्चर्य कि ये और इनके अनुयायी भोवपुरी त्रिपुरी से निकाल दिए गए हों और यहां से दो–तीन कोस दूर उन्होने पहाड़ियों का आश्रय ले लिया हो और बस्ती का नाम जाबालिपत्त्न रख लिया हो। रायबहादुर हीरालाल द्वारा

प्रतिपादित मत को परवर्ती अनेक विद्वानों ने यथावत् स्वीकार कर लिया था तथा उसे जन स्वीकृति भी प्राप्त हुई थी।

वर्ष 1989 में प्रो. विश्वम्भर भारण पाठक जब रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर में अतिथि प्राध्यापक होक आए तब उन्होने जबलपुर नगर की नामोत्पत्ति की समस्या पर नये ढंग से विचार किया ओर एक मोनोग्राफ ''जबलपुर'' दि ओरीजन एण्ड दि सिग्निफिकेश ऑफ दी नेम'' तैयार किया, जिसे रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा प्रकाशित किया गया। इस मोनोग्राफ में उन्होने रायबहादुर डॉ.हीरालाल द्वारा प्रतिपादित मत के विपरीत मत प्रस्तुत किया है। प्रो. पाठक का मत है कि तत्कालीन युग में जाबालि ऋषि के नाम पर जिस नगर का नामकरण किया था, इसका प्रमाण एक अभिलेख के जाबालिपुर का उल्लेख है, जो वर्तमान जालोर राजस्थान में स्थित है। यह चाहमानों की एक शाखा सोनगिर की राजधानी था। जहाँ से प्राप्त 1985–86 ई. के शिलालेख में कुमार–बिहार का निर्माण जाबालिपुर में कुमारपाल सोलंकी द्वारा किया गया था। कादम्बरी में भी जाबालि के तपोवन का उल्लेख है।

प्रो. पाठक का मत है कि भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से जाबालिपुर से जालौर तो हो सकता है, लेकिन जाबलि से जाउली तथा जबल नहीं हो सकता है, अभिलेख का पाठ भी ''जाउलीपत्तला'' है। पट्टला भाब्द का प्रयोग क्षेत्रीय इकाई के रूप में कलचुरि अभिलेखों से स्पष्ट रूप में हुआ है। इसका अर्थ 'पत्तन' अर्थात् नगर करना उचित नहीं है।

साहित्यिक तथा अन्य कोई दुसरा साक्ष्य इस बात को प्रमाणित नहीं करता है, कि कोई क्षेत्र अथवा बस्ती जाबालि से सम्बद्ध थी, जो परवर्तीकाल में जबलपुर कहा जाने लगा। जाबालि ऋशि का दर्शन प्रचलित मत के विरूद्ध था इसीलिए उन्हें त्रिपुरी को छोड़ना पड़ा, काल्पनिक प्रतीत होता है। रामायाण में एक ऐसा संदर्भ है, जिसमें उन्होने श्राद्ध के विरूद्ध मत व्यक्त किया है। जाबालि ऋषि वैदिक साहित्य और परवर्ती परम्परा में अपने धार्मिक विश्वासों, श्रमण दर्शन और साधनाओं के लिए प्रसिद्ध थे। त्रिपुरी के कलचुरि शासकों ने भौव सिद्धांत और पाशुपात सम्प्रदायों को संरक्षण दिया अतः उन्हें वैदिक मत विरोधी नहीं माना जा सकता है।उपरोक्त तथ्यों के परीक्षण करने के उपरांत प्रो. पाठक, रायबहादुर हीरालाल द्वारा प्रतिपादित जाबालि ऋषि से जबलपुर के नामकरण के मत को स्वीकार नहीं करते हैं।

डॉ. बुद्धप्रकाश ने वर्ष 1965 में अपनी पुस्तक ''आस्पेक्ट्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री एवं सिविलाइजेशन'' में इस मत का प्रतिपादन किया है कि जाउली पट्टला वर्तमान जबलपुर के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो अभिलेखों का प्राप्ति स्थल है। यह नाम मस्तिष्क में जाउल नाम से जो हूण जबुल द्वारा धारण किया जाता था, का स्मरण कराता है। ऐसा लगता है कि बाह्म दबाव के परिणामस्वरूप उनमें से कुछ इस क्षेत्र में बस गए तथा यहाँ एक नगर की स्थापना की तथा उसे अपना नाम दिया। मध्यप्रदेश में उनकी यह बस्ती उनका मुख्य केन्द्र थी । इस प्रकार से डॉ. बुद्धप्रकाश जबलपुर का नामकरण हूणों से संबंधित स्वीकार करते हैं तथा इसे उनके द्वारा बसाये जाने का श्रेय देते हैं।प्रो. पाठक ने डॉ. बुद्धप्रकाश द्वारा प्रतिपादित मत की समीक्षा करते हुए लिख है कि जाउली भाब्द ''जाउल'' जो हूणों की उपाधि है, से सम्बन्धित प्रतीत होता है, लेकिन यह कहना कुछ अधिक होगा कि हूण जब जबुलस्तान से विस्थापित हुए तब उन्होंने सुदूर अफगानिस्तान से आकर मध्यप्रदेश में जबलपुर नगर को स्थापित किया, जो उनकी बस्तियों का केन्द्र बिन्दु था। जाउली का उल्लेख अभिलेख में नगर के रूप में न होकर पटृटला के रूप में हुआ है। इस प्रकार से वे डॉ. बुद्धाप्रकाश के मत को भी स्वीकार नहीं करते हैं।जबलपुर के नामकरण से सम्बन्ध में हाल ही में प्रो. पाठक ने यह मत प्रतिपादित किया है कि जबलपुर का नामकरण ''जाउली'' भाब्द (जो हूण भाशा में रानी के लिए प्रयुक्त होता था) से हुआ है। इस सम्बन्ध में उनके तर्क इस प्रकार हैं–जाउली शब्द का पटृटला के रूप में तीन–तीन कलचुरि अभिलेखों में उल्लेख हुआ है। यशकर्ण के 1084 ई. के जबलपुर ताम्रपत्र में जाउली पट्टला के ग्राम करंज के दान का उल्लेख है। इनमें 'समावासित' भाब्द का प्रयोग हुआ है। इसके विश्लेषण के दो अर्थ है– एक यह कि नये स्थान पर बस्ती की स्थापना और दूसरा नये पट्टला की स्थापना 1084 ई. के कुछ पूर्व हुई थी। जाउली पट्टला का उल्लेख कलचुरि शासक नरसिंह के भेड़ाघाट 1155 ई. में हुआ है। इनमें ग्रम नामुंडी जाउली पट्टला के अन्तर्गत था और ग्राम मकरपाटक नर्मदा के दांये किनारे पर स्थित था। वैद्यनाथ मन्दिर का दान अल्हण देवी(नरसिंह की माता) द्वारा किया गया था मकरपाटक की पहचान भेड़घाट के पश्चिम में स्थित मगर मुंहा से की गई है तथा नामुंडी की पहचान नहीं हो सकी है। प्रो. मिराशी का मत है कि जाउली पट्टला के अन्तर्गत जबलपुर का समीपवर्ती क्षेत्र आता था। झूलपुर, जिला मण्डला से प्राप्त एक तीसरे अभिलेख में जो कलचुरि शासक विजयसिंह का वर्ष 1197 ई. का है, 'जाउली पट्टला' का उल्लेख करता है। इस प्रकार से जाउली पट्टला में जबलपुर का समीपवर्ती क्षेत्र सम्मिलित था।

ससैनियन प्रकार की मुद्राएं शाही जबल जिनकी पहचान तोरमाण के साथ की जाती है। मिहिर कुल और उनकी शाखा के परवर्ती शासकों से था। इस प्रकार की मुद्राएं ताम्र और रजत दोनों प्रकार की मध्यप्रदेश के कुछ स्थानों से प्राप्त हुई है।पूर्व मध्यकाल में पूर्ण प्रमुख शक्तिशाली नहीं थे, लेकिन देश के विभिन्न क्षेत्रों में उनका प्रभाव था। करनबेल अभिलेख में काब्य शैली में हूणों की उपस्थिति लक्ष्मीकर्ण के राज दरबार में बतलाई गई है।अभिलेखीय साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि हूण, कलचुरियों के अधीन थे। यशकर्ण के अभिलेख में उल्लेख है कि लक्षमीकर्ण के हूर्ण मूलोदगम वंशरूपी समुद्र से उत्पन्न लक्ष्मीकर्ण व आवल्लदेवी से यशकर्ण उत्पन्न हुआ, वंशावली में सामान्य रानियों का उल्लेख नहीं मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि हूण होने के बाद भी आवल्लदेवी की पर्याप्त प्रतिष्ठा थी।लक्ष्मीकर्ण ने अपनी गद्दी का त्यागकर अपने पुत्र यशकर्ण को अभिशिक्त किया था। इसका कारण यह था कि वह हूण राजमहिशी से उत्पन्न पुत्र को अभिशिक्त करना चाहता था, इस लिए उसने अपने जीवनकाल मे सत्ता अपने पुत्र को सौंप दी ताकि उसका कोई विरोध न हो।इस प्रकार से जाउली शब्द हूण रानी (जाउली) से अधिक सम्बन्धित

प्रतीत होता है।उपरोक्त तथ्यों के आधार पर प्रो. पाठक यह मत व्यक्त करते हैं कि लक्ष्मीकर्ण ने प्रिय हूण राजमहिशी के नाम जाउली के आधार पर एक पट्टला या क्षेत्र की स्थापना की थी, जिससे जबलपुर का आधा नाम बना, बाद में इसमें पुर जुड़ गया। प्रो. पाठक के मतानुसार कलचुरियों के बाद जबलपुर जो भाुरू में छोटा था, विकसित होकर नगर बना। अतः जबलपुर नाम पड़ गया।

जबलपुर के नामकरण का एक और सिद्धांतः वे महिश्मती शोध संस्थान, मण्डला तथा म.प्र. इतिहास परिषद, भोपाल के सदस्य हैं। जबलपुर के नामकरण पर चर्चा के दौरान श्री अग्रवाल ने बताया कि यह विख्यात तथ्य है कि नर्मदा नदी बहुत ही प्राचीन नदी है। नर्मदा का उद्गम स्थान अमरकंटक आदिकाल में एक झील क्षेत्र था ओर इसी महाझील से नर्मदा का प्रवाह प्रारंभ होता था। कालांतर में झील सूचा गई और नर्मदा का प्रवाह भी कम हो गया। अमरकंटक से जबलपुर तक नर्मदा पहाड़ी क्षेत्र से होकर हबती है तथा जबलपुर से ही नर्मदा का मैदानी क्षेत्र समुद्र की ओर प्रारम्भ होता है।

आगे श्री अग्रवाल ने बताया कि बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट, लखनऊ द्वारा नक्शा प्रकाशित कर उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि की गई है। इससे यह ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में जबलपुर बहुत बढ़ा व्यापार का केन्द्र था। भारत के इस मध्यक्षेत्र जबलपुर तक समुद्र से नर्मदा के मैदानी भाग से होकर मालवाहक जहाज आते थे। जबलपुर में उस काल में बंदगाह होने के कारण इसका नाम जाउली पट्टनम था। इसी तरह का नामवाला विशाखापट्टनम शहर आज भी भारत में हैं।

अजय मिश्रा शास्त्री द्वारा लिखित त्रिपुरी नामक पुस्तक में भी जबलपुर को प्राचीन व्यापारिक केन्द्र बताया गया है। भारत की पांच पवित्र नदियों में एक नर्मदा भी हे–

'गंगा" चः यमुनाचैव गोदावरी तथैवचा।
कावेरी नर्मदा चैव, पंचनद्यः पुनातुमाम्।।

वेदों में नर्मदा का विवरण नहीं है, इसका कारण शायद आर्य नर्मदा तक उस समय नहीं पहुंच पाये थे। किन्तु महाभारत, मत्स्य, पद्य, कूर्म, अग्नि तथा स्कंदपुराण में नर्मदा का उल्लेख है। कालिदास के रघुवंश में भी नर्मदा का उल्लेख है।स्कंद पुराण के अनुसार स्वयं शिव ने नर्मदा का नामकरण संस्कार किया था–

'नर्मदा नमृतातेननर्मदा': तीनों कालों में जसका विनाश नहीं होता, महाप्रलय के भीषण मंथन में सम्पूर्ण पंचतत्वों के साथ सारी नदियों और समुद्रों का विलय हो जाता है, किन्तु मात्र नर्मदा ही है जो महाप्रलय में भी नष्ट नहीं होती है।उपरोक्त तथ्य यह प्रगट करते हैं कि अथाह नर्मदा जो अतिप्राचीन नदी है, इसके किनारे बसा जबलपुर निश्चय ही कभी मध्यक्षेत्र का बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र रहा होगा तथा मालवाहक जहाजों का बंदरगाह होने के कारण इसका प्राचीन नाम जाउली पट्टनम होना सम्भावित है।

जबलपुर क्षेत्र के सांस्कृतिक वैभव एवं कलानिधि को भी समृद्ध करने में जिन राज्यवंशों ने अपना योगदान दिया, उनमें मौर्य, कृशाण, गुप्त, परिब्राजक, उच्चकल्प, कलचुरि एवं गौड़ राजवंश प्रमुख हैं, किन्तु इनमें कलचुरि राजवंश की अपनी विशेष महत्ता है। ऐतिहासिक काल के पूर्व पाषाण काल में भी यह जिला मानव की गतिविधियों का केन्द्र था। इस काल में मानव निर्मित नुकीले पत्थरों के औजार, जबलपुर की नदियों के किनारे कंदराओं में तथा गुफाओं में मिले हैं। नर्मदा नदी के किनारे इन औजारों को प्रागैतिहासिक काल में पूर्व पाषाण युग का माना गया है।

जबलपुर के ग्वारीघाट, गौरैयाघाट, भेड़ाघाट, लम्हेटाघाट आदि से प्राप्त जैस्पर चर्ट क्वार्टिज फिल्म आदि उच्च कोटि के पत्थर के औजार, खुरचियां, नोंक बेधनी, मिट्टी के बर्तन आदि मध्य पाषाण युग के माने गए हैं।उत्तर पाषाण युग 5500 ई. पूर्व का माना गया है। इस काल के औजार एवं मानव संस्कृति के चिन्ह गाड़ाघाट, गुबराकला, जबलपुर की पहाड़ियों, सोनपुर तथा त्रिपुरी के पास प्राप्त हुए हैं। इनमें कुछ औजारों को लघु पाषाणकाल के औजार माना गया है।नव पाषाण युग के औजारों में सेल्ट, कुल्हाड़ी, वसूला, रचक घन, ओप करने वाले औजार प्रमुख हैं। ये औजार जबपुर क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं।ताम्र पाषाणकाल के काले, लाल बर्तन, निरंदपुर (पाटन तहसील) एवं ताम्रपाषाण युगीन सम्यता के अवशेष त्रिपुरी से प्राप्त हुए हैं। इन औजारों में एक कांस्य कुल्हाड़ी एवं एक ताम्र कुल्हाड़ी, ''दबकिया'' ग्राम से प्राप्त हुई है। इस संस्कृति का काल 1700 ई. पूर्व से 1000 ई. पूर्व माना गया है।

शैलचित्रः पाषाणकाल के मानव द्वारा बनाए गए शैल चित्र जबलपुर जिले के कटनी तहसील के झिंझरी ग्राम के शैलाश्रयों में पाये गए हैं। यहाँ चौदह शैलाश्रयों में शैल चित्र चित्रित हैं। भारत में जितने चित्रित शैलाश्रय मिले हैं, उनमें म.प्र. में पाये जाने वाले शैलाश्रयों की संख्या सबसे अधिक हैं। चित्रों में मानव आकृतियां शिकार, युद्ध, नृत्य के दृश्य तथा गाय, वृषभ, हरिण, कुत्ता, बकरी, हाथी, पेड़पत्ती एवं फलफूल के चित्र अनाए गए हैं। चित्रों के निर्माण में सफेद एवं पीले रंगों का प्रयोग किया गया है। ये चित्र 10,000 ई. पू. से लकर 4000 ई. पूर्व तक के माने गए हैं। तत्कालीन मानव द्वारा बनाए गए ये शैलचित्र जबलपुर जिले की कला के इतिहास के प्रथम अध्याय हैं।

लौह युगः विद्वानों का मत है कि ताम्र–पाषाण युग के बाद लौह युग तक मानव संस्कृति काफी विकसित हो चुकी थी। यदि हड़प्पा संस्कृति का समय 5000 ई. पूर्व से 2700 ई. पू. तक मानते हैं, तो इस समय मानव संस्कृति सभी आयामों में निरन्तर विकाशील दिखती है। मकानों का पक्की ईंटों द्वारा निर्माण, पानी निकासी की व्यवस्थित नालियां, भण्डारगृह, व्यापार के बाजार, विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए अलग–अलग व्यवस्था, वस्त्र, परिधान के" ।विन्यास, आभूषणों में कारीगरी आदि से उनकी दक्षता का पता चलता है।उस समय की ध्यानावस्थ मूर्तियों को देखने से पता चलता है कि इस समय तक पूजाप्रथा भी प्रारंभ हो गई थी। उत्खननों से प्राप्त ताम्र पाषाणयुगीन स्तर के पश्चात की ''काले ओपदार उत्तरी मृद भाण्ड'' पाए गए हैं। इससे इस तथ्य की ओर

संकेत होता है कि इस क्षेत्र में ताम्र पाषाण युग के बाद सीधे इतिहास युग तथा लौह युग का प्रारंभ हुआ था।

वैदिक कालः ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 6000 ई.पू. के लगभग ऋग्वेद की रचना की गई थी, किन्तु अन्य विद्वानों ने ऋग्वेद का रचनाकाल 4500 ई.पू. माना है। वैदिककाल का जीवन बड़ा सक्रिय, आशावादी एवं पुरूषार्थी था। इस काल में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, वेदान्त सूत्र तथा अन्य आर्य साहित्य की रचना हुई। अरण्यक तथा उपनिषदों की रचना की वैदिककाल में हुई। विद्वानों ने वैदिन साहित्य की रचना का काल 600 ई.पू. से पहले का माना है। इस काल के साहित्य ऐतरेय ब्राह्मण से मध्य प्रदेश के जंगलों में निवास करने वाली जातियों की जानकारी मिलती है।

पौराणिक कालः वैदिक और उत्तर वैदिककाल के पश्चात इतिहास की जानकारी दो माह–काव्यों, रामायण और महाभारत एवं पुराणों की अनुश्रुतियों से होती है। अठारह पुराण के नाम इस प्रकार हैं– 1. ब्रह्म पुराण, 2. पद्य पुराण, 3. विश्णु पुराण, 4. शिव पुराण, 5. श्रीमद् भागवत्, 6. नारदीय पुराण 7. मार्कण्डेय पुराण, 8. अग्नि पुराण, 9. भविष्य पुराण, 10. ब्रह्मवैवर्त पुराण, 11. नृसिंह पुराण, 12. वाराह पुराण, 13. स्कन्द पुराण, 14. वामन पुराण, 15.कूर्म पुराण, 16. मत्स्य पुराण, 17. गरूड़ पुराण, 18. ब्रह्माण्ड पुराण।पुराणों के अनुसार मनुष्यों की परम्परा में 14 मनु का वर्णन है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार चौदह मनु इस प्रकार हैं– 1. स्वायम्भुव मनु, 2. स्वारोचित मनु, 3. औत्तम मनु, 4. तापस मनु, 5. रैवत मनु, 6. चाक्षुण मनु, 7. वैवस्वत मनु, 8. सवर्णि मनु, 9. सावर्णिक मनु, 10. ब्रह्मपुत्र सावर्णि मनु, 11. धर्मपुत्र सावर्णि मनु, 12. रूद्रपुत्र सावर्णि मनु, 13. रौच्य पुत्र मनु, 14. शौत्य मनु,।

हैहय क्षत्रिय वंशः चंद्रवंशी क्षत्रियों की एक शाखा है यह क्षत्रिय वंश के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस वंश के प्रतापी राजा सहस्त्रबाहु प्रसिद्ध हुए। इनकी महिश्मती में, राजधानी थी (जिसको कुछ विद्वान वर्तमान मंडला कानते हैं, वहाँ अभी भी राज राजेश्वरी मंदिर में सहस्त्रबाहु की संगमरमर की दो प्रतिमाएं हैं) आगे यह वंश चेदि वंश तथा कलचुरि वंश के नाम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(1) ''हैहयानां कुला प" च भोजा" चाकन्तयस्वथा।
वीतिहोत्रा स्वयंजाताः शोडिकेयास्तधैवच।।
(2) ''जयध्वजासाल जंघस्ताल वछात्तवन्सुताः
हैहयानां कुलाः पन्च भोजा" चावस्त यस्तथा।।

(अग्निपुराण)

हैहय क्षत्रिय राजाओं की वंश परम्परा – पुराणों के अनुसार अन्तिम मनु वैवस्वत मनु हुए। इनके 10 पुत्र हुए, जिनका नाम इक्ष्वाकु, नाभाग, धृष्ट, भार्यााति, नरियन्त, प्राशु, अरिष्ट, करूप, पृशधृ, धेय, पुत्री का नाम इला था। इक्ष्वाकु से सर्ववंश की स्थापना हुई तथा वैवस्वत मनु की पुत्री इला का विवाह सोम से हुआ। इसी सोम से चंद्रवंश की स्थापना हुई। कला का पुत्र 'पुरूरवा, चंद्रवंशी क्षत्रियों का आदि पुरूष माना जाता है।'

1. पुरूरवा के 7 पुत्र– आयु, अमावसु, विश्वासु, भुताये, दृढ़ायु, बनायु, बहायु हुए।
2. आयु के पांच पुत्र– नहुश, वृवशर्मा, रम्भ, रजि तथा अनेना हुए।
3. राजा नहुश के पांच पुत्र– यति, ययाति, संयाति, अयाति, पाश्वर्क हुए।
4. राजा ययाति के पुत्र यदु, तुर्वसु, दघ्यु, अनु तथा पुरू हुए।
5. राजा यदु के पुत्र हसस्त्राद, ययोद, कोश्टु, नील तथा अंजिक हुए।
6. सहस्त्राद के तीन पुत्र – हैहय, हय और वेणुहय हुए।
7. राजा हैहय के पुत्र धर्मनेत्र हुए। राजा हैहय के नाम पर हैहय वंश की स्थापना हुई।
8. धर्मनेत्र के पुत्र कार्त हुए।
9. राजा कार्त के पुत्र साहंज्जि (सहजन) हुए इनका दूसरा नाम महिश्मान था। राजा महिश्मान के नाम पर इनकी राजधानी का महिश्मती हुआ।
10. महिश्मान के पुत्र भद्रश्रेण्य हुए।
11. भद्रश्रेण्य के पुत्र दुर्दम हुए।
12. राजा दुर्दम के पुत्र कनक हुए।
13. राजा कनक के चार पुत्र– कृतवीर्य, कृतौजा, कृतधन्वा, कृताग्नि हुए।
14. कृतवीर्य के पुत्र– अर्जुन हुए जो सहस्त्रार्जुन तथा कार्तवीर्य के नाम से विख्यात हुए तथा हैहयवंशी क्षत्रिय कहलाए।
15. सहस्त्रार्जुन की रानी का नाम दीप्तिमती था। ब्रह्माण्ड पुराण में सहस्त्रार्जुन भगवान विष्णु का चक्रावतार एवं भागवत् पुराण में विष्णु का अंशावतार एवं 26 अवतारों में से एक अवतार माना है।

सहस्त्रबाहु अर्जुनः पौराणिक ग्रंथों के अनुसार– ऐश्वर्य, धर्म, यज्ञ, श्री, ज्ञान, वैराग्य सभी छः गुणों से विभूषित होने से सहस्त्रबाहु, भगवान सहस्त्रबाहु के नाम से पूजित हैं। सहस्त्रबाहु योगी पुरूष थे और प्रजा की रक्षा हेतु सातों द्वीपों में विचरते रहते थे।शास्त्रों में चार युग माने गए हैं

(1) सतयुग, (2) त्रेता, (3) द्वापर, (4) कलियुग।

वर्तमान कलियुग है। सहस्त्रबाहु त्रेता युग में चक्रवर्ती सम्राट हुए तथा हुए तथा भगवान दत्तात्रेय की आराधना कर 10 वरदान प्राप्त किए थे।

1. उत्तम ऋद्धि–सिद्धि
2. युद्धकाल में एक हजार भुजाएं।
3. अधर्म का कभी विचाार न हो।
4. मोझ के विषय में ज्ञान।
5. पृथ्वी पर प्रजा का पालन धर्म और नीति से करू।
6. तीनों लोकों में कहीं भी जा सकूं।
7. प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मार्गों का ज्ञान।
8. युद्ध में विजय तथा अपने से शक्तिशाली व्यक्ति के ही हाथों से मृत्यु हो।

9. राज्य का खजाना कभी खाली न हो तथा कोई अतिथि निराश न हो।
10. मैं अपने समय का सफल व अद्वितीय राजा होऊं।

ब्रह्म पुराण के अनुसार जो मनुष्य प्रतिदिन कार्तवीर्य अर्जुन के जन्म का वृत्तांत कहेगा उसके धन का नाश नहीं होगा। उसका नष्ट हुआ धन मिल जाएगा और उसे समृद्धि और ऐश्वर्य प्राप्त होगा।

राजा कृतवीर्य के राज्यकाल में विशाल हैहय साम्राज्य की स्थापना हो चुकी थी और सहस्त्रार्जुन संपूर्ण मध्य प्रदेश में फैले विशाल हैहय साम्राज्य के उत्तराधिकारी हुए। जनश्रुतियों के अनुसार उसने सम्पूर्ण पृथ्वी को जीता और अनेक यज्ञ किए।सहस्त्रबाहु के 100 पुत्र थे, जिनमें जांच विख्यात हुए– शूरसेन, शूर, वृषण, मधुध्वज, जयध्वज। राजा जयध्वज का राज्य अवन्ति (आधुनिक मालवा) पर था। जयध्वज के पुत्र तालजंघ हुए तथा तालजंध के पांच पुत्र थे। वीतिहोत्र, शार्याति, भोज, अवन्ति, शौंडिकेय। अवन्ति के नाम पर आज के मालवा क्षेत्र का नाम अवन्ति पड़ा।

चेदि मण्डलः इसी वंश के कौशिक नामक शासक ने अपने साम्राज्य का विस्तार चम्बल तथा केन नदी के मध्य क्षेत्र तक किया था, जो चेदि जनपद कहलाता था।

द्वापर युग में चेदि जनपद का वर्णन मिलता है। काशी, कारूश तथा चेदि जनपद के राजाओं ने पाण्डवों की तरफ से महाभारत के युद्ध में भाग लिया था जैन गंथों बौद्ध ग्रंथों तथा पुराणों में 6वीं ई.पू. तक चेदि जनपद की जानकारी मिलती है।

मोर्य वंशः मोर्य वंश की स्थापना चंद्रगुप्त मोर्य ने की थी। जबलपुर से 60 किलोमीटर दूर रूपानाथ के शिलालेख से प्रतीत होता है, कि जबलपुर मौर्य सम्राटों के कार्य कलापों का महत्वपूर्ण केन्द्र था। 300 ई.पू. के ब्राह्मी लिपि में ''त्रिपुरी'' लिखे सिक्के मिलने से प्रतीत होता है कि इस नगर में स्थानीय सिक्के ढाले जाते थे।

सातवाहन वंश– सातवाहन साम्राज्य की स्थापना 27 ई.पू. के लगभग हुई। इसके बाद कुछ समय तक चेदि अथवा डाहल क्षेत्र चेदि राजाओं के आधीन रहा। कुछ समय अवनती स्थिति में रहने के बाद सातवाहनों ने पुनः अपना प्रभुत्व स्थापित किया। इस वंश के अन्तिम प्रतापी राजा यज्ञश्री भाातकर्णी ने 165 ई. से 193 ई. तक राज्य किया। सातवाहनों राज्य के बाद त्रिपुरी से प्राप्त सिक्कों के आधार पर कुशाण वंश के साम्राज्य की जानकारी मिलती है।

बोधि वंशः ईसा की दूसरी तथा तीसरी सदी में त्रिपुरी पर बोधिवंश के राजाओं के भाासन का पता चलता है। इस वंश के चार भाासक श्रीबोधि, बसुबोधी, चंद्रबोधी तथा शिवबोधि ने लगभग 325 ई. तक राज्य किया। इसके उपरान्त मद्यवंशी राजा महासेन ने 350 ई. तक शासन किया।

गुप्तकालः चौथी सदी के प्रारंभ में श्रीगुप्त नामक राजा ने गुप्त वंश की स्थापना की। गुप्त युग प्राचीन भारत के इतिहास का स्वर्णयुग कहलाता है। गुप्त वंश के राजा स्कन्दगुप्त की 467 ई. में मृत्यु के बाद इस वंश की अवनती हुई और सामन्त अपने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित करते रहे। छठवी सदी के मध्य तक गुप्त वंश की प्रभुता समाप्त हो गई थी। 550 ई. के लगभग महिश्मती के कलचुरि राजाओं की सत्ता पुनः स्थापित हो गई थी। छठवीं सदी के प्रारंभ में शंकरगण नामक कलचुरि राजा की सत्ता का पता चलता है।

राष्ट्रकूट वंशः सातवीं सदी के पूर्वाध में राष्ट्रकूट वंश का अधिपत्य मध्यप्रदेश के बड़े भू–भाग पर रहा। राजा दन्तिदुर्ग को इस वंश का शक्तिशाली राजा माना जाता है, जो 733 ई. में राजा बना। इसी वंश में गोविन्द तृतीय एक प्रभावशाली राजा हुआ, जिसकी विजय पताका हिमालय तक फहरी, किन्तु डाहल क्षेत्र पर उसके अधिकार का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। गोविन्द तृतीय के उत्तराधिकारी अबोधवर्मा प्रथम ने 814 ई. से 878 ई. तक शासन किया। उसने अपने पुत्र कृष्ण द्वितीय का विवाह त्रिपुरी के कलचुरि राजा कोकल्ल देव की कन्या से किया । इस विवाहिक सम्बन्ध से राष्ट्रकूट राजाओं तथा त्रिपुरी के कलचुरि राजाओं में एकता का प्रमाण मिलता है।

प्रतिहार वंशः नागभट्ट नाम के राजा ने आठवीं सदी के पूर्वाध में उज्जयिनी में गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की। इस वंश का पराक्रमी राजा मिहिर भोज था, जिसका शासनकाल 836 ई. से 885 ई के बीच माना गया है। प्रतिहार वंश के शासक वाद्यदेव तथा गजसिंह के समय में डाहल क्षेत्र पर इस वंश का प्रभुत्व कुछ समय के लिए था।

कलचुरि साम्राज्यः जबलपुर क्षेत्र के इतिहास में कलचुरि राजवंश का महत्वपूर्ण स्थान है। ये कलचुरि राजा, चंद्रवंशी हैहय क्षत्रिय कलचुरि राजा सहस्त्रबाहु के वंशज थे, जिनकी वंशावली पूर्व में लिखी जा चुकी है। हैहय क्षत्रिय कलचुरियों की प्राचीन राजधानी माहिश्मती थी तथा 550 ई. से 575 ई. तक कृष्णराजा का राज्य था। इसके उपरान्त 600 ई. तक शंकरगण और इसके बाद बुद्धराजा ने राज्य किया। महिश्मती के बाद कलचुरि राजाओं ने त्रिपुरी में अपनी राजधानी स्थापित की। यहाँ उन्हें महिश्मती की तरह नर्मदा का पुण्यतट प्राप्त हुआ।

त्रिपुरी का प्रथम कलचुरि शासक वामराजदेव था। राजा वामराजदेव ने सातवीं सदी के उत्तरार्ध में कलिंजर को जीतकर वहाँ दूसरी शाखा की राजधानी स्थापित की। पौराणिक इतिहास में कलचुरि राजाओं की सात शाखाओं के साम्राज्य का पता चलता है।

त्रिपुरी की महत्ताः जबलपुर क्षेत्र का इतिहास बहुत पुराने समय से गौरवपूर्ण रहा है। यहाँ से करीब 15 किमी. दूर तेवर ग्राम के पास विखरे पुराने कलचुरि कालीन अवशेष आज भी कलचुरि राजवंश की कीर्ति एवं ऐश्वर्य के मूक साक्षी हैं। मेडिकल कॉलेज के पास का तिराहा त्रिपुरी चौक के नाम से जाना जाता है। वही त्रिपुरी जो कभी कालजयी कलचुरि राजाओं की राजधानी थी, वही त्रिपुरी जिसकी

तुलना पौरन्दरी समपुरी से की जाती थी, उसी कलचुरि राज्य को डाहल क्षेत्र एवं चेदि मण्डल नाम से जाना जाता था।

देखिये– कलचुरि राजवंश की वैभव संपन्नता एवं महत्ता प्रगट करता हुआ श्लोक–

''नदीनां मेकलसुता, नृपाणाम् रणविग्रहः।
कवीनां तु सुरानन्द" चेदि मण्डल मण्डनम्।।

त्रिपुरी का भाग्योदय 8वीं सदी में हुआ, जब करीब 200 वर्षों के बाद कलचुरि राजाओं ने पुनः सत्ता स्थापित कर महिश्मती के स्थान पर त्रिपुरी को राजधानी बनाया।कलचुरि राजाओं ने भारत के केन्द्र बिन्दु को सैकड़ों साल पहले पहिचाना और त्रिपुरी को राजधानी बनाकर भारत के केन्द्र त्रिपुरी को भारतीय बल का यथार्थ केन्द्र बनाकर दिखाया।

इस प्रकार जबलपुर क्षेत्र को सैकड़ो वर्ष तक सम्पूर्ण भारत पर शासन करने का गौरव कलचुरि काल में प्राप्त हुआ।पुराणों में त्रिपुरी को तीर्थ कहा गया है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार विंध्य निवासियों के देश में त्रैपुर है ये सभी जनपद विन्ध्याचल की घाटियों मे बसे हैं। त्रिपुरी से प्राप्त तीर्थपट्ट से इसकी महत्ता प्रगट होती है। राजकवि राजशेखर द्वारा लिखित विद्वशाल भंजिका में त्रिपुरी की ऐश्वर्य सम्पन्नता का विस्तृत विवरण मिलता है। त्रिपुरी और पुण्य सलिला नर्मदा के बीच बताई गयी नगरी, कर्णवती थी जिसे कर्णबेल कहते हैं, यहाँ की धूल में सोने के कण मिलते थे। इससे प्रतीत होता है, कि कलचुरि साम्राज्य की टकसाल में सिर्फ सोने के सिक्कों की ढलाई की जाती थी।पौराणिक गाथाओं के अनुसार इस वैभवपूर्ण नगरी का निर्माण मय दानव द्वारा किया गया था। इसे बाणासुर की राजधानी कहा गया है। पुराणों में त्रिपुर नामक राक्षस के तीनपुर होने के कारण इस नगर का नाम त्रैपुर या त्रिपुरी पड़ा था। वर्तमान टीलों को देखने से इसके तीन भागों में बंटे होने का प्रमाण मिलता है। कथाओं के अनुसार भगवान शिव ने त्रिपुरासुर राक्षस का वध किया और इस नगरी को जला डाला। त्रिपुरी का इतिहास बड़ा मनोरंजक है। प्राचीन काल में त्रिपुरी और उसके आसपास का क्षेत्र चेदि जनपद में सम्मिलित था। महाभारत में कौशल के साथ त्रिपुरी का उल्लेख मिलता है।मार्कण्डेय पुराण में बताया गया है कि जम्बूदीप की स्थिति में भगवान, कूर्मरूप में निवास करते हैं तथा कूर्म के दक्षिण चरण में चेदि देश और त्रैपुर स्थित हैं।

त्रिपुरी का ऐतिहासिक महत्वः तेवर गांव के पास प्राचीन त्रिपुरी नगरी के भग्नावशेष मौजूद हैं। ये अवशेष अनेक टीलों तथा स्मारकों के रूप में नर्मदा तट पर कई मीलों के घेरे में विखरे पड़े हैं। त्रिपुरी का सर्वप्रथम उत्खनन 1952–53 में सागर विश्वविद्यालय द्वारा स्व. डा. गो.ग. दीक्षित के निर्देशन में किया गया।अभी तक प्राप्त उल्खनित सामग्री के आधार पर त्रिपुरी के इतिहास को निम्लिखित कालों में रखा गया है।

550 ई. कलचुरि राजवंशकलचुरि राजवंश का उदय : जबलपुर जिला और इसके आसपास का क्षेत्र पुरातात्विक धरोहर की दृष्टि से मध्यप्रदेश का समृद्ध क्षेत्र है। देश के मध्य में स्थित होने के कारण कलचुरि शाशको ने जबलपुर के पास त्रिपुरी को राजधानी बनाकर अपने साम्राज्य की सात शाखाओं (1.माहिश्मती शाखा, 2.त्रिपुरी शाखा, 3.रतनपुर शाखा, 4.सरयुपार, 5.कल्याण शाखा, 6.विदर्भ शाखा, 7. कालिंजर शाखा) से छठवी शताव्दी से अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक देश के किसी न किसी भूभाग पर अपना आधिपत्य बनाए रखना था। भारतीय इतिहास मे बारह सौ वर्षो से अधिक के इतने लम्बे समय तक एक छत्र राज करने वाला अन्य कोई दूसरा राज वंश नही है। मध्य भारत के इस क्षेत्र को चेदि और डाहल भी कहां गया है। इसकी महत्ता इससे प्रकट होती है। कि आज से करीब 1500 वर्ष पूर्व कलचुरी शासको ने राजधानी त्रिपुरी को केन्द्र बनाकर यहां से बनारस और पंजाब के भूभाग तक राज्य का विस्तार किया। बनारस को कुछ काल तक त्रिपुरी की राजधानी का भी गौरव प्राप्त था। बनारस मे गंगा किनारे कलचुरि सम्राट कर्ण ने पक्का घाट और सात मंजिला (कहीं कहीं 12 मंजिला भवन का उल्लेख है) भवन बनवाया था जिसे कर्ण मेरू कहीं जाता था। कलचुरि राज बंश (जिसे पहले चेदि जनपद कहते थे) का इतिहास माहिश्मती के शासन राजा सुबन्धु के 5वीं सदी कलचुरि संवत्167(सन् 414 ईस्वी) के ताम्र से मिलता था। इसके बाद संगम सिह और इसके बाद कलचुरि राजा कृष्णराज का पता चलता है जिसके शादी के सिक्के तेवर, और बैतूल, विदिशा आदि स्थानो मे प्राप्त हुए है। तेवर (जबलपुर),पट्टल (बैतुल), और वेसजार (विदिशा) आदि स्थानो से प्राप्त चॉदी के सिक्कों से ज्ञात होता है कि महाराज कृष्णाराज के शासनकाल में इनके चॉदी के सिक्के चलते थे। विदिशा मे कलचुरि शासन कृष्णराज का एक रूपक सिक्का भी मिला है। कलचुरि वंश के इतिहास से ज्ञात होता है कि कृष्णराज ने कालिंजर के आदमखोर शासन को नाई का वेश रखकर , उसे मारकर कालिंजर पर अधिकार किया था। सम्राट कृष्णराज का शासनकाल 550 ईसवी 575 ई.तक माना जाता है।सम्राट कृष्णराज का उत्तराधिकारी भंकरगण हुआ। जिसका शासन 575 ई. से 600 ई. तक माना गया है शंकर का उत्तराधिकारी तथा माहिश्मती का अंतिम हैहय (चुदि) राजा बुद्धराज हुआ। इसके बाद इन्होने अपनी राजधानी माहिश्मती से हटाकर त्रिपुरी को राजधानी बनाया।

कलचुरि राजवंश की त्रिनुरी शाखा का पहला हैहय (चेदि) शासन वामराजदेव हुआ। उस काल मे त्रिपूरी चेदि नगरी और वहॉ के शासन चै़द्य कहलाते थे वामराज देव के राज्य का विस्तार वघेलखण्ड से आगे उत्तर में गोमती नदी से लेकर दक्षिण मे नर्मदा तक था। सम्राट वामराज परम भट्टारक महाराजाधिराज के पश्चात् दो तीन पीढियो तक के शासको का कोई पता नहीं चलता है

कलचुरि नामकरणः कलचुरि नामकरण के बारे मे विद्ववानो मे मतभेद है। कोई इसे शिव का नाम कालचूर्य से बना कहता है मो कोई कल अर्थात्र शरीर को चूर करने पर प्रकट हुआ बताता है एक प्रसंग मे कहां गया है कि महाराज कार्तवीर्य कलयुग को चूर्ण किया अथार्त रोका था। इसलिये कलचुरि नाम पडा। एक अन्य अर्थ मे कटक अर्थात सेना को

चूर करने के कारण कलचुरि नाम हुआ। कुछ विद्ववान कलिंग देश मद्चर करने के कारण कलिचूर कलचुरि नाम उपाधि हुआ। हैहय विवरण सार पुस्तिका के अनुसार महाराज हंसध्वज जिनकी चॉदा (चुदपुर) राजधानी थी उनके वंशज सौमेश्वर ,सौविदेव ने अनेक राजाओ को जीतकर अपना राज्य का विस्तार कल्याण तक कर दिया था। और उन्हे भुजबल मल्ल, रायमुरारी, पृथ्वी वल्लभ, महाराजाधिराज, परमेश्वर और कलचुरि उपाधियॉ प्राप्त हुई। बीबी मिरारी की पुस्तक कलचुरि नरेश और उनका इतिहास मे लिखा है। कि हैहय वंशियो ने पहले कटचूर पद प्राप्त किया तथा कालान्तर मे कलचूर हुए।महाराज सुबन्धु के काल में माहिश्मती सर्वप्रथम राजधानी के रूप में किल्चुरि संवत् 167 (417 ई.) के आसपास स्थापित हुई। इसके बाद छठवीं सदी में गुजरात के भड़ोच जिले के सुनौकलां ग्राम से प्राप्त ताम्रपत्र जो संवत् 292 में भरूकच्छ से महासामन्त, महाराज संगम सिंह द्वारा जारी किया गया था संगम सिंह त्रैकूटकों का माण्डलिक (महासामन्त) था जिसने कालान्तर में स्वयं को स्वतन्त्र घोषित कर महाराज के रूप में स्थापित कर लिया।

इस प्रकार संगम सिंह से एक नये वंश का आरंभ हुआ। यह वंश आद्यकलचुरी वंश था जिसका नामकरण 'कलच्छल' नामक स्थान के आाधार पर किया गया होगा। यह स्थान छोटा नागपुर करली नामक गाँव के समीप बसा है। यहाँ से एक अपूर्ण ताम्रपत्र प्राप्त हुआ था जिसे परमभट्टारक के पादानुध्यात ई" वर रा (दा) त् ने प्रचकाशा से जारी किया था।

इन सब का कारण कलचुरि नाम का कटच्युरि, कलत्सुरी, कलचुरि, कालचूर्य तथा करचुलि आदि अपप्रभंशों में पाया जाना है। यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि वामराजदेव तक यह भूभाग चेदि प्रदेश और यहाँ का राजवंश चेदि तथा इस वंश के राजा चैद्य कहलाते थे। इसके बाद करीब 200 वर्शों तक इस राजवंश के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं होता है पश्चात् भांकरगण भाासक का त्रिपुरी में कलचुरि वंश के नाम से शासन आरंभ होना पाया जाता है।

अब यदि उस काल के इतिहास पर नजर डालें तो बैतूल जिला (म.प्र.) के मुलताई ग्राम से राष्ट्रकूट वंश की दो प्रशस्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इनकी पहली प्रशस्ति भाक संवत् 553 अर्थात् वि.सं. 688 अर्थात् सन् 631 ई. की है। इसमें राष्ट्रकूट राजाओं की वंशावली लिखी है। दूसरी प्रशस्ति भाक संवत् 631 (वि.सं. 766 या र्दस्वी सन् 709 ई.) की है। यह प्रशस्ति राष्ट्रकूट राजा नंदराज के समय की है। इसमें नंदराज की उपाधि युद्ध शूर लिखी है और उल्लेख है कि दान कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को दिया गया था। इस प्रकार दिर 24 अक्टूबर 709 ई होना सिद्ध है।

राम काव्यों में मनोरंजन के साधन

डॉ. प्रीति पाण्डेअतिथि शिक्षक शासकीय च. वि. महर डिण्डौरी

राम संबंधी महाकाव्यों के अध्ययन के ज्ञात होता है कि नर–नारी सांसारिक विषयों को अधिक सरस बनाने के लिए मनोरंजन के विभिन्न साधनों का प्रयोग किया करते थे। नर–नारियों के मनोविनोद के लिए जल–विहार, उद्यान–विहार, वन–विहार आदि अनेक साधन थे।

1.जल विहार : कवि कालिदास विकसित कमलों से तथा मधुर ध्वनि करने वाले जलचर पक्षियों से गृहदीर्घकाओं (घर की बावड़ियों) का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि ''जल विहार के करते समय अयोध्या का जिन दीर्घकाओं का जल, स्त्रिओं के हस्ताघात से मृदंग के ध्वनि का अनुकरण करता था, वहां पर अब अयोध्या के उजड़ जाने से, वह जल जंगली भैंसों के सींगों से आहत होकर रोता है।'' इससे संकेत मिलता है कि स्त्रियाँ जल विहार करती थीं और जल विहार के लिए आधुनिक स्वीमिंग पूल की भांति महलों में दीर्घिकाएँ बनी हुई थीं । नारियाँ नदियों में भी जल विहार किया करती थी । एक स्थान पर कवि लिखते हैं कि जल क्रीड़ा के समय रानियों के स्वेत चंदन के धुल जाने के कारण कालिन्दी का जल गंगा के जल की तरंगों के समान श्वेत मिश्रित नीलवर्ण दिखाई देता था।

महाकवि भट्टि का कथन है कि राम ने हनुमान को अयोध्या का रास्ता बताते हुए कहा था कि तुम अयोध्या की नारियों के पयोधरों पर पहले लगे हुए तथा बाद में पानी में धुले हुए केसरों से पीली तथा रमणीय सरयू नदी को देखते अयोध्या जाओगे। महाकवि कुमारदास ने दशरथ तथा उनकी रानियों के जल विहार का विस्तृत वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि उद्यान में एक सुंदर सरोवर बना हुआ था। उसमें राजा अपनी बहुत सी रानियों के साथ विभिन्न प्रकार की काम क्रीड़ाएँ करता था। जल–विहार के समय लपटा–लपटी में किसी युवती का हार टूट कर बिखर जाता था तो किसी के शंख के बने कंकड़ पानी में गिर जाते थे । आनंद रामायणन ने सीता और राम के जल विहार का विस्तृत वर्णन करते हुए लिखा है कि क्रीड़ा भवन में एक तालाब बना हुआ था। वहां पर आनंदपूर्वक जल विहार करते थे।

2.उद्यान विहार : उद्यान विहार भी मनोरंजन का अच्छा साधन माना जाता था। आदिकवि का कथन है कि अयोध्या के चारों ओर मनमोहक उद्यान थे। राजकन्याएं उद्यान भूमि में जाकर गाने–बजाने के साथ नृत्य करती हुई अपना मनोरंजन किया करती थी । अंतःपुर में बनी हुई अशोक वानिका भी लताओं और पुष्पों से सुशोभित थी । राम और सीता का वह क्रीड़ा–कानन इंद्र के नंदन वन तथा ब्रम्हा द्वारा निर्मित कुबेर के चैत्रस्थ वन की भांति सुशोभित हो रहा था । वे हमेशा इस उपवन में विहार करके आनंदमय जीवन व्यतीत करते थे। महाकवि कालिदास ने भी उनके उपवन विहार की ओर संकेत किया है। दशरथ तथा उनकी रानियां बसंत ऋतु में उद्यान विहार किया करते थे। वे विभिन्न प्रकार के वृक्षों और पुष्पों को देखकर रोमांचित होती थी । वे फूलों को एकत्रित करती थीं। फूलों के कर्णाभूषण बनाती थीं । कभी लताकुंजों में छुप जाती थीं । आनंद रामायण में भी सीता और राम के उद्यान विहार का विस्तृत वर्णन किया गया है । सीता के गर्भवती का समाचार सुनकर तथा पत्नी की अभिलाषा जानकर राम ने लक्ष्मण को आज्ञा दी थी कि सीता नगर के बाहर वाले उद्यान में जाना चाहती हैं । इसके पश्चात् राम और सीता ने पालकियों में बैठकर उद्यान की शोभा का दर्शन करने के हेतु प्रस्थान किया था । नगर की जनता माताएं, भाई, स्त्रियां, गुरूजन आदि सब उनके साथ उद्यान विहार के लिए गए थे। उद्यान विभिन्न वृक्षों, फूलों व फलों से सुशोभित था । राम–सीता आदि वहां एक मास तक ठहरे थे। इससे यह ज्ञात होता है कि उद्यान नगर से दूर था। वहां पर भवन बनाए जाते थे और राज परिवार के सदस्य मनोविनोद के लिए कुछ काल तक वहां ठहरते थे।

3.वन–विहार : आदिकवि का कथन है कि अयोध्या के पुरूष नारियों के साथ शीघ्रगामी वाहनों के द्वारा वन–विहार के लिए जाते थे। चित्रकूट पर्वत पर पुरूष अपनी पत्नियों के साथ जाते थे। वहां पर उत्पल, भोजपत्र आदि के पत्तों की चादर वाले बिस्तर बना कर उन पर कमलों के पत्ते बिछाते थे। कमलों की पुष्पमालाएं बनाते थे। विलासक्रीड़ाओं के बाद घर लौटते थे।

4.पशु–पक्षी : पशु–पक्षी भी लोगों के मन बहलाव का साधन थे । नारियां सुंदर मृगों की ओर आकर्षित होती थी। सीता सुंदर मृग को देखते ही मुग्ध हो गई थीं और उसने राम से कहा था कि यह मृग हम सबके मनोविनोद का साधन बनेगा । वनवास की अवधि की समाप्ति पर यह हमारे अंतःपुर की शोभा में वृद्धि करेगा। घरों में विनोद के लिए शुक, सारिका, तोते, मोर आदि पक्षियों को पाला जाता था। कैकेयी के भवन के तोते, मोर, हंस आदि पालित पक्षी अपने मधुर कलरवों से भवन को अत्यधिक शोभायमान करते थे । कवि कालिदास का कथन है कि अयोध्या के सुंदर

पंखों वाले पालित मोर मृदंग की ध्वनि सुनते ही नृत्य किया करते थे। आनंद रामायण में राम और सीता पिंजरों में बैठे हुए पक्षियों के साथ क्रीडा किया करते थे । सीता के शयनागार में भी सारिकाएं थी। सीता सारिकाओं के साथ खेलतीं तथा इधर–उधर की बातें करके राम के आने की प्रतीक्षा किया करती थीं ।

5.पुष्पचयन, पुष्पमाला या अलंकार निर्माण : उद्यानों तथा वनों से पुष्प तोड़ना, उनकी मालाएं या विभिन्न प्रकार के आभूषण बनाना न केवल नारियों के मनोविनोद के ही साधन थे अपितु उनकी रूचि के भी परिचायक आदि कवि का कथन है कि सीता अपने आश्रम के आस–पास पुष्प चुनने जाती थीं। कालिदास के अनुसार नारियां मौल श्री पुष्पों की मेखलाएं बनाती थीं । कुमारदास के अनुसार दशरथ की रानियां विभिन्न प्रकार के पुष्पों को देखकर बहुत प्रसन्न हुई थीं । उन्होंने ऊंचे वृक्षों से पुष्प तोड़ने का प्रयत्न किया था । पलाश के गुलदस्ते बनाए थे तथा पति के साथ लता कुंजों में विहार किया था ।

6.खिलौने : आनंदरामायण के अनुसार खिलौने भी तत्कालीन समाज की नारियों के मनबहलाव का एक अच्छा साधन था । राम और सीता के भवन में नकली हाथी, घोड़े, ऊंट और राजदूत आदि खिलौने थे। सीता कभी घर के स्तंभों पर बने हुए कौतुकों तथा सूत्रबंध से बंधी हुई कठपुतलियों का नाच देखती थीं तथा कभी कृतिम हाथी आदि के रूपों से अपना मन बहलाती थीं ।

7.कथाएं : पौराणिक कथाओं का श्रवण भी मनोरंजन का एक साधन था। महाकवि भट्टि के अनुसार शबरी नित्य प्रति विद्वानों से पुण्य कथाएं सुनकर प्रसन्न होती थीं ।

8.संगोत एंव वाद्य यंत्र : संगीत तथा वाद्य यंत्रों की मधुर से राजा–प्रजा, स्त्री–पुरूष, आर्य–अनार्य सभी वर्गों के लोग नित्यप्रति अपना मन बहलाते थे। आदिकवि का कथन है कि राजपरिवार की रानियां तथा कन्याएं अपने मनोविनोद के लिए प्रासादों में सदा गीत, वाद्य सुना करती थीं । आनंदरामायण के अनुसार राम–सीता को हास्य गीत आदि सुनाकर उनका मनोविनोद करते थे । रम्भा ने अपने अनुपम गीत से मुनि विश्वामित्र के हृदय को आकार्षित करने का प्रयत्न किया था। इस प्रकार संगीत का प्रयोग मनोरंजन के साथ–साथ मनमोहक के लिए भी किया जाता था।

9.नृत्य तथा नाटक : आदिकाव्य में अपसराओं का नृत्य का वर्णन अनेक स्थानों पर किया गया है । राम राज्याभिषेक के उपरांत गीत तथा नृत्यकला में नारियों ने सीता के मनोविनोद के लिए नृत्य किया था। आनंदरामायणकार का कथन है कि राजा–रानी के मनोरंजन के लिए बहुत सी नर्तकियां बुलाई जाती थीं । वे नृत्य करके उनका मन बहलाती थीं ।

राम संबंधी महाकाव्यों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख नहीं है कि समाज में लोगों के मनोरंजन के लिए नाटक खेले जाते थे । आदिकवि ने एक स्थान पर स्त्रियों की नाटक मण्डलियों का उल्लेख किया है । इनसे संकेत मात्र मिलता है कि नाटक का प्रचलन था ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रामसंबंधी काव्यों में वर्णित समाज मनोरंजन के विभिन्न साधनों का प्रयोग कर जीवन को आनंद और उल्लास से व्यतीत करता था। लोगों को सुख–सुविधाएं प्राप्त थीं । नर–नारी जीवन को सरस बनाने के लिए मनोरंजन के विभिन्न साधनों का प्रयोग किया करते थे ।

संदर्भ ग्रंथ :

1. **महर्षि वाल्मीकि** :– श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (हिन्दी भाषांतर सहित),
गोविंद भवन कार्यालय, गीता प्रेस गोरखपुर
2. **महाकवि कुमारदास** :– जानकी हरण – वीरेंद्र घोष, मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1–ए हास्मीपुर रोड, इलाहाबाद–211001
3. **आनंदरामायण (व्याख्यासहित)** :– श्री वेंकटेश्वर प्रेस, 7 खेमराज श्री
कृष्णादास मार्ग, खेतवाड़ी मुंबई–महाराष्ट्र–400004
4. **महाकवि कालिदास** :– रघुवंश महाकाव्य–चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन,
गोपाल मंदिर लेन वाराणसी–221001
5. **भट्टि काव्यम्** :– व्याख्याकार–पं. शेषराज शर्मा, रेग्मी, चौखंभा सीरीज
ऑफिस वाराणसी–221001

दुष्यंत की गजलों में ओजस्वी स्वर

पायल लिल्हारे (शोधार्थी) रा.दु.वि.वि.जबलपुर

हिन्दी गज़ल को नई दिशा देने का गौरव दुष्यंत कुमार को प्राप्त है। गज़ल सम्राट दुष्यंत कुमार ने गज़ल के माध्यम से अपने दर्द को अभिव्यक्ति दी है। उनकी गज़लों का मिज़ाज कवि का अपना है। गज़ल निर्माण के लिए उन्हें कोई बंधन स्वीकार्य नहीं रहा। उनकी गज़लों में हृदय के चीत्कार की समष्टि है, संवेदनाओं का सैलाब है, मस्ती का शिखर है, आजाद पंछी की तरह उड़ान है, मंजी हुई जुबान, कसे हुए छंद, बंकिम भंगिमा, नया तेवर, कसी हुई अभिव्यक्ति के साथ आदमी की प्रमाणिक पीड़ा की आवाज दुष्यंत की गज़लों में मिलती है। आम आदमी की बात, उसके दुःख–दर्द को बयान करती दुष्यंत की गज़ले शोले उगलती हुई भ्रष्ट राजनीति व शासनतंत्र पर व्यंग्य करती है। भ्रष्टाचार, अवैधानिक गतिविधियाँ, संविधान की असफलता, नेताओं की आदर्शहीन घिनौनी हरकतों और हमारी प्रजातंत्रीय प्रणाली की असफलताओं पर शायर ने करारा व्यंग्य किया है। साथ ही हिन्दुस्तान की सूरत को बदसूरत करने वाले लोगों के खिलाफ अवाम को जगाने का प्रयास किया और विद्रोह व परिवर्तन के लिए उकसाने का प्रयत्न गज़लों के माध्यम से किया है।

आजाद भारत में आदमी अधभूखा व अधनंगा है, सियासदों ने उसके जमीर को मार डाला है। शोषक ने उसका रक्त चूस लिया है। एक ओर पूँजीपति सम्पन्नता के नशे में चूर है तो दूसरी ओर गरीब के पास न सिर पर छत है, न बदन पर कपड़े, न ही खाने को रोटी। ऐसी असमानता की स्थिति में दुष्यंत कुमार उन गरीब मजदूर; शोषित वर्ग की आवाज बनकर उभरे है। दुष्यंत कुमार ने स्वयं कहा है कि– "मेरे लिए कविता यातना से पैदा होती है।.... मैं एक साधारण आदमी हूँ और इतिहास और सामाजिक स्थितियों के संदर्भ में साधारण आदमी की पीड़ा, उत्तेजना, दबाव, अभाव और संबंधों के उलझावों को जीता और व्यक्त करता हूँ।''

हिन्दी गज़ल को नई दृष्टि देने वाले और उदात्त जीवन मूल्यों के चितेरे दुष्यंत ने हिन्दी गज़लों को संवेदना व शिल्प दोनों आभूषणों से सजाया है आम–आदमी के दर्द–दशहत को अवाम की समस्या बनाकर दुष्यंत ने गज़ल को परवान चढ़ाया है– "मैं बेपनाह अंधेरों को सुबह कैसे कहूँ, मैं इन नजारों का अंधा तमासबीन नहीं।"

दुष्यंत की सन् 1975 में प्रकाशित गज़ल संग्रह 'साये में धूप' में व्यक्तिगत पीड़ा व सामाजिक वैषम्य का दबाव है, सत्ता का सलूक, शोषित, पराजित इंसान की विवशता, संघर्ष और घुटन, राजनीतिक षड़यंत्र, क्रांति की जरूरत आदि अनेक मुद्दों को लेकर दुष्यंत ने इन गज़लों में सफलतापूर्वक बांधा है। इनकी गज़लों में इश्क और हुश्न का वार्तालाप नहीं, अपितु खोए हुए आम आदमी को ढूँढ़ती हुई रोशनी है। दुष्यंत ने गज़लों के अतिरिक्त गद्य की अनेक विधाओं में भी कलम चलाई है यथा– 'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेरे में', 'जलते हुए वन का बसंत' कविता संग्रह है, 'एक कंठ विषपायी' काव्यनाटक (गीतिनाट्य) है, 'छोटे–छोटे सवाल', 'आँगन में एक वृक्ष', 'दुहरी जिन्दगी' उनके उपन्यास है, 'मन के कोण', एकांकी है, और 'मसीहा मर गया' नाटक है।

दुष्यंत ने गज़लों को नया आयाम दिया, उन्होंने प्रेम, श्रृंगार और रहस्यात्मक अनुभूतियों से बिल्कुल हटकर समाज की कई ज्वलंत समस्याओं से साक्षात्कार कराने का सफल प्रयास किया। उनके हृदय में देश–प्रेम, सहानुभूति, सामाजिक अन्याय के लिए आक्रोश, शोषित–पीड़ित जनता के प्रति गहरी संवेदना तथा अव्यवस्था के विरूद्ध उद्याम आवेगमयी भावनाओं की लहरे हिलोरे ले रही थी निदा फाजली ने इस संदर्भ में कहा कि– ''दुष्यंत की गज़ल उनके युग की नई पीढ़ी के गुस्से और नाराजगी से सजी बनी है। यह गुस्सा और नाराजगी, उस अन्याय और राजनीति के कुकर्मों के खिलाफ नए तेवरों की आवाज थी, जो समाज में मध्यवर्गीय झूठेपन की जगह पिछड़े वर्ग की मेहनत और दया की नुमानंदगी करती है।" अपनी गज़लों व कविताओं के संदर्भ में स्वयं दुष्यंतकुमार ने भी कहा था– ''मेरे पास कविताओं में मुखौटे नहीं हैं, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राएँ नहीं है, मैं सामाजिक परिस्थिति के संदर्भ में साधारण आदमी की पीड़ा, उत्तेजना, दबाव, अभाव और उनके संबंधों में उलझनों को जीता हूँ और व्यक्त करता हूँ। मेरे लिए मनुष्य मात्र की अवमानना सबसे अधिक कष्टप्रद है।"[1]

डॉ. अब्दुर्रशिद शेख ने कहा है– ''दुष्यंत का भोगा हुआ यथार्थ ही उनकी गज़ल है। उनका दर्द उनका न रहकर अवाम का दर्द बन गया।[2] इसी संदर्भ में– ''मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूँ, वहीं गज़ल आपको सुनाता हूँ।" व्यंग्यकार शरद जोशी के शब्दों में–– ''दुष्यंत के व्यक्तित्व और दुष्यंत की गज़लों में कोई फर्क नहीं था, ऊपर से सौम्य और मधुर, भीतर से समय की कटुता के गज़ल से सराबोर।" दुष्यंत की गज़ले आम–आदमी के दर्द को

आवाज देती है उसकी पीड़ा, घुटन, वेदना सब कुछ उनकी गज़लों में है–

"जिस तरह चाहों बजाओं इस सभा में,
हम नहीं है आदमी, हम झुन–झुने हैं।"

आम आदमी रोटी के लिए तरसता है और दिल्ली में केवल बहस जारी है–

"भूख है तो सब्र कर, रोटी नहीं तो क्या हुआ,
आजकल दिल्ली में है, जेरे बहस ये मुद्दआ।"

भ्रष्टाचार, घूसखोरी, कालाबाजारी, बेईमानी का साम्राज्य कैसे फल–फूल रहा है–

"रोज जब रात को बारह का गजर होता है,
यातनाओं के अंधेरे में, सफर होता है।"

देश में व्याप्त घोर असमानता, सामाजिक विषमता व स्वातंत्रयोत्तर भारत के चूर–चूर होते विकास के सपनों को बरकरार रखने का कार्य दुष्यंत ने किया। योजनाओं के क्रियान्वयन में हो रही लापरवाही व कागजों पर सफल योजनाओं के प्रति ध्यानाकर्षित करते हुए कहते है–

"कहाँ तो तय था चिरागा हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग भयस्सर नहीं, शहर के लिए।"

दुष्यंत के नेत्रों में सम्पन्न एवं ऐश्वर्य युक्त राष्ट्र की लालसा थी प्रगतिशील राष्ट्र की उनकी कल्पना जब चकनाचूर हुई तब उन्होंने अपने ओजस्वी स्वर में विघटनकारी तत्वों को फटकारा व जनसामान्य को जगाने का भरसक प्रयास किया। नवीन युग में व्याप्त जड़ता, कुंठा, अंधता, बेईमानी, कालाबाजारी, घूसखोरी, भ्रष्टाचार, परपीड़न आदि का चातुर्दिक बोलबाला था, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं में दिनोंदिन गिरावट को दृष्टिगत करते हुए भी दुष्यंत ने आशा एवं आस्था के धरातल पर अपनी गज़लों को स्थापित करने का पूरा प्रयास किया। दुष्यंत की गज़ले साम्प्रदायिक सौहार्द के मसीही उद्देश्य से प्रेरित थी– "तेरा निजाम है सिलदे जुबान शायर की,
ये एहतिहात जरूरी है इस बहर के लिए।"

वे जनक्रांति का शंखनाद कर सामाजिक परिवर्तन लाने के पक्षधर थे। उनकी तीखी, तल्ख काव्य शैली के मूल में सर्जनात्मक एवं रचनात्मक दृष्टि सन्निहित थी। आम नागरिकों के सुख के साम्राज्य को स्थापित करने के लिए वे परिवर्तन व जनान्दोलन से गुरेज नहीं रखते–

"हो गई है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"

अपनी सशक्त लेखनी व पैनी दृष्टि के द्वारा लोगों को प्रेरित करते हुए जन समुदाय में नयी ऊर्जा का संचार किया। वे जनसामान्य की विवशता पर दुःख प्रकट करते हुए मानववाद की सुरक्षा–संरक्षा हेतु संपूर्ण समाज का आव्हान करते है, उनकी गज़लें प्रजातांत्रिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है तथा अनुभव की सच्चाई को ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करती है–

"कैसे मंजर सामने आने लगे है, गाते–गाते लोग चिल्लाने लगे हैं,
अब तो इस तालाब का पानी बदल दो, ये कंवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।"

लोगों की सामाजिक एवं राजनीतिक निष्क्रियता पर व्यंग्य करते हुए वे कहते हैं–

"तुम्हारे शहर में ये शोर सुन–सुनकर तो लगता है,
कि इंसानों के जगह में कोई हाँका हुआ होगा,
यहाँ तो सिर्फ गूंगे और बहरे लोग बसते है,
खुदा जाने वहाँ पर किस तरह जलसा हुआ होगा।"

दुष्यंत ने मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार व्यवस्था का विरोध किया–

"हाथों में अंगारों को लिए सोच रहा हूँ,
कोई मुझे अंगारों की तासीर बताए।"

राजनीतिक लालफीताशाही पर व्यंग्य करते हुए वे कहते है–

"यहाँ तक आते–जाते सूख जाती है कई नदियाँ,
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।"
"अब किसी को नजर आती नहीं कोई दरार,
घर की हर दीवार पर चिपके है इतने इश्तहार।"

'सारिका' में कमलेश्वर ने 'मेरा पन्ना' शीर्षक से व 'कहानी' पत्रिका के संपादक श्रीपत राय अपने संपादकीय में कमोवेश एक ही बात लिखते हैं– ''असली साहित्यकार वही है जो अपने समय की नब्ज हाथ में पकड़कर उसकी पहचान रख सकता है।'' किसी श्रेष्ठ रचना के लिए अपनी समसामयिकता के प्रतिबद्धता पहली कसौटी होती है और दुष्यंत इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। वे कहते थे–

"मुझ में रहते है करोड़ों लोग, चुप कैसे रहूँ,
हर गज़ल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।"

"धार्मिक पाखंड पर व्यंग्य करते हुए वे कहते है–

"गजब है सच को सच कहते नहीं वो, कुरानों, उपनिषद खोले हुए हैं।''

कहीं–कहीं वह समाज के पाखंडी पुरोधाओं को जवाब देते है–

"रक्त वर्षों से नशों में खौलता है, आप कहते है क्षणिक उत्तेजना है
हो गई हर घाट पर पूरी व्यवस्था, शौक से डूबे जिसे भी डूबना है।''

वहीं कभी कभी बेकार की बयानबाजी से बचते है–

"ये सारा जिस्म झुककर बोझ से दुहरा हुआ होगा,
मैं सजदे में नहीं था, आपको धोखा हुआ होगा।"

दुष्यंतजी ने आपातकालीन स्थिति का चित्रण करते हुए कहा था–

"मत कहो आकाश में कुहरा घना है, यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है

इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछी है, हर किसी का पाँव घुटनों तक सना है।''
"दोस्त अपने मुल्क की किस्मत पे रंजीदा न हो,
उनके हाथों में है पिंजरा, उनके पिंजरे में सुआ।"
राष्ट्र की गिरती स्थिति पर उनका क्षोभ अत्यंत संवेदनशील है–
"कल नुमाइश में मिला था वो चिथड़े पहने हुए,
मैंने पूछा नाम तो बोला, कि हिन्दुस्तान है।"
कहते है–
''जिस बात का खतरा था, सोचो की वो कल होगी
जरखेज जमीनों में, बीमार फसल होगी।"
कहीं संविधान की स्थिति पर कहते है–

"सामान कुछ नहीं फटे हाल है मगर, झोले में उसके पास कोई संविधान है।'' परिवर्तन के लिए जन आव्हान करते हुए वे कहते है–
हर सड़क पर हर गली में, हर नगर, हर गाँव में
हाथ लहराते हुए लाश चलनी चाहिए।"
दुष्यंत जहाँ आदर्शहीन राजनीतिक विडम्बना, सत्यहीन सामाजिक जिन्दगी, आम आदमी के दर्द, सामाजिक विषमता को व्यक्त करते है वहीं आशावादी स्वर भी उनकी गज़लों में मिलता है–

"एक चादर साँझ ने सारे नगर पर डाल दी,
यह अंधेरे की सड़क, उस भोर तक जाती तो है।"
"इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।''
"एक चिंगारी कहीं से ढूँढ़ लाओं दोस्तो,
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।"
"दुख नहीं कोई कि अब उपलब्धियों के नाम पर,
और कुछ हो न हो, आकाश सी छाती तो है।''

दुष्यंत कुमार की गज़लों को कहना व उसका मूल्यांकन करना सूर्य को दीपक दिखाने का प्रयास मात्र है–

"कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।"

संदर्भ ग्रंथः

1.'जलते हुए वन का बसंत'– दुष्यंत कुमार त्यागी
2.गज़ल सौन्दर्य'–मीमांसा–डॉ. अर्ब्दुरशीद शेख, पृ.57
3.'साये में धूप'–दुष्यंत कुमार

प्रेमचंद के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार

श्याम मोहन पटेल (शोधार्थी) रा.दु.वि.वि. जबलपुर

प्रेमचंद अपने युग के जागरूक प्रहरी थे। उनकी कलम समाज की संपूर्ण समस्याओं पर चलती रही। साम्राज्यवादी सामंती परिवेश में प्रगतिशीलता की मशाल लेकर चलने वालों में प्रेमचंद अग्रणी रहे है। उनके लेखन ने संपूर्ण साहित्य जगत का प्रतिनिधित्व किया है। 1918 से 1936 तक के युग को उनके महिमामण्डित साहित्यक व्यक्तित्व के कारण ही प्रेमचंद युग की संज्ञा से अभिहित किया गया। उनके साहित्य में अभावग्रस्त जीवन संघर्ष से जूझती कथाएँ भी है, अनुभव की सच्चाई भी, पीड़ित नारी का दर्द भी, दलित वर्ग की समस्याएँ भी, मध्यमवर्गीय जीवन की विसंगतियॉ भी वहीं राष्ट्रीय संघर्ष, देशभक्ति व गॉधीवादी आदर्श की भी प्रस्तुति है। उपन्यास सम्राट, कलम के सिपाही, व कलम के इस जादूगर ने अपनी मानवीय दृष्टि को इतना विस्तृत कर लिया था कि उसमें समाज की समग्रता सन्निहित हो चुकी थी, इसलिए उनके साहित्य में समाज का हर वर्ग एवं हर पहलू प्रकाशित हुआ है। युग प्रवर्तक प्रेमचंद जी ने उपन्यासों को तिलिस्म–ऐय्यारी की दुनिया से बाहर निकालकर, समाज से जोड़ा। प्रेमचंद का सामाजिक जीवन से गहरा सारोकार था।

प्रेमचंद के कथा साहित्य में दलितों के प्रति मानवीय दृष्टि की अभिव्यक्ति रही है। अपनी कई कहानियों एवं उपन्यासों में उन्होंने दलितों पर होने वाले अत्याचार, अन्याय, शोषण एवं उत्पीड़न का चित्रण किया है। अपने साहित्य में जमीदारों व उच्चवर्गों द्वारा दलितों के आर्थिक, सामाजिक व दैहिक शोषण को गहरी सहानुभूति और वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ अंकित किया है। दलित साहित्य का आधार अम्बेडकर का दर्शन है। आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य वह है जो दलित मुक्ति के सवालों पर पूरी तरह अम्बेडकरवादी है। शोषण, अन्याय, उत्पीड़न के विरूद्ध डॉ. अम्बेडकर की विद्रोही चेतना ही दलित साहित्य की मुख्य शक्ति है।

प्रेमचंद ने व्यक्ति को सवर्ण व दलित वर्गो में न बांटकर मानवीय व प्रगतिशील जनवादी दृष्टि से ही देखा तथा दलित कहने वाली समाज की विकृत मानसिकता को भी उतारकर फेंकने का आग्रह किया। प्रेमचंद की 'बौड़म', 'सौभाग्य के कीड़े', 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआँ, 'दूध का दाम', 'कफन' आदि कहानियों तथा 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', व 'गोदान' जैसे उपन्यासों में दलित संवेदना प्रकट हुई है। उनकी ये रचनाएँ दलितों के सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों के संदर्भ में वर्ण और जातिगत भेदभाव के खिलाफ एक मनुष्य के रूप में दलित की मानवीय गरिमा व समानता के संदर्भ में लिखी गयी है। इन्हीं रचनाओं के चलते प्रेमचंद ने गाँधी और अम्बेडकर के राजनीतिक व सामाजिक आन्दोलन को साहित्यिक आन्दोलन के रूप में बदल दिया। अत्याधिक भेदभाव, छुआछूत से त्रस्त जिन अछूत जातियों की बात प्रेमचंद करते थे उनमें प्रायः चमार और भंगी अधिक है। 'ठाकुर का कुआँ' में जोखू गंदे पानी को पीने के लिए मजदूर है। गंगी ठाकुर के कुएँ से पानी लेने जाती हे पर दबंगों के भय से संत्रस्त वापस लौट आती है।

रत्न कुमार सांभरिया ने अपनी आलोचनात्मक कृति 'मुंशी प्रेमचंद और दलित समाज' में प्रेमचंद की दलित समाज से जुड़ी कहानियों की बेबाक समीक्षा की है।[1]

प्रेमचंद की सामाजिक चिन्ता के अन्तर्गत नारी की समाज में स्थिति और नारीमुक्ति आन्दोलन के प्रति प्रेमचंद का दृष्टिकोण रहा। गरीबों, शोषितों तथा दलितों के साथ–साथ सदियों से पुरूष के चंगुल में फंसी हुई मध्यमवर्गीय नारी की ओर उनका ध्यान प्रमुखता से गया है। इनकी घिसी–पिटी, पुरानी रूढ़ियों से जकड़ी, बंधनों में छटपटाती औरत पर पैनी दृष्टि है। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में स्त्रियों के चौतरफा जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनकी मुक्ति की बात समाज के सामने रखी। 'पंचपरमेश्वर', 'बूढ़ीकाकी, 'ईदगाह' आदि कहानियों में वृद्ध नारियों के प्रति परिवार के सदस्यों की मनोवृत्ति का सटीक चित्रण किया है। विधवाओं, वृद्धाओं, को परिवार में होने वाले कोई त्यौहार व आयोजनो से दूर रखा जाता है उनके प्रति परिवार के लोगों में स्नेह व सम्मान बिल्कुल नहीं रहा है। साहित्य के माध्यम से प्रेमचंद ने उनकी समस्याओं को सामने प्रस्तुत किया है। बेबसी के नीचे दबी पड़ी उन मध्यमवर्गीय अबलाओं की खामोश कराहों ने उन्हें झकझोर दिया था। उनकी बेबस आवाज को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए प्रेमचंद ने कलम का सहारा लिया।

नारी के सबला और अबला दोनों ही रूपों का चित्रण प्रेमचंद ने किया है। प्रेमचंद ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' में कहलवाया है कि ''नारी पुरूष से

उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अंधकार से श्रेष्ठ है।''[2]

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी केवल प्रेरक शक्ति के रूप में ही नहीं बल्कि पुरूष के साथ–साथ हर क्षेत्र में साथी के रूप में चित्रित है। प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी सामाजिक एवं पारम्परिक सांस्कृतिक संघर्षो के बीच अधिक निखरती दिखाई गयी है। 'गबन', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गोदान' आदि में नारी के विभिन्न रूप प्रस्तुत हुए है। प्रेमचंद उच्च, मध्यम और निम्न सभी वर्गों की नारियों के प्रतिनिधित्व को अपने साहित्य में स्थान देते है। नारी चित्रण के प्रति प्रेमचंद का दृष्टिकोण सन्तुलित और समन्वयवादी था। 'सेवासदन' के माध्यम से भारतीय नारी की पराधीनता व पुराने सांस्कृतिक परम्पराओं को तोड़ते वर्तमान समाज में नारी की पराधीनता को अपने निष्ठुर और वीभत्स रूप में चित्रित किया है। 'गबन' की जालपा, भारत का उगता हुआ नारीत्व है वह भविष्य के तूफानों की सूचना भी है। 'कर्मभूमि' की नायिका सुखदा, कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करने का संबल और पुरूषार्थ करने का गुण अपने पति में भरने वाली स्वाभिमानी सुशिक्षित, बुद्धिमान और अपनी बात को तर्क द्वारा सिद्ध करने की असाधारण क्षमता रखने वाली नारी है। 'गोदान' उपन्यास की नायिका धनिया के माध्यम से प्रेमचंद ने भारतीय नारी के आदर्श को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। जमींदारी प्रथा के खिलाफ भारतीय समाज में नारी का प्रथम स्वर धनिया के उद्‌गारों से ही अभिव्यक्त होता है। उसे जमींदारों के तलवे चाटना बिल्कुल पसंद नहीं। प्रेमंचद ने महसूस किया कि नारी धन की नहीं, बल्कि प्रेम की भूखी है यही कारण है कि 'पूस की रात' की मुन्नी, 'ठाकुर का कुआँ', की गंगी, 'चमत्कार' की चम्पा, 'बालक' की गोमती, 'गोदान' की धनिया, पति से केवल प्रेम का वरदान प्राप्त कर खुश है। प्रेमचंद का मानना था कि स्त्री का पूर्ण विकास तभी संभव है जब उसे पुरूषवत् सारे अधिकार प्राप्त हो। राष्ट्रीय आन्दोलन में बहुत सी नारियों ने भाग लिया था। प्रेमचंद की 'पत्नी से पति' कहानी की नायिका गोदावरी, अपने त्याग और साहस से अपने पति सेठ दीनानाथ को देशसेवा का मार्ग दिखलाती है।

प्रेमचंद वैवाहिक प्रथा में सुधार लाना चाहते थे। वैवाहिक विसंगतियों को प्रस्तुत करती उनकी कहानियाँ है– 'सौत', 'धर्म संकट', 'स्वर्ग की देवी', 'नया विवाह', 'सोहाग का शव', 'मिस पद्‌मा' आदि। 'प्रेमा' उपन्यास हिन्दू समाज में विधवा नारी की समस्या को लेकर लिखा गया है। 'गबन' उपन्यास की रतन भी विधवा जीवन के संघर्ष को प्रस्तुत करती है। धनिया के माध्यम से आदर्श गृहिणी के कर्तव्यों का निरूपण है, वहीं 'गबन' की जोहरा व 'सेवासदन' की सुमन के माध्यम से वैश्यावृत्ति की समस्या को भी उजागर किया है।

प्रेमचंद के साहित्य में कृषक जीवन का संपूर्ण खाका मिलता है। किसान ऋणग्रस्तता की समस्या को लेकर व जीवन लालसा की अतृप्ति को लेकर ही 'गोदान' महाकाव्यात्मक उपन्यास का सृजन प्रेमचंद ने किया। एक भारतीय किसान होरी पूरी उम्र, हाड़–तोड़ मेहनत करने पर भी किस प्रकार अंत तक ऋण से मुक्त नहीं हो पाता है तथा जमींदारों के चंगुल में किस तरह भारतीय किसान उम्रभर फंसा रहने हेतु बाध्य रहता है, यह सभी स्थितियाँ 'गोदान' में चित्रित है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना था कि– "यदि आप उत्तर भारत की जनता को, उनके रहन–सहन, खान–पान, तीज–त्यौहार को जानना चाहते है तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।'' भारतीय सामाजिक जीवन की जितनी गहरी संवेदना उनके साहित्य में वर्णित है शायद ही अन्य कथाकारों में है। डॉ. रामविलास शर्मा लिखते है कि– ''उनकी कहानी साहित्य हमारे जातीय जीवन का दर्पण है। हिन्दी भाषी जनता के उत्कृष्ट गुण उनके पात्रों में झलकते है।'' समाज में जब सामंतशाही व्यवस्था ने किसानों को ऋण के बोझ तले दबा दिया और अंग्रेजी हुकूमत ने राष्ट्र को जकड़ लिया तब प्रेमचंद कैसे इन सब विसंगतियों से मुँह मोड़ सकते थे। मैक्सिम गोर्की का कथन है कि– "साहित्कार सर्वप्रथम अपने युग की उपज, उसकी घटनाओं, दुर्घटनाओं का प्रत्यक्ष दृष्टा होता है। साथ में उसमें वह सक्रिय भाग लेता है।" उक्त कथन प्रेमचंद पर सटीक बैठता है। प्रेमचंद ग्रामीण जीवन को बहुत महत्व देते हुए कहते है– "जिस देश के अस्सी प्रतिशत मनुष्य गाँवों में बसते हो, उनके साहित्य में ग्राम जीवन ही प्रधान रूप से चित्रित होना स्वाभाविक है। उन्हीं का सुख राष्ट्र का सुख है उनका दुख राष्ट्र का दुख और उनकी समस्याएँ राष्ट्र की समस्याएँ हैं।"

प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय समाज की सच्ची तस्वीर पेश करती है। प्रेमचंद एक ऐसी दुनिया का सपना देखते थे जहाँ किसान की गर्दन किसी के पांव के नीचे दबी न हो और किसी के पांव को सहलाने के लिए वह मजबूर न हो। 'कर्मभूमि' उपन्यास में उन्होंने भारत में चल रहे राजनीतिक आन्दोलन की झलक दिखाई है। 'रंगभूमि' में औद्योगिकीकरण के दुष्प्रभावों का चित्रण किया है, 'कायाकल्प' में हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए प्रयास किया है, 'प्रेमाश्रय' में जमीदारी प्रथा द्वारा कृषक जीवन के शोषण का मार्मिक चित्रण करते हुए सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया है। 'गोदान' में तो किसान जीवन का संपूर्ण महाकाव्य ही लिख दिया है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की परिस्थितियाँ उभरकर सामने आती है। वे

सही मायने में देशभक्त थे 'सोजेवतन' में देशभक्ति परक कहानियाँ होने की वजह से ही ब्रिटिश सरकार ने उसे जब्त कर लिया था। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में ब्रिटिश शासन के अन्यायपूर्ण रवैये, ब्रिटिश शासन के प्रति जनमानस में व्याप्त असंतोष, भ्रष्ट न्यायिक व्यवस्था, पुलिस व अन्य अधिकारियों का जनता पर अत्याचार, सामंती परिवेश का चित्रण, किसानों की समस्याएँ आदि को उठाया है। 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'प्रेमाश्रय', 'गोदान' आदि उपन्यासों ने उनकी राष्ट्रीयता की झलक मिलती है।

प्रेमचंद ने अपनी साहित्यिक दृष्टि को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की संज्ञा दी है। प्रेमचंद की आदर्शवादिता उनकी गहरी मानवीयता की उपज है। इंसान के प्रति उनके गहरे दर्द से जन्मी है। इसमें संदेह नहीं कि प्रेमचंद की अपनी समय के प्रति गहरी सम्बद्धता थी। वे अपने जमाने के दुख–दर्द के प्रति जागरूक व संवेदनशील थे। सामाजिक शोषण एवं अन्याय के विरूद्ध एक अनिश्चित रवैया और विचार उनकी कृतियों में मिलेगा। प्रेमचंद उन बिरले साहित्यकारों में है जिन्होंने युगचेतना का स्वरूप निर्धारित किया। उनका साहित्य अपने युग के उतार–चढ़ाव तथा विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक गतिविधियों का ऐतिहासिक दस्तावेज है। उनके साहित्य में शोषित एवं पीड़ित वर्ग के प्रति कोरी सहानुभूति ही नहीं वरन् शोषक वर्ग के प्रति सक्रिय घृणा व आक्रोश का भाव भी विद्यमान है। प्रेमचंद जी 'प्रेमाश्रय' में कहते हैं कि– ''मेरा सिद्धांत है कि मनुष्य को अपनी कमाई खानी चाहिए। किसी को यह अधिकार नहीं कि वह दूसरों की कमाई को अपनी जीवनवृत्ति का अधिकार बनाए।''[3]

प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों में जमींदारों और महाजनों द्वारा किसानों के आर्थिक शोषण का बहुत यथार्थ, व्यापक और दर्दनाक चित्रण किया हैं। 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'गोदान' में इसी स्थिति का चित्रण है। साथ ही सरकारी अमलों के अत्याचार, शोषण आदि का चित्रण है। प्रेमचंद जी ने गाँधीजी के 'हरिजन उद्धार' व 'हिन्दू–मुस्लिम एकता' को भी प्रस्तुत किया है। 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'कर्मभूमि' आदि उपन्यासों में हमें हिन्दू–मुस्लिम समस्या देखने को मिलती है। प्रेमंचद का मन मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण था। मानवीय संवेदना जहाँ होती है। वहाँ वाद और खेमें नहीं होते इसलिए प्रेमचंद न तो गाँधीवादी थे, न समाजवादी, न ही मार्क्सवादी। बल्कि वे भारतीय परिस्थिति के अनुरूप आचरण करते थे।

प्रेमचंद का दृष्टिकोण किसी भी बिन्दु पर संकीर्ण नहीं था, जातिगत भेदभाव, हिन्दू–मुस्लिम समस्या, किसान–जमींदार संघर्ष, विधवा विवाह, अछूतोद्धार, स्त्रियों की शिक्षा, महाजनों और कर्जदारों की समस्या सभी संदर्भ में उन्होंने अपनी दृष्टि प्रगतिशील रखी। उनका सुधारवादी दृष्टिकोण निरन्तर गतिशील रहा है। अपनी इस उदारता, सहजता, मानवीय प्रेम, व्यापक सहानुभूति, प्रगतिशील दृष्टिकोण व मानव मनोविज्ञान की परख के कारण उनके साहित्य में अभूतपूर्व निखार आ गया।

प्रेमचंद का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था। वे भविष्यदृष्टा था, उन्होंने अपने साहित्य में जिन समस्याओं को उठाया, आज भी हमें उसी रूप में दिखाई देती है। उनका कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यही बात उनके साहित्य से भी उजागर होती है।

संदर्भ ग्रंथः

1.मुंशी प्रेमचंद और दलित समाज– रत्नकुमार संभारिया

2.'गोदान'– मुंशी प्रेमचंद

3.'प्रेमाश्रम'– प्रेमचंद, पृ. 164

बालाघाट जिले के खदान श्रमिकों की स्थिति

जितेन्द्र मेश्राम (शोध छात्र) इतिहास विभाग,रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर(मध्यप्रदेश)

श्रमिक समस्या नहीं समाधान है । श्रम ही जीवन है जिसके बगैर किसी भी क्षेत्र में विकास असंभव है । चाहे वह राष्ट्र निर्माण हो, शिक्षा अधोसंरचना विकास या फिर औद्योगिक क्षेत्र हो । आज के वैश्वीकरण के युग में समग्र राष्ट्र ने श्रम की महत्ता को स्वीकार किया है। वर्तमान पूंजीवाद व्यवस्था में श्रमिक को समाधान के रूप में देखा जा रहा है । आधुनिक युग में समाज एवं श्रम के क्षेत्र में श्रमिकों का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । समाज में अनेक संस्थाओं के कार्यों की सक्षमता श्रमिकों में कार्य करने की क्षमता पर ही निर्भर हो गई है ।

श्रमिक समाजरूपी रथ की धुरी के समान है । जीवन एवं विकास के किसी भी क्षेत्र में श्रमिक के अस्तित्व को इंकार नहीं किया जा सकता । दूसरे शब्दों में श्रमिक समाज के सच्चे विश्वकर्मा होते है। जिनके परिश्रम के बल से ही पेट में पलने वाले शिशु से लेकर कब्र में पांव लटकाये मानव का भरण–पोषण एवं संरक्षण होता है । किन्तु यह भारतीय अर्थव्यवस्था की दुर्भाग्यपूर्ण विडम्बना रही है कि यहां श्रमिकों की उपेक्षा की जाती है जो कि उत्पादन के महत्वपूर्ण साधन है, जिसका कुप्रभाव राष्ट्रीय उत्पादन एवं आय पर पड़ता है।खदान कोषागार की जनक है । खनिज पदार्थों की उत्पादकता में वृद्धि करने का प्रमुख उद्देश्य पूर्ण रोजगार की स्थिति को प्राप्त करना है । 21वीं शताब्दी के संदर्भ में इस अवधारणा का प्रयोग पूर्ण रोजगार की स्थिति के सृजन के माध्यम से निर्धनता उन्मूलन की दिशा में भी किया गया है । अतः बढ़ती हुई श्रम शक्ति के लिए उत्पादक रोजगार के अवसरों का सृजन एक उच्च प्राथमिकता के रूप में उभरकर सामने आया है । विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में संतोषप्रद कार्य के अवसरों का विकास खनिज संपदा के विदोहन के माध्यम से किया जा सकता है । मानवीय संसाधनों का विकास भी खनिज संपदा एवं खनन क्रियाओं के माध्यम से किया जा सकता है ।

हमें हमारे देश की खनिज संपदा पर गर्व है इसलिए कहा जाता है कि भारत एक धनी राष्ट्र है परंतु इसके निवासी निर्धन हैं। अर्थात् हमारे देश की माटी में खनिजों के विपुल भण्डार मौजूद है। परंतु विदोहन की कमी से इस धन संपदा का लाभ नहीं उठा पाए हैं। फिर भी स्वतंत्रता के पश्चात् खनिज संपदा का विदोहन काफी बढ़ा है। रोजगार के एक प्रमुख साधन के रूप में इसने अपना स्थान बनाया है । केन्द्र एवं राज्य सरकारों के इस क्षेत्र से बड़ी मात्रा में राजस्व की प्राप्ति होने लगी है। विश्व के औद्योगिक बाजार में इस क्षेत्र में हमारा योगदान बढ़ा है।

बालाघाट जिला मैंगनीज के विशाल निक्षेपों के कारण खनिज उद्योग में वर्षों से जाना जाता है । वर्तमान शताब्दी के प्रथम दशक के दौरान सर्वाधिक कार्य करने वाला खनिज उत्पादन में बालाघाट जिले को खनिज उत्पादन करने का गौरव प्राप्त है । देश के कुल मैंगनीज उत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत मैंगनीज, बालाघाट, नागपुर एवं भण्डारा मैंगनीज पट्टी से प्राप्त होता है । जिसका यह सर्वाधिक अग्रणी भाग है । मैंगनीज मिश्र लोह धातुओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । मैंगनीज खनिज कई प्रकार के होते हैं तथा इसमें से मुख्य व्यावसायिक अयस्क है । मैंगनीज अयस्क का अधिकांश उत्पादन लौह मैंगनीज बनाने में किया जाता है । जहां पर कि यह बाद में इस्पाद निर्माण के लिए प्रयुक्त होता है ।

बालाघाट जिले को मैंगनीज नगरी कहते हैं । जिले में मैंगनीज की अनेक खदानें हैं । मैंगनीज निक्षेपों का उत्खनन साधारणतः खुले खड्डों से किया जाता है । परंतु पूर्वी बालाघाट जिले के भरवेली तथा उकवा जैसे कुछ निक्षेपों का भूमिगत कार्य पद्धति से उत्खनन किया गया है ।

इस खदान में 24 घण्टे खनन कार्य किया जाता है, जो कि श्रमिकों के द्वारा 3 पारी में किया जाता है । एक पारी 8 घण्टे की होती है । इस खदान में कार्य करने वाले अधिकांश श्रमिक यही आसपास के है । खदान में कार्यरत कुशल श्रमिकों का जीवन स्तर, अकुशल श्रमिकों की अपेक्षा बेहतर है क्योंकि कुशल श्रमिकों के लिए जो मुख्यतः खान में भूमिगत गहराई में काम करते हैं यह अत्यंत जोखित भरा कार्य होता है । अधिकांश इस खदान के धसने व ढह जाने के कारण श्रमिकों की जान जोखिम में पड़ जाती है ।

खदान श्रमिक अपने अमूल्य जीवन का अधिकांश समय खनन–क्रियाओं में व्यतीत करता है, अन्य कार्यों की तुलना में खनन–क्रिया साहसिक एवं जोखिम से परिपूर्ण होती है । धरती से काफी गहराई पर तथा खुली खदानों में भी कार्य की परिस्थितियाँ उसके सामान्य स्वास्थ्य को विपरीत रूप से प्रभावित करती है, परिणामस्वरूप उसके स्वास्थ्य तथा क्षमता का हास होता है । इसके अतिरिक्त कार्य–दशाएं भी अनुकूल नहीं होती है । इन परिस्थितियों में उसे अपने जीवन एवं स्वास्थ्य की रक्षा तथा कार्य की आदर्श दशाओं की मांग करने का पूरा अधिकार है ।

श्रम एक स्वतंत्र तथा व्यापक अवधारणा है। श्रम जीविका का साधन नहीं बल्कि मनुष्य की सतर्कता है । समाज तथा व्यक्ति का समस्त मानवीय प्रयास श्रम के अंतर्गत उन सब समर्थ व्यक्तियों को रखा जाना चाहिए जिसके द्वारा देश की श्रम शक्ति का निर्माण होता है ।

श्रमिक अपनी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक व्यक्तित्व का प्रयोग करके नई रीतियों को खोज करके उत्पादन की प्रक्रिया को जन्म देता है एवं आर्थिक विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करता है । किसी भी देश के प्राकृतिक संसाधन यदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, लेकिन यदि उस देश की श्रम शक्ति कुशल नहीं है तो वह देश अपना विकास नहीं कर सकता है । अतः श्रम वह शक्ति है, जो किसी राष्ट्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि खदान श्रमिकों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की क्या परिस्थितियाँ हैं तथा सरकार के द्वारा इनके जीवन स्तर में सुधार के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं ।

संदर्भ :

1. मध्यप्रदेश, बालाघाट जिला गजेटियर,1998
2. डॉ, कैलाश सोडाणी (1993) असंगठित श्रमिक एवं कानून, शिवा पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स उदयपुर (भारत)
3. डॉ, एस. सी. सक्सेना – श्रम समस्याएं एवं सामाजिक सुरक्षा, पब्लिकेशन मेरठ (भारत)
4. जनगणनास्त्रोत 2011 के अनुसार प्राप्त जानकारी
5. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जिला बालाघाट (मध्यप्रदेश)
6. वीरेन्द्र सिंह गहरवार, संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्व शोध संस्थान बालाघाट (मध्यप्रदेश)

आचार, विचार और संभाषण

1.**सन्दीप कुमार** शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
2..**डॉ. दिनेश सिंघल**, प्राध्यापक,वाणिज्य, शासकीय कालिदास कन्या महाविद्यालय उज्जैन

ईश्वर की अनेक रचनाओं में से यह जगत् सर्वश्रेष्ठ जगत् है और इस जगत् की यदि कोई सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जाए तो वह है – मानव। यूँ तो प्रकृति की प्रत्येक रचना श्रेष्ठ एवं अद्वितीय है। इसके बावजूद मनुष्य इन सबमें बेजोड एवं अतुलनीय है क्योंकि मानव ही वह प्राणी है जो अपनी विवेकशीलता एवं तार्किक शक्ति का प्रयोग कर प्रकृति को भी अपने लाभ या उपयोग अनुसार प्रयोग कर सकता है। प्रकृति मानवरूप में ही स्वयं को सर्वोत्कृष्ट रूप में व्यक्त करती है। महान यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने अपने 'प्रयोजनवादी विकासवाद'[1] में मनुष्य को निरपेक्ष आकार (ईश्वर) के बाद सर्वोच्च स्थान दिया है। वहीं चरम अनुभववाद के प्रणेता लाइब्नीज[2] ने भी अपनी पुस्तक "Monadology" मनुष्य को परम चिदणु (ईश्वर) के बाद आत्मचेतन चिदणु के रूप में स्वीकार किया है। यह भारतीय वेदांत दर्शन के पंचकोषों के विचार से भी सुसंगत है जिसमें अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष तथा आनन्दमय कोष के माध्यम से चेतना के पाँच स्तर निर्धारित किए गए हैं।

अरस्तू	लाइब्नीज	वेदांत दर्शन
• निरपेक्ष आकार	• परम चिदणु (ईश्वर)	• आनन्दमय कोष
• ग्रह, नक्षत्र	• आत्मचेतन चिदणु (मनुष्य)	• विज्ञानमय कोष
• मानव जगत्	• चेतन चिदणु (पशु)	• मनोमय कोष
• पशु जगत्	• उपचेतन चिदणु (वनस्पति)	• प्राणमय कोष
• वनस्पति जगत्	• अचेतन चिदणु (यांत्रिक जगत जैसे पत्थर)	• अन्नमय कोष
• यांत्रिक जगत्		
• निरपेक्ष जड़द्रव्य		

इस प्रकार मनुष्य चेतना के उस स्तर पर है जहाँ वह तार्किक बुद्धि का प्रयोग कर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक संबंधों को गहरे रूप से प्रभावित कर सकता है।

तार्किकता या वैचारिक शक्ति मानव को ईश्वर या प्रकृति का वरदान है। यह उत्कृष्ट देन मानव के अतिरिक्त अन्य प्राणियों में नहीं पाई जाती अथवा सीमित रूप से पाई जाती है जैसे–बन्दर, घोड़ा, गाय, व्हेल मछली आदि।

विचार ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को किसी कर्म को करने या न करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। यह समस्त जगत् विचार (Idea) का ही रूपान्तरण है। प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटों के अनुसार कोई भी वस्तु दो स्तर पर निर्मित होती है प्रथम विचारों के जगत् में (प्रत्यय जगत्) और द्वितीय वास्तविक जगत् (वस्तु जगत्–Empirical world) में। उदाहरण के लिए मेज का निर्माण पहले रचनाकार के मन में होता है उसके उपरांत लकड़ी की मेज के रूप में वस्तु रूप में उसकी उत्पत्ति होती है। विचार ही वह महान शक्ति व प्रेरणा स्त्रोत है जो व्यक्ति के जीवन की दशा व उसका भविष्य निर्धारित करते हैं। पाश्चात्य दार्शनिक हीगेल[3] ने अपने द्वद्वात्मक न्याय (Dialectical Method) के माध्यम से भी यही बताया है कि निरपेक्ष प्रत्यय (Absolute Idea) से ही इस विश्व का निर्माण हुआ है।

मानव की विकास यात्रा में उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि उसके द्वारा भाषा का आविष्कार है। भाषा और लिपि ही वह माध्यम है जिसके द्वारा विचारों का आदान–प्रदान संभव हो पाया। महान मनोविज्ञानी फ्रायड[4] के अनुसार अन्य किसी भी प्राणी में यह क्षमता नहीं है। यद्यपि अनेक प्राणी सीमित रूप में संवाद स्थापित कर लेते हैं किन्तु भाषा और लिपि का आविष्कार मानव ही कर पाया है। भाषा के माध्यम से ही समाज का ताना–बाना खड़ा हो पाया, विज्ञान का विकास एवं तमाम संरचनाओं के पीछे भाषा का विकास है। भाषा और लिपि का यह विकास बिना तार्किकता या विवेकशीलता के नहीं हो सकता है।

गुरूत्वाकर्षण के नियम के अनुसार ''आकर्षण का नियम''[5] (Law of Attraction) प्रकृति का एक महत्वपूर्ण नियम है। इसके अनुसार समान वस्तुएँ दूसरी समान वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इसी प्रकार जब हम एक विचार सोचते हैं तो हम उस जैसे अन्य विचारों को अपनी

ओर आकर्षित करते हैं। विचार (Thought) में एक चुंबकीय शक्ति होती है। रेडियो तरंगों के समान प्रत्येक विचार की एक फ्रीक्वेंसी होती है। जो उसी फ्रीक्वेंसी पर स्थित अन्य विचारों को आकर्षित करते हैं। जैसे रेडियो स्टेशन से प्रेसित तरंगे एक विशेष तरंगद्वैध्य एवं फ्रीक्वेंसी पर भेजी जाती है और जब हमारा रेडियो उस फ्रीक्वेंसी पर सेट किया जाता है तो हमें संगीत सुनाई देता है, अन्यथा नहीं। इसी प्रकार हमारे आस–पास के वातावरण में अनेक विचारों एवं सकारात्मक–नकारात्मक उर्जा तरंगे हमेशा विद्यमान रहती है। किन्तु जब व्यक्ति की वैचारिक स्थिति या मानसिक स्थिति जैसी है, वैसे ही विचारों की एक श्रृंखला के रूप में सामने आती है। यदि व्यक्ति सुबह जागते समय सकारात्मक फ्रीक्वेंसी पर है तो वह पूरा दिन सकारात्मक विचार एवं चीजें घटित होती हुए अनुभव करेगा और यदि नकारात्मकता के साथ दिन शुरू करता है तो नकारात्मक या अप्रिय घटनाएं पूरे दिन उसको अनुभव होती रहेगी। इसका कारण है यही 'आकर्षण का नियम'। जब हमारे मन में विचार आते हैं तो वे ब्रह्माण्ड में पहुँचते हैं और चुंबक की तरह उसी फ्रीक्वेंसी वाली सारी चीजों को आकर्षित करते हैं। प्रत्येक भेजी गई चीज आप तक लौटकर अवश्य आती है, चाहे वह वैचारिक रूप में हो या भौतिक रूप में। ब्रह्माण्ड एक वर्तुल है जिसमें हम जो भेजते हैं वही हमें वापस मिलता है।

हमारे वर्तमान विचार ही हमारे भावी जीवन का निर्माण कर रहे हैं। हम जिसके बारे में सबसे ज्यादा सोचते हैं या जिस चीज पर सबसे ज्यादा ध्यान केन्द्रित करते हैं वह हमारी जिन्दगी में वस्तु रूप में प्रकट हो जाता है। उदाहरणार्थ – यदि कोई कार्य प्रारम्भ करने के समय हमारे मन में असफलता या नकारात्मक विचार आने लग जाते हैं तो वह कार्य अपने वांछित परिणति तक न पहुँच कर असफल हो ही जाता है। उसके मार्ग में अनेक ऐसी रूकावटें खड़ी हो जाती हैं जो उसे असफल होने को बाध्य करती हैं। इस प्रकार विचारों में वस्तु रूप में प्रकट होने की महान शक्ति विद्यमान है।

आचरण या व्यवहार विचारों का क्रियात्मक स्वरूप ही तो है। विज्ञान के आधार 'कारण–कार्य नियम' (Causation effect relation) के अनुसार कुछ भी अकारण नहीं है चाहे वह भौतिक जगत् हो या मानसिक जगत्। प्रत्येक घटना का कोई कारण अवश्य होता है। फ्रायड के अनुसार मनुष्य की कोई भी गतिविधि या उसके आचरण का प्रत्येक छोटे से छोटा कृत्य भी अकारण नहीं है। वह उसके विचार का ही प्रतिफल है और जो हमें अकारण मालूम होता है वह मनुष्य के अवचेतन मन (Sub coucious mind) में दबी हुई इच्छा या भावना होती है। उसी की परिणति हमारे कार्यों (Actions) में होती है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार ''विचार हमारे चिंतन को निर्धारित करते हैं, चिंतन कर्म को, कर्म आचरण को, आचरण चरित्र को और चरित्र व्यक्ति का भविष्य निर्धारित करता है।''[6] इस प्रकार विचार ही व्यक्ति के आचरण का मानदण्ड है। भारत की 'सामासिक संस्कृति' के पीछे उसका 'सर्वधर्म समभाव' एवं 'वसुधैव कुटम्बकम्' आदि विचार ही रहे हैं। जैन धर्म में अहिंसा, प्रेम आदि के पीछे तीर्थंकरों के पाँच व्रतों का ही आधार रहा है जिसे अणुव्रत–महाव्रत के रूप में जाना जाता है। जो निम्न हैं – सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य। जो व्यक्ति के वैयक्तिक एवं सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।

गाँधी जी ने राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में सत्याग्रह, अहिंसा जैसे मूल्यों से उसके स्वरूप को ही परिवर्तित कर उसे अहिंसात्मक बना दिया था। अरविंद घोष जैसे उग्र राष्ट्रवादी नेता को उनके विचारों ने ही एक संन्यासी और महान दार्शनिक के रूप में परिवर्तित कर दिया। मानव इतिहास के सबसे प्रभावशाली विचारक एवं दार्शनिक कार्ल मार्क्स ने अपने साम्यवादी विचारों (वैज्ञानिक समाजवाद) से विश्व इतिहास एवं राजनीति को नई दिशा प्रदान की। पूँजीवाद के विरूद्ध साम्यवादी क्रांति को जन्म दिया। अतः स्पष्ट है कि विचार ही व्यवहार को निर्धारित करते हैं।

संभाषण या संप्रेषण (communication) वह विधि है जिससे हम विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता मानव में अन्य सभी प्राणियों से अधिक है। मानव ने भाषा और लिपि का आविष्कार करके संप्रेषण को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया।

एक प्रभावी संभाषण या संप्रेषण के लिए विचारों में एक स्पष्टता, परिपक्वता एवं प्रभावशीलता अत्यंत आवश्यक है। इतिहास ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा पड़ा है जिन्होंने अपने प्रभावी भाषणों से जनमत को गहरे रूप में प्रभावित किया। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने सिंगापुर से अपने रेडियो उद्बोधन में नारा दिया था – ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।'' ''दिल्ली चलो''[7]। गाँधी जी ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में ''करो या मरो''[8] का मूलमंत्र दिया। जिसने भारतीय आन्दोलन को एक नया शिखर प्रदान किया। बंकिमचंद्र चटर्जी के 'वंदे मातरम्' भगतसिंह का नारा ''इंकलाब जिंदाबाद'' क्रांतिकारियों में जोश भरने एवं प्रेरणा देने के लिए पर्याप्त थे।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मन तानाशाह एडॉल्फ हिटलर के भाषणों में वह अद्भुत शक्ति थी जिसने जर्मनी जैसे पराजित और कमजोर राष्ट्र को एक विश्वशक्ति के रूप में बदल कर रख दिया। मार्टिन लूथर किंग जुनियर के "I have a dream today"[9] भाषण ने अमेरिका में रंगभेद के विरूद्ध एक शक्ति प्रदान की।

इस प्रकार संभाषण या वैचारिक अभिव्यक्ति भी पूरे समाज को गहरे तक प्रभावित कर सकती है गाँधी जी यद्यपि भाषण कला में उतने कुशल नहीं थे दूसरे शब्दों में वाक्पुट नहीं थे किन्तु उनके विचारों में एवं उनके आचरण में वह प्रभावोत्पादक शक्ति थी जिसके कारण युवा, किसान,

मजदूर, व्यापारी, महिलाएँ, विद्यार्थी, लेखक, सरकारी–नौकर अपना–अपना काम छोड़कर राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति जीवन में सकारात्मकता एवं सामंजस्य चाहता है तो उसे सबसे पहले मूलकारण विचारों पर नियंत्रण करना पड़ेगा। सकारात्मक एवं प्रगतिशील विचार ही उसे जीवन में मानसिक शांति एवं भौतिक समृद्धि प्रदान कर सकते है और नकारात्मक विचार उसे पतन की ओर ले जाएंगे। उसी प्रकार यदि एक राष्ट्र अपने नागरिकों में खुशहाली एवं समृद्धि चाहता है और भौतिक रूप से संवृद्धि की अपेक्षा रखता है तो उसे अपने नागरिकों और विशेषकर युवाओं के वैचारिक चिंतन को सकारात्मक एवं प्रगतिशील बनाना होगा। अन्यथा माओवाद, अलगाववाद, धार्मिक असहिष्णुता जैसे विकार हमारे राष्ट्र के विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेंगे। हमें न केवल अपने व्यक्तिगत विकास के लिए अपितु समस्त प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करनी चाहिए ऋग्वेद में भी उल्लेख है–

''सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे संतु निरामया,

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कचिदुःखभाग्भवेत।।''[10]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

(1) उपाध्याय, डॉ. हरिशंकर, ''पाश्चात्य दर्शन का उद्भव एवं विकास''पृष्ठ संख्या–61
(2) उपाध्याय, डॉ.हरिशंकर, ''पाश्चात्य दर्शन का उद्भव एवं विकास''पृष्ठ संख्या–160–161
(3) शर्मा, डॉ. चन्द्रधर, ''पाश्चात्य दर्शन''
(4) फ्रायड, सिग्मंड, ''मनोविश्लेषण'' राजपाल एडं संस–2009
(5) Whittaker, S., "Secret Attraction" - the Montreal Gazetteer, 2007
(6) स्वामी विवेकानन्द – उक्ति
(7) चन्द्रा, बिपिन, ''आधुनिक भारत का इतिहास'', ओरियंट ब्लेक्स्वान, 2009
(8) चन्द्रा, बिपिन, ''आधुनिक भारत का इतिहास'', ओरियंट ब्लेक्स्वान, 2009
(9) The Dream : Martin Luther King, Jr., and the speach that inspired a nation. New York - Harper Collins, page no. 177.
(10) उपनिषद, वृहदारण्यक– 1.4.14

महिला आरक्षण नीति के अंतर्गत मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक स्थिति का अध्ययन (म.प्र. के सिवनी जिले की बरघाट, केवलारी तहसील के विशेष संदर्भ में)

डॉ निखत खानसहा. प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, बालाघाट

प्रस्तावना :– महिलायें समाज की आधार शीला है, राष्ट्र के विकास में महिलायें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महिलाओं के बिना इस संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती। महिला आरक्षण इंदौर की सबसे ज्वलंत समस्या है। महिलाओं की राजनैतिक, सामाजिक स्थिति और उन्हें आरक्षण की आवश्यकता को देखते हुए उन्हें विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। महिला आरक्षण के संबंध में तर्क है कि भारतीय नागरिकों का एक वर्ग (महिला) जो सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक तथा अन्य मानवीय मापदण्डों पर पिछड़ा हुआ है को आरक्षण प्रदान किया जाना चाहिय। महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार दिलाने व समाज में उन्हें पुरूषों के बराबर अधिकार दिलाने के लिये महिला आरक्षण आवश्यक है। महिला आरक्षण का मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :

(1)मुस्लिम महिलाओं की शैक्षणिक व आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।

(2) महिला आरक्षण नीति का मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

(3) मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि :

अध्ययन क्षेत्र : शोध कार्य हेतु मध्यप्रदेश के सिवनी जिले की बरघाट, केवलारी तहसील का चयन किया गया है।

अध्ययन का समग्र : मध्यप्रदेश के सिवनी जिले की बरघाट, केवलारी तहसील के मुस्लिम परिवारों की महिलाओं को अध्ययन के समग्र के रूप में लिया गया है।

अध्ययन की इकाई : सिवनी जिले के बरघाट, केवलारी तहसील की मुस्लिम महिला उत्तरदाताओं में से प्रत्येक परिवार की एक मुस्लिम महिला उत्तरदाता अध्ययन की इकाई है।

निदर्शन विधि : शोध कार्य के अंतर्गत शोध की प्रकृत्ति, उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

समंक एकत्रित करने के स्त्रोत :

प्राथमिक समंको का संकलन : मुस्लिम महिला उत्तरदाता से प्रत्यक्ष सम्पर्क कर उनसे जानकारी हासिल की गई है। अनुसंधान क्षेत्र का प्रत्यक्ष निरीक्षण व उत्तरदाताओं से सामूहिक चर्चा, साक्षात्कार लेकर अनुसूची भरी गई है।

द्वितीयक समंको का संकलन : जनगणना पुस्तिका, सरकारी प्रतिवेदन, द्वितीयक स्त्रोत जिसमें मुस्लिम महिलाओं से संबंधित साहित्य का अध्ययन, पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, जनपद पंचायत कार्यालय से प्रकाशित एवं अप्रकाशित सामग्री आदि के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गयी है ।

उत्तरदाताओं की शिक्षा संबंधी जानकारी

क्र.	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	निरक्षर	06	12
2.	प्राथमिक	10	20
3.	माध्यमिक	24	48
4.	हाईस्कूल	07	14
5.	हायरसेकण्डरी	03	06
	योग	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है, 12 प्रतिशत मुस्लिम महिला उत्तरदाता अशिक्षित, प्राथमिक 20 प्रतिशत, माध्यमिक 48 प्रतिशत, हाईस्कूल 14 प्रतिशत व हायर सेकण्डरी 6 प्रतिशत शिक्षा प्राप्त करने वाली उत्तरदाता पायी गयी है।

उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय

क्र.	परिवार की मासिक आय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	1000	03	06
2.	3000	20	40
3.	5000	18	36
4.	5000 से अधिक	09	18
	योग	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है, 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 1000 है, जबकि 40 प्रतिशत परिवारों की आय 3000, 36 प्रतिशत परिवारों की वार्षिक आय 5000 व 18 प्रतिशत परिवारों की वार्शिक आय 5000

से अधिक है। सर्वेक्षण में पाया गया कि अधिकांश परिवार की आय 3000 रूपये तक है।

महिला आरक्षण से स्त्रियों की राजनैतिक दशा में सुधार संबंधी जानकारी

क्र.	स्त्रियों की दशा में सुधार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	38	76
2.	नहीं	12	24
	योग	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है, 76 प्रतिशत मुस्लिम महिला उत्तरदाताओं का कहना है महिला आरक्षण से मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक स्थिति में सुधार हुआ है, जबकि 24 प्रतिशत का कहना है कि नहीं हुआ है।

उत्तरदाता के चुनाव में भागीदारी संबंधी जानकारी

क्र.	चुनाव में भागीदारी	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सरपंच	04	08
2.	पंच	40	80
3.	पार्षद	05	10
4.	अन्य	01	02
	योग	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है, 8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सरपंच पद, 80 प्रतिशत ने पंच व 10 प्रतिशत ने पार्षद व 2 प्रतिशत अन्य पद के लिए चुनाव लड़ा है।

निष्कर्ष :

1. अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 48 प्रतिशत मुस्लिम महिला उत्तरदाताओं ने माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की है, जबकि सबसे कम प्रतिशत हायर संकण्डरी शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं का है।

2. अध्ययन के दौरान सर्वेक्षण क्षेत्र में पाया गया कि 3000 रू. मासिक आय प्राप्त करने वाली मुस्लिम
महिलाओं के परिवारों का प्रतिशत अधिक है व सबसे कम प्रतिशत 1000 रू. मासिक आय प्राप्त करने वाले परिवार है।

3. 76 प्रतिशत मुस्लिम उत्तरदाताओं का कहना है कि महिला आरक्षण से उनकी राजनैतिक स्थिति में सुधार हुआ है, जबकि 24 प्रतिशत का कहना है सुधार नहीं हुआ है।

4. सर्वेक्षण में पाया गया कि पंच पद के लिए चुनाव लड़ने वाली मुस्लिम उत्तरदाताओं का प्रतिशत सर्वाधिक है, जबकि अन्य पद के लिए चुनाव लड़ने वालो का प्रतिशत सबसे कम है।

सुझाव :मुस्लिम महिलाओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे उनमें आत्मविश्वास वस्वनिर्णय लेने की भावना जागृत होगी। गांव में मुस्लिम महिलाओं को उनके अधिकारों एवं कानूनी प्रावधानों के बारे में जानकारी देनी चाहिए। मुस्लिम महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा संख्या में राजनीति में प्रवेश के लिए जागरूक करना चाहिए। सरकार द्वारा मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए ताकि उनका पिछड़ापन समाप्त हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. अहमद, नसीन (2003) ''वुमेन इन इस्लाम'', ए.पी.एच. पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. प्रसाद, अवध (1998) ''गांवो में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन'', रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
3. मिश्रा, शिला (1989) ''महिलाओं की राजनीतिक क्रियाशीलता'' उप्पल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. धावन, हरिमोहन ''महिला आरक्षण और भारतीय समाज'', रावत पब्लिकेशन, दिल्ली।
5. झुनझुनवाला, मधु भारत (1999) ''महिला आरक्षण'' जनवाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. जनगणना पुस्तिका 2001।
7. सिवनी जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2001।
8. डॉ. के.के. भार्मा (2009) ''भारत में पंचायतीराज'', विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

Environmetal Degradatio Due to Solid Waste in Jabalpur City Theme Human intervention in Environment

DR. (SMT) Swati Agnihotri Guest Lecturer Dept. of Geography R.D.V.V. Jabalpur

Introduction: About Jabalpur cityStudy area – Jabalpur city is located in the heart of his country having seen fabulous development in pre-Independence ear. It is located at 23 30" 45' North of latitude and 80 19 53 "East longitude. The Municipal Corporation of Jabalpur (MCJ) covers an area 106.19 sq. Km. The population with in the MCJ limit as per 2011 census is above 20 lakh. Jabalpur lies on the banks of the Narmada river and Spread over the plain of its tributaries Hira, Gaur, ken and Sone nadi, the topography of Jabalpur is unique the city is surrounded by low rocky ad barren hillocks-karia pather hills on the northeast, sita pahad and khadari hills towards the east and madan mahal hills and rock outcrops towards the southwest the entire area o city is hilly with slope differing I grade from 2 to 30 percent.

1. Means of solid waste: there are two types of waste material (a) solid waste (b) liquid wasteSolid waste material means that material which cannot dissolve in water, but liquid material can dissolve in water.

2. Source of solid waste in JBP city: The primary sources of solid waste in Jabalpur City are local households, commercial establishments, hotels, restaurants, and hospitals. The total quantity of waste gens per day is in the order of 411 tons ate the rate of 432 gpcd. In the absence of significant to related activity, there is no significant seasonal variation in the quantity of waste generated MCJ is responsible for collection, transportation and disposal of all solid waste generated in the except the untreated bio-medical waste and hazardous industrial waste, which is the responsibility of respective generators. MCJ has a network of community-level waste collection points, the majority of which are in the form of open grounds. The Corporation organizes the collection and transportation through a team of its own conservancy workers and a fleet of vehicles and dumper-places. The Corporation has also privatized waste collection and a transportation activity is some wards of the city. The waste collected is disposed at dumping yard on the outskirts of the city without any treatment. A number of rag pickers make their livelihood by salvaging recyclable waste from collection points and dump yards. The Health Department of the Corporation is vested with the responsibility of day-today solid waste collection and disposal. The estimated quantity of waste collected and disposed is about 330 tons per day- a collection performance of about 70 per cent.

2.1 Quantity of Waste Generated: There are no recent estimates of the waste generation levels in Jabalpur. A study carried out by the National Environment and Energy Research Institute (NEERI), Government of India, for Jabalpur in 1973, estimated solid waste generation rate at about 300 grams per capita per day (gpcd). Another detailed study for "Energy Recovery from Urban Municipal and Industrial Waste in Jabalpur", carried out by the Ministry of Non-Conventional Energy Sources (MNES), Government of India in 1997 estimated the waste generation rate as about 346 gpcd. This indicates an average annual growth is waste generation rate by about 4 gpcd (increase by 100 gpcd over a period of 25 years- 1973to 1997).Assuming an growth of 4 gpcd in the per capita of waste generation, the current (2005) rate of waste generation works out to 432 gpcd, and the total waste generated would amount to 411 tons per day (at the rate of 432 grams per capita per day for a population of 9,51,469) In addition, about 10 tos of dairy waste is estimated to be generated from the several dairy farms in the city. This waste, mainly in the form of dung is consumed locally as fuel and does not enter the solid waste management system.

Table : Estimation of Quantity of Waste Generated in MCJ

Sl.	Description	Rate of Waste Generation grams per capita per day (gpcd)
1.	Rate of waste generation in 1973 (NEERI Study)	300
2.	Rate of waste	400

	generation in 1997 (MNES Study)	
3.	Increase in waste generation rate (1973 to 1997)	100
4.	Average annual increase in rate of waste generation	4
5.	Estimated current (2005) rate of waste generation	432
6.	Total waste generated by current (2001) population of 9,51,469 @ gpcd	411 Ton

About 56 per cent of the waste is generated from households (domestic waste), followed hotels, restaurants and other commercial establishments which together account for over 25per capita of the MNES study carried out in 1997 is presented in Table 5.17

Table : Solid Waste Generated in Jabalpur City

Sl.	Source Category	Quantity of Waste Generated (tons per day)			
		1997 (as per MNES Report)	2005	2015	Percentage
1.	Domestic (Households)	190	229.37	268.74	23.15882
2.	Hotels and Res.	42	50.86	59.72	5.211765
3.	Shops, Offices & Comm Est	44	52.93	61.86	5.252941
4.	Markets	31	37.36	43.72	3.741176
5.	Gardens, Open Spaces & Str lt	19	22.83	26.66	2.252941
6.	Hospitals, Clinics, other Health-Care	4	5.19	6.38	0.7
7.	Construction Sites	10	12.46	14.92	1.447059
	Total	340	411	482	41.7647

2.2 Constituents of Municipal Waste: Table 5.18 presents the principal constituents of solid waste based on samples collected from the waste collection points and tested, as part of the MNES study. Above 60 per cent of the waste collected is fermentable. The calorific value of the waste collected ranges from 846 to 990 kilocalories per kg. the average density of the domestic waste is about 362 kg per m3, while at the aggregate level, including waste from all sources, the density is about 465 kg per m3.

Table : Constituents of Municipal Solid Waste

Constituent	source				
	Households	Hotel & Restaurants	Commercial Establishement	Offices	Collection Points
		Percentage of Total Waste			
Fermentable matter	56.69	53.36	11.70	4.70	60.34
Rags	2.87	3.66	8.80		1.932.14
Paper	4.04	11.21	43.69	61.64	4.18
Plastics	2.27	8.64	10.30	8.91	1.32
Metal	0.38	1.80	2.50		2.502.18
Glass	0.42	2.62	1.52		1.570.12
Wood, Rubber, leather	2.30	4.49	7.24		2.202.18
Stone, Ash, Silt, etc.	30.90	5.76	12.11	16.47	29.54
Miscellaneous	2.13	8.14	2.04		6.790.20
Average Density, kg/m3	362	-	-	-	465

Source : Indo US Fire Project

2.3 Current Practices of Solid Waste Management: The Health Department of the Municipal Corporation is responsible for the collection and disposal of solid waste within the Corporation limits. Headed by a Health officer, the operations are managed by 5 Chief senior sanitary inspectors, 7 senior sanitary inspectors and about 1,700 conservancy workers. The entire Corporation area is divided into 8 zones (with

jurisdictions similar to the administrative zones), each comprising 6 to 7 wards. Figure 5.4 presents the organization of solid waste management zones in the city. A senior sanitary inspector heads each zone and is of 1102 kms. Table 6.3 presents the salient features of the various sanitary zones of Jabalpur. The collection operations are organized in two shifts, one in the morning commencing at 7 a.m. and the other in the afternoon commencing at 2 p.m. In each shift, the sanitary inspector of the division takes the attendance of the conservancy workers and assigns them the areas of waste collection. Generally, the important areas of the city are attended in the morning shift and the interior streets, including drain cleaning are attended in the afternoon shift.

The solid waste management process may be classified under the following stages:

1. Waste storage and segresation;
2. Primary and secondary collect
3.Waste processing and disposal; and
4. Reuse and recycling.

supported by sanitary supervisors. Each zone is again divided into 6 to 7 blocks or sectors comprising 3 to 4 beats covering the entire road length

2.4 Waste Storage & Segregation: There is no organized practice of waste storage and segregation at source. Only a few and large hotels segregate and store the waste on their premises. As is typical in most Indian city is the waste is generally dumped by the generators in local dustbins, wherever provided or on roadsides and in open spaces. The only segregation is carried out by rag pickers from the prin collection points – the local dustbins and garbage heaps on the roadsides and in open spaces.

2.5 Primary Collection and Secondary Collection: Primary (collection from source or roadside dustbin/retail points) and secondary collection (collection from designated community-level/bulk points) arrangements in Jabalpur not distinct from one another-they generally overlap.

Table : Primary & Secondary Waste Collection Points

Sl.	Category	Number	Existing situation
1.	Open area	97	Ground level, unpaved area
2.	Concrete rings	100	With rectangular opening for manual removal
3.	Dumper-placer4 containers	335	4.5 m3/7m3 size in unpaved area
4.	1.0 m 3 Containers	150	On unpaved area

A. Primary Collection: There are very few organized/ appropriately equipped, primary collection points in the city. These primary collection npoints are in the form (of concrete) cylindrical dustbins provided on the roadsides. As a result, households and other waste generators dump their solid waste at street corners and in local open spaces. These points. The predominant mode of primary collection is by way of street sweeping. The Corporation has commenced primary door-to-door collection in one ward of the town (Bhavani Prasad Ward), wherein the waste is collected from individual wheelbarrows and containerized handcarts. At several locations, the waste fr5om the primary collection points is directly loaded (manually) into the Corporation's tractors/trucks and transported to the disposal site.

B. Secondary Collection: The Corporation has provided about 335 dumper-placer containers (7.0 cum capacity and 4.5 cum capacity) at various locations in the city-meant to serve the purpose of secondary collection points. At eight locations, open grounds are being used as secondary collection points. Such points are in the following areas: 1.Nowarganj; 2.CPTS; 3.Latkai Ka Padav; 4.Tilak Mandi 5. Gol Bazar; 6."Cherital; 7. Char Khamba; and 8. Srinath ki Tallaiya.

The waste collected from the primary collection points and transported using wheel barrows and handcarts is transferred to the secondary collection points by the municipal conservancy workers. From the secondary collection points, the waste is transported to the waste disposal site at Ranital. Dumper-placer vehicles are used to transport the dumper-placer containers, while the waste from the open/unorganized secondary collection points is transported using tractors and trucks-the waste from the ground is loaded into the vehicles manually and with the help of JCB loaders.

C. Privatization of Waste Collection: Waste collection and transportation operations in zones 3rd and 4th organizations (NGO) in solid waste management has

been lacking in Jabalpur. There is a complete lack of awareness among the citizens on how they could contribute towards effective management of solid waste-in activities of primary collection, segregation at source, waste minimization, etc.

D. Community Participation and NGO Involvement: The active involvement of the community and non-governmental organization (NGO) in solid waste management has been lacking in Jabalpur. There is complete lack of awareness among the citizens on how they could contribute towards effective management of solid-in activities of primary collection, segregation at source, waste minimization, etc.

There have been some initiative, though, by "Hamara Jablapur" ("Our Jabalpur"), an NGO, in association with the Corporation, which has taken up the task of promoting waste storage segregation at source and door-to-door collection. This is being attempted in one municipal was (Bhavani Prasad Ward) on a pilot basis, and will be replicated in other parts of the city in a manner. Also, one of the JDA colonies has come forward with a proposal to organize a community level, vermi-composting unit for local disposal of solid waste as well.

2.6 Processing and Disposal : There is no disposal of solid waste in Jabalpur. Most of the waste collection dumped in a crude manner in a large water body called 'Ranital' located within the city. Local adjacent to the scavengers' colony, the site receive around 200 tons of waste every day and marked by slum settlements on one side and water on the other side.The waste dumped at this site is spread uniformly by means of a JCB excavator, so as to was for further disposal. However, during monsoon, dumping is impossible at this side due flooding. The waste is therefore disposed in several low-lying areas in and around the city.

2.7 Reuse and Recycling: Rag picking and recycling activities are predominant in Jabalpur, though operating in informal market. The Corporation, during a recent survey, identified around 119 rag pickers and I recycling depots. The rage pickers scavenge the waste from the primary and secondary collection points, as well as from the disposal site, sort their collections and sell them to middlemen running to recycling depots. Most of the recycling depots are located near the present disposal site at Ranital Table 5.21 presents the zone-wise number of rag pickers and recycling depots as identified from the survey. However, a rough estimate based on discussions with the rage pickers and depot own indicates that there could be around 3,000 to 5,000 rage pickers involved in this activity.Inquiries with the depot owners reveal that their procurement price for recyclable waste is 0.75/kg for paper, Rs 1.0/kg for plastic. Recyclable waste collected exported to major recycling units at Indore, Nagpur and Delhi.

Table : Inventory of Rag Pickers and Collection Deports in MCJ

Sl.	Zone No.	Rag Pickers	Collection Depots
		Numbers	
1.	Zone 1	19	5
2.	Zone 2	14	9
3.	Zone 3	24	17
4.	Zone 4	0	8
5.	Zone 5	4	16
6.	Zone 6	12	51
7.	Zone 7	12	18
8.	Zone 8	0	4

Source : Municipal Corporation of Jabalpur

2.8 Vehicles for Solid Waste Collection & Transportation: (A) Vehicles Fleet – The Corporation owns 57 vehicles for different activities of solid waste management. Of these, 41 are meant for the collection and transport of waste from the collection points to the disposal site. There are 9 JCB loaders, meant for loading waste from open secondary collection points-one for each of the eight zones and one spare. Six vehicles, and one excavator is employed at the disposal site for spreading the waste disposal. Table 5.22 presents the details of vehicles engaged for solid waste management.

Table : Summary of Vehicle Utilization for Solid Waste Management

Month	Number of Vehicles Operated			
	Maximum	Average	Maximum	Average

Municipal Vehichels	26	21	4.10	3.86
September	26	22	4.20	3.89
October	25	20	4.00	3.72
November	25.67	21	4.10	3.82
Average Private Vehicles	7	6	-	4.09
September	7	6	-	4.26
November	7	6	-	4.52
Average	7.00	6	-	4.29

Source: Municipal Corporation of Jabalpur

(C) Maintenance of Vehicles: All the vehicles, including the vehicles meant for solid waste management, are maintained at the Corporation's workshop, which is equipped to carry out routine maintenance and minor repairs. The workshop has no facilities to conduct major repairs, especially for special vehicles with hydraulic system. Repairs of these vehicles are often to authorized service centers or the manufacturers.

2.9 Estimation of Waste Collection: Municipal vehicles involved in manual or mechanical loading of waste from collection points make an average of about 3 trips per day to the disposal site, while the dumperplacers carry out at least 4 trips per dya. The private contractors' vehicles carry out 4 trips per day on an average. Table 5.22 presents the estimation of the vehicle capacity adequacy. Based on the capacity of the vehicles and the number of trips, the capacity of the vehicles engaged in solid waste collection and transportation works out to about 625.50 cum per day, or 291 tons per day, assuming the average density of the solid waste at 465kg/cum- as measured from samples at the collection points. This works out to a vehicle capacity adequacy ratio of about 70 per cent (of the 411 tons per day of waste generated). However, at any point of time, at least 25 per cent of municipal vehicles are not in use,

Conclusion :

SOLIDWASTED MANAGEMENT OF JABALPUR CITY: The solid waste produced in the town is of different components at different area. The town is industrially backward. No big industrial activity makes the town comparatively cleaners the other such town heaving industrial setup. The solid waste produced throughout should have a nice collection system. It should be properly equipped and designed. This is the duty of the municipal corporation which lacks in it due to shortage of funds to buy the proper places marked by corporation for lifting. It is a normal practice to throw the waste at nearest open space or nearest drain. It makes the routine lifting impossible. The machinery and vehicle available with Municipal

Corporation is not sufficient for daily lifting of the waste and dumping it to trenching grounds. This is a common practice which cause pollution and large emission go Greenhouse gases. It is highly dangerous and cause hazards for the people living nearby the trenching grounds. At the trenching ground the foul gases are produced in large quantities which are full of viruses and other pathogens. No hospital of the town has any system of separately the hazardous and non-hazardous waste at the collection level.

Reference :

1. Solid waste Management in class 1 cities in India report of the committee constituted by the Hon. Supreme Court of India (March)
2. Jabalpur Master Plan 2005 (JDA)
3. Jabalpur District Gazetteer 1909 to 1965
4. Dr. Swati Mishra (2001) thesis- "Jabalpur Urban development & Environmental Degradation

भारत में पर्यटन उद्योग से आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन

डॉ. देवेन्द्र विश्वकर्मा, सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, जबलपुर

भारत का पर्यटन क्षेत्र एक ऊंची छलांग लगाने के मुहाने पर खड़ा है। उपरोक्त तमाम सहउत्पाद अवसंरचना क्षेत्र से जुड़े हैं और अवसंरचना विकास पर मौजूदा सरकार का जोर भी है। ऐसे में बेहतर कल की उम्मीद तो की ही जा सकती है। किसी पर्यटन स्थल के अनुभवों को खुशनुमा बनाने में बुनियादी ढांचा का क्या महत्व है, इसे सबसे पहले स्मिथ (1994) ने रेखांकित किया। उसने कहा कि सेवाओं का बुनियादी ढांचा और पर्यटन स्थल के व्यापक आर्थिक वातावरण उसकी वास्तविक दशा के केंद्र में है। उसने इस बात पर भी जोर दिया कि किसी पर्यटन स्थल में स्तर, इस्तेमाल और बुनियादी ढ़ांचे और तकनीक की कमी साफ तौर पर दृष्टिगत होती है और वो किसी पर्यटक के पर्यटन अनुभव के लिए एक निर्णयकारी तत्व है। अन्य जिन लोगों के उसके विचारों को समर्थन किया उनमें से थे– चॉय (1992), बुहारी (2000), बुहारी (2000) और क्राउच और चिची (2000)। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कुल मिलाकर किसी पर्यटक का किसी पर्यटन स्थल के बारे में दृष्टिकोण इस बात से बनता है कि स्थल की यात्रा करने के बाद उसके मन में वहां के बुनियादी ढांचे की कैसी छवि बनती है। और ऐसे में बुनियादी ढांचा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

एक आर्थिक उत्पाद के रूप में पर्यटन स्थल को तुलनात्मक और प्रतिस्पर्धात्मक संदर्भ में बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। आकृति– 1 में, जो कि क्रॉंउच और रिचे (1999) के पूर्वलेखन से लिया गया है, वह किसी पर्यटक स्थल की प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित करने वाली वैश्विक तस्वीर को प्रस्तुत करता है। उस संदर्भ में लेखकों का कहना है कि कारक परिस्थितियां किसी पर्यटन स्थल के आकर्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

मुख्य आकर्षण और सहायक तत्वों के अधीन हरेक तत्व को वर्गीकृत किया गया है। दरअसल, पर्यटन स्थल की सामान्य बुनियादी ढांचा सेवा वर्ग में सबसे महत्वपूर्ण कारक है। पर्यटन सार्वजनिक सुविधाएं और बुनियादी ढ़ांचे पर अत्यधिक निर्भर करता है। बिना सड़क, एयरपोर्ट, बंदरगाह, बिजली, सीवेज और पेयजल सुविधा के पर्यटन की योजना कभी संभव नहीं हो सकती। इसलिए बुनियादी ढ़ांचे पर अत्यधिक निर्भर करता है। बिना सड़क, एयरपोर्ट, बदंरगाह, बिजली, सीवेज और पेयजल सुविधा के पर्यटन की योजना कभी संभव नहीं हो सकती। इसलिए बुनियादी ढांचा पर्यटन के लिए एक आवश्यक तत्व है और ऊपर के जो कारक हैं वो मूल तत्व हैं जो किसी पर्यटन केंद्र तक पर्यटकों को खींच लाते हैं। सामान्यतः बुनियादी ढ़ांचे को किसी महत्वपूर्ण पुस्तक में स्थान नहीं मिला है क्योंकि यह उम्मीद की जाती है कि वहां पर इसका होना अनिवार्य है और इसे एक आकर्षण के रूप में प्रचारित नहीं किया जाता। स्मिथ (1904) और क्राउच और रिचे (1999) अपने लखने में बुनियादी ढ़ांचे के महत्व को काफी जगह देते हैं। और सैद्धांतिक तौर पर अच्छे तरीके से व्याख्यायित करते हैं।

भारत पर बुनियादी ढ़ांचा और पर्यटन

पर्यटन का बुनियादी ढांचा परिवहन, समाजिक और पर्यावरण बुनियादी ढ़ांचे का आपूर्तिकर्ता है जो क्षेत्रीय स्तर पर एकाकार हो जाती है और किसी पर्यटन स्थल को एक ठोस रूप देती है। उसमें शामिल है–

- परिवहन ढ़ांचा– जो अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू पर्यटकों को पर्यटन स्थल तक पहुंचाते हैं और जिसमें एयरपोर्ट, प्रमुख सड़कें और रेल परिवहन शामिल हैं।
- समाजिक बुनियादी ढ़ांचा–इसमें होटल या विश्राम–गृह में कमरों की संख्या और अन्य ढ़ांचे शामिल हैं जैसे प्रदर्शनी, समारोह और अन्य सेवाएं जो पर्यटकों को लुभा सकती हैं। इसमें होटल, सभागार, स्टेडियम, गैलरी और अन्य पर्यटक दर्शनीय स्थल शामिल हैं।
- पर्यावरण बुनियादी ढांचा– जिसमें नेशनल पार्क, समुद्री पार्क, अभयारण्य और यात्रियों के लिए सुविधाएं शामिल हैं।
- समन्वयकारी ढांचा–जिसमें क्षेत्रीय, राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय पर्यटन संस्थाओं का एकत्रित जाल शामिल हैं जो इन पर्यटक स्थलों और केंद्रों को सही तरीके से दुनिया भर में प्रचारित करने का काम करते हैं।

पर्यटन बुनियादी ढ़ांचे और उसके उत्पाद की आपूर्ति श्रृंखला को आकृति एक में दर्शाया गया है। यह पर्यटन ढांचा प्राथमिक रूप से निजी पूंजी द्वारा तैयार किया जाता है जिसमें निजी क्षेत्र सकल पर्यटन निवेश का 78 फीसदी निवेश करता है। अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट और रहने–ठहरने की व्यवस्था निजी बुनियादी ढांचा है। रेल, सड़क और बदंरगाह आमतौर पर सार्वजनित बुनियादी ढांचा होता है। सम्मेलन कक्ष या नेशनल पार्क जैसे बुनियादी ढ़ांचे सार्वजनिक ढ़ांचे होते हैं जो बाज़ार की असफलता या समाजिक–पर्यावरण संबंधी आपत्तियों की वजह से दिए जाते हैं। नीचे की तस्वीर में पर्यटन से संबंधित ढ़ांचे और पर्यटन उत्पाद और बुनियादी ढ़ांचे से हुई निर्यात आय के बारे में जानकारी दी गई है।

भारत शायद दुनिया का एकमात्र देश है जो अलग–अलग तरह की पर्यटन की संभावनाओं को प्रस्तुत करता है। इसमें पहाड़ी, जंगल, इतिहास, एडवेंचर, चिकित्सा पर्यटन (जिसमें आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा के अन्य रूप भी शामिल हैं), आध्यात्मिक पर्यटन, समुद्र तटीय पर्यटन (पूरव के देशों में भारत के पास सबसे लंबा समुद्र तट हैं) आदि–आदि। ऐसा कहा जाता है कि भारत में जो पर्यटन स्थल हैं वो किसी भी अन्य देश के पर्यटन स्थल से ज्यादा विविध हैं। भारत के हरेक क्षेत्र में अपनी एक खास संस्कृति है, उत्सव हैं, वेशभूषा है और ऐतिहासिक धरोहर हैं। सन् नब्बे के दशक की शुरूआत से भारतीय पर्यटन उद्योग इतना अच्छा नहीं था। हालांकि भारतीय अर्थव्यवस्था मंद होती रही है लेकिन यह सभी भी शेष दुनिया से ज्यादा तरक्की कर रही है। विकास दर 5 फीसदी से ज्यादा और आम जनता की आमदनी बढ़ने के साथ, बहुत सारे लोग देश के भीतर और बाहर भी यात्राओं पर जा रहे हैं। इससे पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिल रहा है। भारत में पर्यटन व्यवस्साय में असीम संभावना है और आनेवाले वर्षों में पर्यटन हमारी अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

फिर भी कई बाधाओं के बावजूद, पर्यटन व्यवसाय हमारे देश में लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने के मामले में दूसरा सबसे बड़ा स्त्रोत रहा है। सन् 2012 में पर्यटन ने सकल घरेलू उत्पाद में 6.6 फीसदी का योगदान दिया और 3 करोड़ 95 लाख रोजगार के अवसर पैदा किए। पिछले पांच वर्षों में घरेलू पर्यटकों की संख्या में 16 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है जबकि अगले दशक में इसमें 12 फीसदी के दर से वृद्धि की संभावना है। सन् 2013 के दौरान पर्यटन उद्योग ने अर्थव्यवस्था में 63.160 करोड़ रूपये का योगदान किया। हमारे देश में आनेवाले पयटकों में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या करीब 50 लाख है जबकि घरेलू पर्यटकों की संख्या 50 करोड़ से ऊपर है।

तालिका 1: भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमनः 2001–13

वर्ष	भारत में विदेशी पर्यटक	वार्षिक वृद्धि (%)
2001	2537282	–4.2
2002	2384364	–6.0
2003	2726214	14.4
2004	3457477	26.8
2005	3918610	13.3
2006	4447167	13.5
2007	5081504	14.3
2008	5282603	4.0
2009	5167699	–2.2
2010	5775692	11.8
2011	6309222	9.2
2012	6577745	4.3
2013	6967601	5.9

स्त्रोतः आव्रजन ब्यूरो, भारत सरकार

विकास की प्रवृत्ति बताती है कि भारतीय पर्यटक व्यवसाय सिर्फ विदेशी पर्यटकों के आगमन पर आधारित नहीं है जैसा कि अक्सर देखा जाता है कि वैश्विक हलचलों या विचलनों से इस उद्योग में बाधाएं आती रहती हैं। हालांकि घरेलू पर्यटक एक खास तरीके से अपनी रफ्तार में बढ़ता जा रहा है। भारत में मेले और उत्सव एक सतत चलने वाली घटना है। उत्तर भारत में होने वाले कुंभ और दक्षिण में होने वाले ओणम और महामस्तकाभिषेक हरेक साल ढ़ेर सारे पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं।

तालिका 2: भारत में घरेलू और विदेशी पर्यटक (2012–13)

क्र.	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	2012 (संख्या)		2013 (संख्या)		विकास दर (%)	
		घरेलू	विदेशी	घरेलू	विदेशी	घरेलू	विदेशी
1.	अंडमान–निकोबार द्वीप समूह	238669	17538	243703	14742	2.10	–15.94
2.	आंध्र प्रदेश	207217952	292822	152102150	223518	–26.60	–23.67
3.	अरूणाचल प्रदेश	132243	5135	125461	10846	–5.13	111.22
4.	असम	4511407	17543	4684527	17638	3.84	0.54
5.	बिहार	21447099	1096933	21588306	765835	0.66	–30.18

6.	चंडीगढ़	924589	34130	22801031	936922	1.33	17.56
7.	छत्तीसगढ़	15036530	4172	22801031	3886	51.64	–6.86
8.	दारर और नगर–हवेली	469213	1234	481618	1582	2.64	28.20
9.	दमन और दीव	803963	4607	819947	4814	1.99	4.49
10	दिल्ली	18495139	2345980	20215187	2301395	9.30	–1.90
11.	गोआ	2337499	450530	2629151	492322	12.48	9.28
12.	गुजरात	24379023	174150	27412517	198773	12.44	14.14
13.	हरयाणा	6799242	233002	7128027	228200	4.84	–0.06
14.	हिमाचल प्रदेश	15646048	500284	14715586	414249	–5.95	–17.20
15.	जम्मू–कश्मीर	12427122	78802	13642402	60845	9.78	–22.79
16.	झारखंड	20421016	31909	20511160	45995	0.44	44.14
17.	कर्नाटक	94052729	595359	98010140	636378	4.21	6.89
18.	केरल	10076854	793696	10857811	858143	7.75	8.12
19.	लक्ष्द्वीप	4417	580	4784	371	8.31	–3603
20.	मध्यप्रदेश	53197209	275930	63110709	280333	18.64	1.60
21.	महाराष्ट्र	74816051	2651889	82700556	4156343	10.54	56.73
22.	मणिपुर	134541	749	140673	1908	4.56	154.74
23.	मेघालय	680254	5313	691269	6773	1.62	27.48
24.	मिजोरम	64249	744	63377	800	–1.36	7.53
25.	नगालैंड	35915	2489	35638	3304	–0.77	32.74
26.	ओड़िशा	9052871	64719	9800135	66675	8.25	3.02
27.	पुडूचेरी	981714	52931	1000277	42624	1.89	–1947
28.	पंजाब	19056143	143805	21340888	204074	11.99	41.91
29.	राजस्थान	28611831	1451370	30298150	1437162	5.89	–0.98
30.	सिक्किम	558538	26489	576749	31698	3.26	19.66
31.	तमिलनाडू	184136840	3561740	244232487	3990490	32.64	12.04
32.	त्रिपुरा	361786	7840	359586	11853	–0.61	51.19
33.	उत्तरप्रदेश	168381276	1994495	226531091	2054420	34.53	3.00
34.	उत्तराखंड	26827329	124555	19941128	97683	–25.67	–21.57
35.	पश्चिम बंगाल	22730205	1219610	25547300	1245230	12.39	2.10
	कुल योग	**1045047536**	**18263074**	**1145280443**	**19951026**	**9.59**	**9.24**

स्त्रोतः पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, पर्यटन आंकड़े 2013

ऊपर की तालिका से यह स्पष्ट है कि संभावनाओं और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर होने के बावजूद बहुत सारे राज्य पर्यटकों को पर्याप्त संख्या में आकर्षित करने में नाकाम रहे हैं। इसके उदाहरण उत्तर–पूर्व के राज्य, लक्षद्वीप और छत्तीसगढ़ हैं। इसका कोई अन्य कारण नहीं– बल्कि पर्यटन ढांचो के विकास में कमी है। वर्ल्ड ट्रेवेल और टूरिज्म कांउसिल की एक रिपोर्ट कहती है कि पर्यटन से देश की अर्थव्यवस्था में होने वाला योगदान सन् 2014 में 7.3 फीसदी को दर से बढ़ेगा जो सामान्य अर्थव्यवस्था को 2.5 फीसदी की दर से पीछे छोड़ रहा होगा।

डेलॉइट ढाँचे की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय पर्यटन क्षेत्र सन् 2017 तक 42.8 अरब अमरीकी डॉलर की आय अर्जित करेगा। धीमी होती अर्थव्यवस्था, कमजोर मांग और सुरक्षा चिंताओं के बावजूद यह क्षेत्र इससे उबरने की जद्दोजहज कर रहा था और पर्यटन का विकास दर फिर भी हो ही रहा था। गहराती वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था का हाल ठीक–ठाक है और डेलॉइट की रिपोर्ट के मुताबिक अभी भी दुनिया की तेज अर्थव्यवस्थाओं में भारत का स्थान प्रमुख है। कुल मिलाकर इसका पैमाना बढ़ता जा रहा है। पर्यटकों की बढ़ती संख्या इस क्षेत्र में काम कर रहे अंशधारकों के राजस्व को बढ़ा रही है (होटल, टूर ऑपरेटर, एयरलाइन्स, शिपिंग लाईन्स आदि को) । इसका असर ज्यादा से ज्यादा होटल कमरों की बुकिंग पर पड़ेगा और उनका राजस्व बढ़ेगा। होटलों में औसत कमरों का किराया बढ़ा है और उनकी बुकिंग भी बढ़ी है।

इस तरह से भविष्य में इस क्षेत्र के तरक्की की संभावना है और यह उद्योग लंबे समय तक निवेश करने वालों के लिए बढ़िया निवेश का मौका प्रस्तुत कर रहा है। भारत में इस उद्योग की संभावनाओं को देखते हुए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय होटल श्रृंखलाएं तेजी से यहां का रूख कर रही हैं। भारत की भविष्य में मेडिकल टूरिज्म का काफी विकास होगा– ऐसी संभावना है और भारत इस अरबों के कारोबार में अपनी हिस्सेदारी जताने के लिये सुविधाओं में तेजी से बढ़ोतरी कर रहा है।

तालिका 3 : शीर्ष 15 देशों से विदेशी पर्यटकों का आगमन (2013)

(संख्या 10 लाख में और प्रतिशत हिस्सेदारी)

क्रम	मूल देश	संख्या और हिस्सेदारी
1.	अमरीका	1.085 (15.58 प्रतिशत)
2.	इंग्लैंड	0.809 (11.62 प्रतिशत)
3.	बंग्लादेश	0.525 (7.53 प्रतिशत)
4.	श्रीलंका	0.262 (3.77 प्रतिशत)
5.	रूसी संघ	0.259 (3.72 प्रतिशत)
6.	कनाडा	0.255 (3.66 प्रतिशत)
7.	जर्मनी	0.252 (3.62 प्रतिशत)
8.	फ्रांस	0.248 (3.56 प्रतिशत)
9.	मलेशिया	0243 (3.48 प्रतिशत)
10.	जापान	0.220 (3.16 प्रतिशत)
11.	ऑस्ट्रेलिया	0.219 (3.14 प्रतिशत)
12.	चीन	0.175 (2.51 प्रतिशत)
13.	सिंगापुर	0.143 (2.05 प्रतिशत)
14.	थाईलैंड	0.117 (1.68 प्रतिशत)
15.	नेपाल	0.144 (1.63 प्रतिशत)
16.	शीर्ष 10 देश	4.160 (59.70 प्रतिशत)
17.	शीर्ष 15 देश	4.927 (70.72 प्रतिशत)

स्त्रोतः पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, पर्यटन आंकड़े, 2013

तालिका 4: पर्यटन प्राप्तियां, रू. 10 लाख में (1972–2005)

	रूपये में शुल्क		अमरीकी डॉलर में शुल्क	
वर्ष	रू. करोड़	बदलाव*	$ 10 लाख	बदलाव*
2009	63700	4.5%	11136	–3.7%
2010	64889	20.8%	14193	27.6%
2011	77591	16.6%	16564	16.7%
2012	94487	21.8%	17737	7.1%
2013	107671	14.0%	18445	4.0%

स्त्रोतः पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, रिसर्च डिविजन, पर्यटन आंकड़े 2013 गत वर्ष की तुलना में

किसी भी प्रमुख पर्यटन स्थल पर रहने–ठहरने, परिवहन और मनोरंजन के साधन वहां के मुख्य कारक होते हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इन सुविधाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता तय करती है कि वे पर्यटकों को आकर्षित करने में मूल्यवान संपत्ति साबित होती है या नहीं। इस तरह की सुविधाओं को बढ़ावा देने की कोई भी ब्योरेवार सूचना पर ही बनानी चाहिए और उसमें भी वर्तमान ढ़ांचे पर प्रमुखता से विचार करने के साथ ही होना चाहिए।

हाल के समय में पर्यटन उद्योग में अचानक उछाल देखने को मिला। हर कोई सोच रहा था कि इस उछाल को कैसे टिकाऊ बनाया जाए। दरअसल, पर्यटन में राजस्व प्राप्तियां इतनी विशाल हैं (दरअसल यह एक हजार अरब डॉलर का उद्योग है) कि यह भारत को एक सबसे बड़े विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाले देशों में से एक का दर्जा दे देता है। और काफी रोजगार पैदा करता है।

इसके अलावा नेशनल हाईवे को भी चौड़ई के हिसाब से पारिभाषित किया गया है। आमतौर पर एक लेन की चौड़ई (अगर सिंगल लेन की सड़क है तो) 3.75 मीटर होती है और अगर कई लेन की सड़क है तो एक लेन की चौड़ाई 3.5 मीटर होती है। यह नेशनल हाईवे का हिसाब है। चौड़ाई के हिसाब से नेशनल हाईवे की लंबाई तालिका 7 में बजाई जा रही है–

तालिका 5 : भारत में होटल और कमरों की संख्या (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)

सन् 2013 में मान्यता प्राप्त होटलों और कमरों की उपलब्धता		
होटलों के प्रकार	होटलों की संख्या	कमरों की संख्या
वन स्टार	82	2086
टू स्टार	121	3154
थ्री स्टार	637	26617
फोर स्टार	111	7738
फाइव स्टार	85	10128
फाइव स्टार डीलक्स	106	21820
अपार्टमेंट होटल	2	249
टाइम शेयर रिजॉर्ट	1	31
हेरिटेज होटल	46	1322
बी एंड बी इस्टेब्शिमेंट	31	158
विश्रामगृह	4	61
अवर्गीकृत	30	1989

स्त्रोतः पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, विपणन शोध विभाग, पर्यटन के आंकड़े, 2013

तालिका 6: भारतीय सड़कें

नेशनल हाईवे/ एक्सप्रेसवे	65,590 किमी
स्टेट हाईवे	1,28,000 किमी
प्रमुख और अन्य जिला सड़के	4,70,000 किमी
ग्रामीण सड़कें	26,50,000 किमी

स्त्रोतः http://www.ibef.org/industry/roads-india.aspx

तलिका 7 : सड़कों का अनुपात

सिंगल लेन	32 प्रतिशत
डबल लेन/मध्यवर्ती लेन	56 प्रतिशत
चार/छह/आठ लेन	•

स्त्रोतः http://www.ibef.org/industry/roads-india.aspx

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत में अच्छी सड़के नहीं हैं। कुल सड़कों में मात्र 12 फीसदी ही विश्वस्तरीय हैं। यह अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने के हिसाब से बहुत कम है। पर्यटन उद्देश्यों के लिए पूरा यूरोप सड़क से यात्रा करना पसंद करता है, लेकिन सड़क से सफर करने के लिए भारतीयों को कई बार सोचना पड़ता है। इसके अलावा गलत तरीके से गाड़ी चलाना इस यात्रा को और भी खतरनाक बना देता है। दुनिया में होने वाले सड़क हादसों में भारत का स्थान काफी ऊंचा है।

तालिका 8 : भारत में रेल यातायात

गेज	लंबाई	रनिंग ट्रैक	कुल पटरी
ब्रॉड गेज (1.676 मी)	49,820	71,015	93,386
मीटर गेज (1,000 मी)	10,621	11,487	13,412
नैरो गेज (726/610 मिमी)	2,886	2,888	3,198

स्त्रोतः http://www.ibef.org/industry/roads-india.a किलोमीटर में

वहीं रेलमार्ग की बाते करें तो सकय पथ किमी का 28 फीसदी, रनिंग ट्रैक किमी का 39 फीसदी और सकल ट्रैक किमी का 41 फीसदी करीब विद्युतीकृत है। अगर भारत इस पर्यटन क्रांति का लाभ नहीं उठा पाता है तो इसका जिम्मेदार वह खुद होगा। थोड़े से मेहनत की जरूरत है, भारत छलांग लगा सकता है। ये बात सही है कि पर्यटन से जुड़े हर क्षेत्र में बुनियादी ढांचे की कमी दिख रही है चाहे वो एयरपोर्ट हो, रेलवे हो, सड़क हो, होटल में कमरों की संख्या हो, प्रशिक्षित मानव संसाधन हो, खरीददारी हो, आरामदायक सफर हो, मेडिकल टूरिज्म हो, पर्यटन शिक्षा हो या टिकाऊ विकास हो–हर जगह ढ़ांचे की कमी हैं।

पर्यटन उद्योग आंशिक रूप से अपने ढ़ांचे को समुन्नत कर सकता है और ऐसा करने के लिए उसे पर्यटन, कर, निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन, विदेशी निवेश के एकल खिड़की की विशेष व्यवस्था, जमीन की व्यवस्था, वित्तीय सहायता खासकर लंबे समय के कर्ज को कम ब्याज पर देने का इंतजाम, देश में विदेशी मुद्रा की अबाध व्यवस्था, नौकरशाहों के हस्तक्षेप को कम कर पेशेवर लोगों को शामिल करना और लालफीताशाही से मुक्ति जैसी व्यवस्थाओं पर जोर देना होगा। यहीं सही तरीका है और एक मात्र उपाय है जिससे हम पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं।

तालिका 9 : भारत के प्रमुख हवाई अड्डे

क्रम	क्षेत्र या राज्य	हवाई अड्डे का नाम	शहर	वर्ग
1	अंडमान–निकोबार	वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	पोर्ट ब्लेयर	चुंगी
2	आंध्र प्रदेश	विशाखापतनम् हवाई अड्डा	विशाखापट्टनम	चुंगी
3	असम	लोकप्रिय गोपीनाथ बारदोलाई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	गुआहाटी	चुंगी
4	बिहार	जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	पटना	चुंगी
5	बिहार	गया हवाई अड्डा	गया	चुंगी
6	छत्तीसगढ़	स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा	रायपुर	घरेलू
7	दमन–दीव	दीव हवाई अड्डा	दीव	घरेलू
8	दिल्ली	इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	अहमदाबाद	अंतर्राष्ट्रीय
9	गोआ	दाबोलिम हवाई अड्डा	पूरा राज्य	अंतर्राष्ट्रीय
10	गुजरात	सरदार वल्लभभाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	अहमदाबाद	अंतर्राष्ट्रीय
11	जम्मू–कश्मीर	श्रीनगर हवाई अड्डा	श्रीनगर	चुंगी
12	जम्मू–कश्मीर	जम्मू हवाई अड्डा	जम्मू	घरेलू
13	झारखंड	बिरसा मुंडा हवाई अड्डा	रांची	घरेलू
14	कर्नाटक	मेंगलोर हवाई अड्डा	मंगलोर	चुंगी
15	कर्नाटक	बेंगलुरू अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट्स (कैम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा)	बेंगलुरू	अंतर्राष्ट्रीय
16	केरल	त्रिवेंद्रम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	त्रिवेंदरम	अंतर्राष्ट्रीय
17	केरल	कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	कोचीन	अंतर्राष्ट्रीय
18	केरल	कालीकट अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	कालीकट	अंतर्राष्ट्रीय
19	लक्ष्यद्वीप	अगाती एयरोड्रोम	अगाटी	घरेलू

20	मध्यप्रदेश	राजा भोज हवाई अड्डा	भोपाल	चुंगी
21	मध्यप्रदेश	देवी अहिल्यावाई होल्कर हवाई अड्डा	इंदौर	घरेलू
22	महाराष्ट्र	छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	मुंबई	अंतर्राष्ट्रीय
23	महाराष्ट्र	पुणे हवाई अड्डा	पुणे	चुंगी
24	महाराष्ट्र	न्यू पूणे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	पुणे	भावी
25	महाराष्ट्र	शिरडी हवाई अड्डा	शिरडी	भावी
26	महाराष्ट्र	डॉ बाबा साहब अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	नागपुर	चुंगी
27	मणिपुर	तुलीहल हवाई अड्डा	इंफाल	घरेलू
28	मेघालय	शिलांग हवाई अड्डा	शिलांग	घरेलू
29	मिजोरम	लेंगपुइ हवाई अड्डा	आइजॉल	घरेलू
30	नगालैंड	दीमापुर हवाई अड्डा	दीमापुर	घरेलू
31	ओड़िशा	पटनायक हवाई अड्डा	भुवनेश्वर	घरेलू
32	पुड्डूचेरी	पड्डूचेरी हवाई अड्डा	पड्डूचेरी	घरेलू
33	पंजाब	श्री गुरू रामदास जी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	अमृतसर	अंतर्राष्ट्रीय
34	राजस्थान	जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	जयपुर	चुंगी
35	सिक्कम	पाक्योंग हवाई अड्डा	गंगटोक	भावी
36	तमिलनाडू	चेन्नई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	चेन्नई	अंतर्राष्ट्रीय
37	तमिलनाडू	त्रिचुरापल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	त्रिचरापल्ली	चुंगी
38	तेलंगाना	राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	हैदराबाद	अंतर्राष्ट्रीय
39	त्रिपुरा	अगरतल्ला हवाई अड्डा	अगरतल्ला	घरेलू
40	उत्तराखंड	जॉलीग्रांट हवाई अड्डा	देहरादून	घरेलू
41	उत्तर प्रदेश	ताज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	ग्रेटर नोएडा	भावी
42	उत्तरप्रदेश	वाराणसी हवाई अड्डा	वाराणासी	चुंगी
43	उत्तर प्रदेश	अमौसी हवाई अड्डा	लखनऊ	चुंगी
44	उत्तर प्रदेश	आगरा एयरफोर्श स्टेशन	आगरा	घरेलू
45	पश्चिम बंगाल	नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	कोलकाता	अंतर्राष्ट्रीय
46	पश्चिम बंगाल	बागडोगरा एयरपोर्ट	सिलीगुड़ी	चुंगी

स्त्रोतः http://www.ibef.org/industry/roads-india.aspx

असली चुनौती है ऐसे सर्किटों और चुनिंदा केंद्रों की पहचान करना जहां पर समेकित विकास किया जा सके जो लोकप्रिय भी हों क्योंकि ढांचागत विकास में वित्तीय कमी एक बड़ी बाधा होती है। इसलिए एक बहुत ही चुनिंदा तरीका कारगर साबित होता है। भारत में ढांचागत सुविधा के विकास में सिर्फ सुविधाओं का निर्माण करना ही समस्या नहीं है जैसा कि राष्ट्रीय उच्चपथ विकास कार्यक्रम, रेलवे या एयरपोर्ट जैसी महंगी सुविधाओं के विकास में देखा गया है। उतनी ही समस्या ये है कि आखिरी घड़ी में कोई समस्या आना खड़ी होती है, उसे सुलझाना जरूरी है उससे पहले कि वो अत्यधिक मुश्किल हो जाए।

बड़े स्तर की ''इंक्रेडिबल इंडिया'' (अतुल्य भारत) अभियान के बाद भी देश में पर्यटकों का उतना आगमन नहीं हो पाया है जितना कि एक महाद्वीपीय स्तर के देश में होना चाहिए था। इसका एक ही समाधान है कि हम अपने बुनियादी ढ़ांचे को ठीक करें–जब तक हम वैसा नहीं करते हमारे यहां 50–60 लाख से ज्यादा विदेशी पर्यटक नहीं आ पाएंगे। यह खुशी की बात है कि केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने सारे राज्यों को विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा बनाने के लिए दिशा–निर्देश जारी किए हैं। उस दिशा–निर्देश में कुछ बातें संकेत देती हैं कि सही दिशा में सही कदम उठा लिया गया है।

दिशा–निर्देशों की मुख्य बातें

- राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों को वास्तुविदों और संरक्षण और भूआकृति वास्तुविदों की नियुक्ति करनी चाहिए जिसमें नियमों का पालन किया गया हो और इसे अपने ही संसाधनों द्वारा वित्तपोषित किया जाना चाहिए।
- पर्यटन संबंधित परियोजनाओं के लिए राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को एकल खिड़की मंजूरी की सुविधा देनी चाहिए।
- मेगा डेस्टिनेशन प्रोजेक्ट या सर्किट की योजना को लागू करते समय राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को कोशिश करनी चाहिए कि इसे जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीनीकरण मिशन से तालमेल किया जाए।

नगरीय सार्वजनिक सुविधाएं

- राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को उच्च– गुणवत्ता वाले पर्यटक मानचित्रों, गाइड, सीडी, पोस्टर, पर्यटक कैलेंडर, साथ ले सकने योग्य मानचित्र

और भारत की विविधता से भरी गतिशील संस्कृति को दर्शाने वाले ग्राफिक प्रदर्शनियों का इंतजाम करना चाहिए।

- विस्तृत परियोजना रिपोर्ट में स्पष्ट करना चाहिए कि क्रियान्वयनकारी एजेंसी के पास पर्याप्त जमीन उपलब्ध है। अगर मंत्रालय द्वारा पारित परियोजना जमीन की कमी के कारण साल भर बाद तक शुरू नहीं हो पाई है, तो परियोजना वापस ले ली जाएगी और धनराशि या तो सरकार वापस ले लेगी या उसे दूसरे मद में नियोजित कर देगी।
- पर्यटक स्थलों पर जानेवाली सड़कों पर सड़क किनारे सार्वजनिक सुविधाएं हरेक 50 किमी पर होनी चाहिए।
- सड़क किनारे दिशा–निर्देश अंतर्राष्ट्रीय मानकों के हिसाब से हों (साइनेज के लिए वर्ल्ड टूरिज्म वेबसाइट)
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को अपने संसाधनों से ही मौजूदा पर्यटन सुविधाओं को विस्तार और मजबूत करने चाहिए।
- नियम संबंधी औपचारिकता पूरी करने के बाद राज्यों को यथासंभव संस्थानिक व्यवस्था करनी चाहिए ताकि उपुयक्त एजेंसी से इसका प्रबंधन किया जा सके।

निर्मित विरासत स्थल और संकेतक

- जहां तक संभव हो राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को विरासत पर्यटन स्थल के संरक्षण के लिए एक व्यापक संरक्षण मास्टर प्लान बनाना चाहिए जिसमें शोध, दस्तावेजीकरण, महत्व, क्षति आकलन, संरक्षण, प्रबंधन, पर्यटन बुनियादी ढांचा, जोखिम का आकलन, पर्यटन स्थल की व्याख्या, जीवन–सुरक्षा/प्राथमिक चिकित्सा और सामान्य सुरक्षा, सार्वभौम पहुंच, कचरा प्रबंधन, सामुदायिक विमर्श, लोगों से जुड़कर क्रियान्वयन की रणनीति और व्यवसायिक योजना आदि पर पूरा ध्यान दिया जाए।
- सड़क के किनारे या अन्यथा संकेतकों के लिए विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से संरक्षण और पर्यटन विकास योजनाओं हेतु ठोस वित्तीय और रखरखाव योजना हो।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को उचित संस्थानिक व्यवस्था करनी चाहिए ताकि परियोजनाओं को सही समय पर पूरा किया जा सके और पूरा होने के बाद उसका रखरखाव हो सके।
- परिचालन और रखरखाव के लिए सार्वजनिक–निजी भागीदारी को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

वातावरण के अनुकूल और स्वदेशी वास्तु

- प्रयास यह हो कि स्थानीय वातावरण के हिसाब से उपयुक्त और स्थान– विशेष के प्रति संवेदनशील पर्यावरण मित्रवत् वास्तु को बढ़ावा दिया जाए।
- स्थानीय डिजाइन के सिद्धातों पर जोर दिया जाए।
- कोशिश ये हो कि सभी पर्यटन कर्मचारियों के लिए क्षमता निर्माण की सुविधा हो–जिसमें स्थान, पर्यावरण और खास पर्यटन स्थल से संदर्भित विशेषताओं का ध्यान रखा जाए। इसे पर्यटन मंत्रालय से सीबीएसपी (यानी सेवा प्रदाताओं के लिए क्षमता निर्माण) योजना के तहत वित्तपोषित किया जा सकता है।

नगरीय भूदृश्य

- स्थानीय भूदृश्य में वहां की स्थानीयता झलकनी चाहिए, साथ ही स्थानीय सामग्रियों का इस्तेमाल हो।
- पौधों या वृक्षारोपण में स्थानीय और देसी पेड़–पौधों को प्रोत्साहन मिले।
- उचित पाया जाए तो विनिर्माण तकनीक में पारंपरिक तौर तरीकों को इस्तेमाल हो, उसका शोध हो और बढ़ावा मिले।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि:
- जहां तक संभव हो मौजूदा जमीन की संरचना को बरकरार रखते हुए न्यूनतम मिट्टीकरण का काम पुनर्स्थापित हो।
- बारिश के पानी का संरक्षण, भूजल संरक्षण, भूजल पुर्नजीवन और पानी की शून्य बर्बादी सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- सीमांकन के काम में उचित डिजायन का सहारा लिया जाना चाहिए जिसमें सौंदर्यबोध, सुरक्षा और लागत का ध्यान रखा जाना चाहिए। किसी खास योजना के लिए आबंटित राशि से 20 फीसदी से ज्यादा लागत नहीं आनी चाहिए।
- सौर–ऊर्जा से प्रकाश और नवीनीकृत ऊर्जा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- ठोस सामग्रियों का न्यूनतम इस्तेमाल हो।
- पानी की कमी वाले इलाके में कृत्रिम झरने/आदि का प्रयोग हतोत्साहित करना चाहिए
- जहां बिजली की कमी हो वहां विशाल प्रकाश व्यवस्था से बचाना चाहिए, हां सुरक्षा से कोई समझौता न हो।

- सुनिश्चित हो कि परियोजना के शुरू होने से पहले वहां पर जल स्त्रोत उपलब्ध हों ताकि सिंचाई और पेयजल की व्यवस्था उचित तरीके से हो सकें।
- पहुंच योग्य बुनियादी ढांचे को प्रोत्साहित किया जाए।
- अगले पांच साल के लिए रखरखाव की योजना और बजट तैयार किया जाए ताकि परियोजना को सतत रखा जा सके। इसे राज्य सरकार और केंद्रशासित प्रदेशों के द्वारा या पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के द्वारा वित्तपोषित किया जाना चाहिए।

विकसित किए गए जमीन पर बनें फूड क्राफ्ट संस्थान और होटल प्रबंधन संस्थान

दूसरी तरफ भारत अभी तक अपनी प्राथमिकता ही तय कर रहा है और कहीं न कहीं पर्यटन उसकी योजना में अभी तक पूरी तरह फिट नहीं हो पाया है। ज्यादा से ज्यादा लोकलुभावनकारी योजनाएं सामने आ रही हैं। जब प्रधानमंत्री नरेंन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने गुजरात में बुनियादी ढ़ांचे में काफी निवेश करवाया था जिसका नतीजा सबके सामने हैं।

- भविष्य के विस्तार के लिए इलाकों को चिह्नित किया जाए और अधिग्रहित किया जाए लेकिन किसी तरह के सभागार का निर्माण न हो।
- पूरे परिसर के मास्टर प्लान की योजना बने।
- सिर्फ जरूरी निर्माण के लिए ही परियोजना के लिए भूदृश्य अधिग्रहित किया जाए।

भारत का पर्यटन क्षेत्र एक ऊंची छलांग लगाने के मुहाने पर खड़ा है लेकिन भारत को समझना होगा कि कोई भी देश इसके लिए भारत का इंतजार नहीं करेगा। दुनिया के सारे देशों में इसके लिए गलाकाट होड़ मची है क्योंकि यह उनकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। चीन, मलेशिया, थाईलैंड और इंडोनेशिया जैसे देश पर्यटन ढांचे पर भारी रकम खर्च कर रहे हैं और अपने प्रया समें सफल भी हो रहे हैं लेकिन

अंत में कहने का लब्बोलुआव यहीं है कि सारे आकर्षण अर्थहीन हैं जब तक कि किसी पर्यटन स्थल तक पहुंच सुगम न हो। भारतीय योजनाकारों को आज न कल ये बात समझनी ही होगी। सड़क या रेलवे सिर्फ पर्यटकों को ही आकर्षित नहीं करते–भारत की अर्थव्यवस्था को भी इससे बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा।

संदर्भः

1. कोहेन ई. 1979: फेनोमेनोलॉजी ऑफ टूरिस्ट एक्सपेरियंस
2. क्राउच जी आई और रिची, जे आर बी, 1999: टूरिज्म कम्पेटीटिवनेश एंड सोशल प्रोस्पेरिटी, जर्नल ऑफ बिजनेस रिसर्च, 44 (3): 137–152
3. क्राउच जी आई रिची, जे आर बी, 2000: द कम्पेटिटव डेस्टिनेशन–ए सस्टेनोबिलिटी पर्स्पेक्टिव। टूरिज्म मनेजमेंटः 21
4. गीयरिंग, सी.ई. 1974: इस्टेब्लिशिंग ए मेजर ऑफ टूरिस्टिक एट्रैक्टिवनेश। जर्नल ऑफ ट्रेवेल रिसर्च 12:1–8
5. गुन, सी.ए. ईडीएस, 1988: टूरिज्म प्लानिंग (दूसरा संस्करण), न्यूयॉर्कः टेलर एंड फ्रेंसिस
6. कौल, आर.एन, ईडीएस, 1985: डायनामिक्स ऑफ टूरिज्मः ए ट्रियोलॉजी (वॉल्यूम–111) ट्रांसपोर्टेशन एंड मार्केटिंग, नई दिल्ली
7. किम एल, क्राम्पटन जे, एल, बोथा, पी.2000: रिस्पॉडिंग टु कॉम्पेटिशनः ए स्ट्रेटेजी फॉर सन/लॉस्ट सिटी, साउथ अफ्रीका टूरिज्म मनेजमेंट. 21 (41)
8. एलआईएम, सी, 1997: रिव्यू ऑफ इनटरनेशनल टूरिज्म डिमांड मॉडेल्स, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 24 (4): 835–849
9. मेकेलरॉय जे, एल. 2003: स्मॉल आइलैंड टूरिस्ट इकनॉमीज अक्रॉस द लाइफ साइकिल, अंतर्राष्ट्रीय कंफ्रेंस के लिए तैयार पर्चा, बियोंड मिराबः द पॉलिटिकल इकनॉमी ऑफ स्मॉल आइलैंड इन द 2ILV सेंचुरी, स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स एंड फिनांस, विक्टोरिया यूनिवर्सिटी, वेलिंगटन न्यूजीलैंड, 23–25 फरवरी 2004
10. एमओ, हॉवर्ड एंड हैविज 1993: टेस्टिंग एक टूरिस्ट रोल टाइपोलॉजी, एन्नल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 20:319–335

वैश्वीकरण और आधुनिक मोक्ष चिंतन

डॉ. आशा रानी, हिंदी एवं भाषाविज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

भारत में आत्म–साक्षात्कार को दर्शन कहते हैं. ''दर्शनशास्त्र वह संश्लेषण की ग्राह्यता है, जिसमें सृष्टि के सब रूप अन्तर्निहित हों।''(राधाकृष्णनन, एस., द फिलोसोफी आफ रबीन्द्रनाथ टैगोर, गुड कम्पेनियनस, बरोडा, 1961, पृ. 101) दर्शनशास्त्र सत्य के दर्शन की ओर ले जाता है। जीव और ब्रह्म का संबंध विषयक सिद्धांत दर्शनशास्त्र का केंद्रीय विचार रहा है. जबकि कला का उद्देश्य उच्च आदर्श की ओर प्रेरित करना है। दर्शन का उद्देश्य सत्य के ज्ञान के साथ–साथ देशकाल के अनुसार उसे नवीन जामा पहनाना भी होता है। देशकाल बदल जाने से प्राचीन सत्यों को नवीन आवरण में उपस्थित किया जाता है। प्राचीन ग्रंथ वर्तमान समस्याओं को पूरी तरह से हल नहीं कर सकते। भारतीय विचारक स्वयं सदैव गतिशील और जिज्ञासु रहे हैं। उनके प्रति सम्मान दिखलाने का यह मतलब नहीं कि हम आंखे बंद करके उनकी बात को परम सत्य मानते रहे, बल्कि सदैव आगे बढ़ने की उनकी परंपरा को आगे बढ़ाए चलना ही उनके प्रति सबसे अधिक उपयुक्त श्रद्धांजलि है।

मेरे विचार से प्रगति का अर्थ पूर्णतया नवीन सृष्टि ही नहीं, बल्कि अतीत का पुनर्जीवन, सृजनात्मक पुनर्निर्माण और उसे समय–समाज–सापेक्ष व्यवस्थित करना भी एक तरह से नए प्रगति पथ पर चलना होता है।

आध्यात्मिक मान्यता के अनुसार यदि हम जीव का परब्रह्म से या मूलतत्त्व से संबंध की चर्चा करें तो यह वेदकालीन ऋषियों के समय से ही अनुसंधान का विषय रहा है. चूंकि इसी संबंध के आधार पर ही मनुष्य के चरम पुरुषार्थ मोक्ष की निष्पत्ति होती है, जो भारतीय दर्शन की मूल समस्या रही अर्थात् दुःख निवृत्ति के उपाय के अनुसंधान से ही भारतीय दर्शन का उदय हुआ. 'हेय हेयहेतु, हान तथा हानोपाय' (उपनिषद दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण– रामचंन्द्र दत्ता त्रेयरानाडे, पृ. 67), के कारण मोक्ष एक समस्या रही है. इस प्रकार चिन्तन की परिपक्वता तथा पराकाष्ठा, हमें तत्त्वमसि के सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाले वेदान्त में ही मिलता हैं, जहां जीव और ब्रह्म के संबंध को प्रतिष्ठापित किया गया है. कहा जाता है कि जीवात्मा को ब्रह्म के साथ अपने एकत्व को पहचानने में सहायक सिद्ध होना, यही मोक्ष है–

'संसारहेतुनिवृतिसाधनब्रह्मात्मैकत्वविद्याप्रतिपत्तये'

' शंकरभाष्य

उपनिषदों के अनुसार जो कुछ विभु में है वही अणु में भी है. इसी को 'तत्त्वमसि', 'अयमात्मा ब्रह्म', 'सर्वम् खल्विदं ब्रह्म' आदि महावाक्यों से समझाया गया है. ब्रह्म सर्वव्यापक है. वह आत्मा है. आत्मा और ब्रह्म दोनों ही पूर्ण हैं. आत्मा का ज्ञान होने से मनुष्य जन्म–मरण से मुक्त हो जाता हे. आत्मा परम तत्व, अमृत, स्वयं सिद्ध और स्वयं ज्योति स्वरूप है. कठोपनिषद के अनुसार आत्मा की ज्योति से ही हर वस्तु प्रकाशित है। माण्डूक्य उपनिषद के अनुसार ब्रह्म ही समस्त जीवों का अन्तर्यामी आत्मा है. आत्मा साक्षी और ज्ञानस्वरूप है. आत्म का ज्ञान ज्ञाता का ज्ञान है।

उपनिषदों के अनुसार जगत् ब्रह्म की अभिव्यक्ति है. वह ब्रह्म से उत्पन्न होता है, उसी से पलता है और उसी में समा जाता है. ब्रह्म ही वस्तु जगत् के नाम रूप का कारण है. देशकाल प्रकृति इत्यादि सभी में ब्रह्म है. जल, पृथ्वी, वायु, अगन और आकाश आदि पंच महाभूत, प्राण, इन्द्रियां और मन सभी ब्रह्म से निकलते हैं. सृष्टि के पहले एक आत्मा ही था. उसी से पंचभूत उत्पन्न हुए. सृष्टि के अंत में जगत् ब्रह्म में ही समा जाता है।

जीव का अर्थ होता है, 'जो श्वास लेता हो'(शंकर का अद्वैत वेदान्त, डॉ. वीणा झा पृ.122) आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्म पारमार्थिक सत्य है, किन्तु जब वह शरीर, इन्द्रिय, मन इत्यादि उपाधियों से सीमित होता है तब वह जीव कहलाता है. अर्थात् सबसे मुक्त होते ही वह ब्रह्मरूप में पुनः आ जाता है. यही तो मुक्ति भी है. जीव ही संसार के कर्मों में भाग लेता है, और अपने को कर्त्ता मानता है, अतः सुख–दुःख का भागी बनता है. ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वह अपने शुद्ध रूप अर्थात् ब्रह्म को भूल जाता है. एक ही आत्मा विभिन्न जीवों के रूप में दिखाई देता है. सांख्य दर्शन जीव के इसी अनेकता को वास्तविक मान लेता है, जो कि नितांत असंगत है. जीव आत्मा का वह रूप है, जो देह से मुक्त है. उसके तीन शरीर माने गए है. वे हैं स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर. यह जीव ही, शरीर और प्राण का आधार स्वरूप है।

वेदान्त दर्शन की इस व्याख्या से स्पष्ट है कि आध्यात्मशास्त्रीय, ज्ञानशास्त्रीय और मूल्यशास्त्रीय दृष्टि से परम तत्त्व एक ही है. इस प्रकार ब्रह्म, आत्मा, मोक्ष एक ही तत्त्व के विभिन्न नाम हैं.नई पीढ़ी के भारतीय दार्शनिकों के तत्त्व विद्या की अवधारणा में भी आत्मा, ब्रह्म और जगत् को एक ही का भिन्न–भिन्न नाम बताया गया है. वास्तव में उपनिषदों से लेकर आज तक यह वेदान्त, तत्त्व–विद्या नास्तिक और दार्शनिक संप्रदायों को छोड़कर सभी भारतीय आस्तिक दर्शनों का मूल आधार रही है. ब्लूमफील्ड ने अपनी पुस्तक में ठीक ही लिखा है, ''नास्तिक बौद्ध मत को लेकर हिन्दू विचारों का कोई भी महत्त्वपूर्ण रूप ऐसा नही है, जिसका मूल उपनिषद में न हो.'' ब्लूमफील्ड का यह विचार केवल भाड्दर्शनों के विषय में ही नहीं बल्कि समकालीन भारतीय दर्शन पर भी लागू होता है. दयानंद, विवेकानंद, रवीन्द्र, अरविन्द, गांधी, राधाकृ" णनन आदि सभी ने उन्हीं

बातों का उल्लेख अपने आध्यात्मशास्त्र में किया है, जिनका वर्णन पूर्व में ही वेदान्त दर्शन में किया जा चुका है।

शंकराचार्य ने भी मोक्ष संबंधी सिद्धांत इसी जीव ब्रह्मैक्यवाद से निःसृत माना है. उनका मानना है कि ब्रह्म जान लेने से ही बंधनों से मुक्ति मिल जाती है इस मुक्तावस्था में ही आत्मानंद की प्राप्ति होती है. आचार्य चित्सुख अनवच्छिन्नानंद प्राप्ति को ही मोक्ष नाम से अभिहित करते हैं. आत्मा स्वरूपतः चिदानन्दधन है. उनका कहना है कि आत्मा का यह रूप अविद्या की आवरण शक्ति के द्वारा बाधित होने के कारण नहीं जाना जाता. यदि जीव ब्रह्म नहीं है तो वह बंधनमुक्त हो ही नहीं सकता क्योंकि ब्रह्म तथा जीव ये दो तत्त्व हो गए. ये एक–दूसरे में पुनः सीमित हो जाते हैं. अतः कोई भी द्वैतवादी किसी वस्तु को परम कहने का अधिकारी हो ही नहीं सकता. जब दो वस्तु हैं तो परम मुक्त या परम स्वतंत्र नहीं हो सकते क्योंकि एक–दूसरे के द्वारा यह परतंत्र हो जाते हैं, मुक्त तो तभी हो सकते हैं जब आत्मा शरीर में प्रवेश करके अपनी स्वतंत्र सत्ता को स्थापित करे. इस प्रकार आत्मा या जीव की स्वतंत्रता एवं मुक्ति के विचार अलग–अलग समय अलग–अलग रीति से व्याख्यायित हो रहा है।

इस प्रकार यदि कोई शरीर में जीव का जन्म होता है तो यह अपने क्रिया–कलापों के द्वारा पाप या पुण्य अर्जित करता है. और ईश्वरीय आदेश पूरा होते ही उसका जन्म पूरा हो जाता है और जीव उस शरीर से निकल जाता है अर्थात् जीव तो उसी समय मुक्त हो जाता है और शरीर के सारे बंधन से आजाद हो जाता है. और कार्यानुसार दुबारा किसी शरीर में प्रवेश करके एक नए जीवन की सृष्टि में भाग लेता है. जीव भी एक तरह से क्रियाशील वस्तु है जिसका उपयोग करके ईश्वर एक जीवन को गतिशीलता प्रदान करते हैं. इसी में जीव का महत्त्व है. और इसी से जीव एक बहुत ही उपयोगी वस्तु प्रमाणित होता है. लेकिन यदि इस जीव को जब किसी शरीर में प्रवेश कराया जाता है और शरीरधारी केवल तपस्या–ध्यानमग्न होकर ही पूरा जीवन गुजार दे तथा मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रयास करे कि हमें जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाए तो जीव जैसे ही उस शरीर से निकलता है वह तो मुक्त हो जाता है लेकिन यदि यह चाहा जाए कि जीव दुबारा किसी शरीर में प्रवेश करके नए जीवन का संचार न करे तो मैं समझती हूं इस चरम पुरुषार्थ में, एक बहुत ही उपयोगी वस्तु का निष्क्रिय करना ही कहा जाएगा. निष्क्रिय होना अर्थात् जड़ होना, तो फिर जीव व चेतना की पहचान कहां रह गई. और इसी प्रकार यदि सब जीव मोक्ष ही पा जाएंगे तो ईश्वरीय सत्ता का क्या होगा....? मृत्युलोक की अवधारणा ही खतरे में पड़ जाएगी. एक कहावत है कि 'सब गदहा स्वर्ग चले जाएंगे तो लादी कौन ढोएगा.'।

सिक्के के दूसरे पहलू पर नजर डाले कि सदियों से लोग मोक्ष की कल्पना कर रहे हैं, कितने ही ऋषि–महात्मा, उदात्त गुणी ने इस धरती पर जन्म लेकर केवल पुण्य ही अर्जित किया तो क्या वे सब मोक्ष को प्राप्त होते गए. यदि हां तो आज धरती पर इतनी जनसंख्या कैसे बढ़ रही है. क्या ईश्वर जीव का भी द्विगुणन करके वृद्धि कर रहे हैं .....? यदि नही तो वही सारे जीव ही तो है जो एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में प्रवेश करके नए जीवन–चक्र को पूरा करने की धारणा को प्रमाणित कर रहे हैं. वेद–उपनिषद में ही वर्णित है कि चौसठ हजार योनियों का चक्र है जिसमें जीव गतिशील होकर मानव रूप में जन्म लेता है यह भी बड़े पुण्य से ही संभव है तो क्या आज जो जनसंख्या दिखाई पड़ रही है सभी ने बड़े पुण्य अर्जित किए है. यदि हां तो आज पाप का बोलबाला क्यों है.....? जहां तक मैं समझती हूं हर जन्म का अपना एक सिद्धांत है शरीर धारण करना और जीवन चक्र को पूरा करना विज्ञान की भाषा में कहा जाए तो पीढ़ी– एकान्तरण की क्रिया है. इसीलिए एक शरीर को छोड़ने के पश्चात् जीव को उस शरीर द्वारा किए गए कृत्य स्मृति में नहीं रहते हैं जैसा कि गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि ''तुम्हें पता होना चाहिए कि हमलोगों के कई जन्म हो चुके हैं लेकिन यह माया ही है जो कि मुझे याद है और तुम्हें नहीं'।.

आधुनिक जगत् की हम बात करें तो मनुष्य के चारों ओर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याएं इतनी जटिल हो गईं हैं कि कोई भी व्यक्ति ठोस यथार्थ से कुछ समय के लिए भी आंखे हटाना नहीं चाहता. आज यह निर्विवाद है कि हमारा उद्देश्य जगत् की व्याख्या करने के साथ–साथ उसको बदलना भी आना चाहिए. आज का मानव किसी ऐसी व्याख्या को सुनने के लिए तैयार नहीं जिसमें उसे स्वप्न, मिथ्या या माया ठहराया गया हो उसे तो समस्याओं का सुलझाव ही चाहिए. जो कि युग चेतक श्री अरविन्द के लीला सिद्धांत में दिखाई पड़ता है. जिसके आधार पर ही शंकर के मायावाद की आलोचना की गई।

यहां मोक्ष की अवधारणा आधुनिक चेतना के अनुरूप नहीं है. आज इस प्रकार के आदर्श को जीवन का लक्ष्य मानना स्वार्थी कहा गया है. इसलिए अरविन्द ने सार्वभौम मोक्ष की अवधारणा को प्रस्तुत किया। जिसमें समाज सुधार और मानव चेतना का विकास हो. इसी भावना को रवीन्द्रनाथ टैगोर ने और गांधी जी ने प्रयोग करते हुए आजीवन देश की सेवा की. विवेकानंद जैसे सन्यासी का उद्देश्य भी धार्मिक जागृति से पहले समाज–सुधार था. उनका मानना था कि युवाओं को गीता पाठ से पूर्व फुटबाल खेलकर शक्तिशाली बनना चाहिए, धर्म उसके बाद आता है. उनका मानना था कि देश की स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए. राधाकृष्णनन ने मानवता की पृष्ठभूमि में ही राष्ट्रवाद को उपस्थित करने की प्रेरणा देते रहे. उनका यह चिन्तन केवल भारतवर्ष के लिए ही नहीं समस्त विश्व के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

इस प्रकार देश और काल दोनों ही नाम रूपात्मक प्रपंच की तरह व्यावहारिक हैं. मायाजन्य प्रपंच का विद्या के द्वारा विनाश हो जाने पर व्यावहारिक देश और काल भी समाप्त हो जाते हैं. किसी देश में वर्तमान प्रपंचरूप

वस्तु के नष्ट हो जाने पर उस वस्तु से संबंधित देशादि का व्यवहार भी नहीं रहता. अतः देश एवं कालकृत भेद मायिक है. यह अविद्या ही बंधन में डालती है–

''विद्या चाविद्यां च यस्तद् वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।''

अविद्या के कारण ही विनाशी को अविनाशी मान लेते हैं.शाश्वत आत्मा को जानने के लिए इन्दियों को जानना जरूरी नहीं. केवल अस्तित्व की गहराई में उतरना पड़ता है कबीर दास ने भी कहा है –

''जिन ढूंढा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ।
जो बौरा डुबन डरा रहा किनारे बैठ।।''

आध्यात्म की दृष्टि से भी अवलोकन करें तो श्रुति में कहा गया है कि स्वर्गलोक के ऊपर जो महः, जनः, तपः और सत्य लोक है वे और उनका आधार घुलोक को अम्भः नाम से जाना जाता है. उसके नीचे जो अन्तरिक्षलोक भुवलोक है, जिसमें सूर्य, चन्द्र और तारागण किरणों वाले लोकविशेष हैं, उसके नीचे जो पृथ्वी लोक है, जिसको मृत्युलोक भी कहते हैं, और उसके नीचे पाताललोक, जिसे आपः भी कहा जाता है. इसी पृथ्वी पर ब्रह्म ने जल आदि पंचमहाभूतों से हिरण्यमय पुरुष को निकाला. पुरुष के शरीर में सर्वप्रथम अण्डे की भांति फूटकर मुख छिद्र निकला. मुख से वाक् इन्द्रिय उत्पन्न हुई और वाक् इन्द्रिय से उसका अधिष्ठातु देवता अग्नि उत्पन्न हुआ, फिर नासिका के दोनों छिद्र हुए, उनमें से प्राणवायु प्रकट हुआ और प्राणों से वायु देवता प्रकट हुए. तत्पश्चात् आंखों के दोनों छिद्र प्रकट हुए उनमें से नेत्र इन्द्रिय से उसका देवता सूर्य उत्पन्न हुआ. फिर कानों के दोनों छिद्र निकले उनमें से श्रोत्र इन्द्रिय प्रकट हुई और श्रोत्र इन्द्रिय से उसके देवता दिशाएं उत्पन्न हुईं. तब त्वचा का जन्म हुआ त्वचा से रोम उत्पन्न हुए, रोमों से औषधियां और वनस्पतियां बनीं. फिर हृदय प्रकट हुआ, हृदय से मन और मन से उसका अधिष्ठाता चन्द्रमा तैयार हुआ. तत्पश्चात् नाभि प्रकट हुई, नाभि से अपान वायु और अपानवायु से गुदा इन्द्रिय का अधिष्ठाता मृत्युदेवता उत्पन्न हुए (शंकर का अद्वैत वेदान्त, डॉ. वीणा झा, पृ.146–147)क्या इतने सबको निष्क्रिय करके मोक्ष की अवधारणा इस पृथ्वी पर स्वीकार्य है.....?

यदि मोक्ष के परंपरागत अर्थ को स्वीकार कर लिया जाए तो इसके लिए आत्मा की अमरता, ईश्वर या ब्रह्म का अस्तित्व आदि किसी तत्त्वमीमांसात्मक मान्यता का आधार लेने की आवश्यकता नहीं है। इसी अर्थ में मोक्ष को मानव–जीवन का चरम लक्ष्य माना जा सकता है। इसके लिए भी व्यक्ति को स्वयं प्रयास करना होगा, किन्तु सामाजिक प्राणी होने के नाते और आधुनिकता की इस दौड़ में जब देश के बीच की दूरियाँ खत्म हो गई हैं वैश्वीकरण का स्वरूप विकसित हो चुका है। ऐसे में दूसरे के दुःख–निवृति के लिए निरंतर प्रयत्न करना भी सभी प्राणी का कर्त्तव्य बन गया है। इस अनिवार्य कर्त्तव्य के पालन से व्यक्ति मोक्ष प्राप्ति के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। दूसरों को दुःख से मुक्त करके ही व्यक्ति आत्मकेंद्रित होने से बच सकता है और अपने उन संवेगों को नियंत्रित कर सकता है जो स्वयं उसके लिए और विश्व समाज के लिए हानिकारक है। इस प्रकार अपने निकृष्ट संवेगों को नियंत्रित करके दूसरों के दुःख का निराकरण करने के सतत् प्रयास में ही व्यक्ति का वास्तविक मोक्ष निहित है। मानव–जीवन के इसी महान आदर्श को गीता में 'स्थितप्रज्ञ' की संज्ञा दी गई है, जो सुख–दुःख, लाभ–हानि, जय–पराजय में समस्त भाव रखते हुए सदैव लोक कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहता है (दर्शन विवेचना, पृ.169।

साराशतः एक तरफ जहां हमारे प्राचीन वेदों और उपनिषदों के दार्शनिक विचार सत्य हैं. वहीं समय देश काल के अनुरूप उसे स्वीकरना और उसकी परिपाटी पर चलना एक अलग जरूरत है. जबकि समय–समाज की समस्याओं को हल करना हमारी महती आवश्यकता है. गीता भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि ग्रंथ है. वहीं उसका व्यावहारिक रूप उपयोग करने के लिए समाज को प्रेरित करता है. इसी आधुनिक चेतना व प्रेरणा के कारक विवेकानन्द, अरविन्द, रवीन्द्रनाथ, गांधी, दयानन्द और राधाकृष्णनन की शिक्षा, समाज, राजनीति, धर्म आदि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए चिंतन को यदि हम आत्मसात करें तो वह उनके लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी और इसी में हमारे मोक्ष अर्थात् कर्त्तव्य से मुक्ति का कारण भी छिपा हुआ है.

संदर्भ ग्रंथः

1. विवेकानन्द साहित्य संचयन, राधाकृष्ण मठ, नागपुर

2. विवेकानन्द साहित्य अंक 10

3. नारायणीम हिंदी त्रमासिक पत्रिका, मुम्बई अंक सितंबर 2014

4. शंकर का अद्वैत वेदान्त – डॉ. वीणा झा, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना

5. समकालीन भारतीय दर्शन

6. भारतीय दर्शन – डॉ. राधाकृष्णनन

7. उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण – रामचंद्र दत्ता त्रेयरानाडे

8. सर्वदर्शन संग्रह– विद्यारण्य मुनि

9. दर्शना विवेचना, वेद प्रकाश शर्मा, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

एक जनवरी भारतीय नववर्ष नहीं

डॉ. नितिन सहारिया शास. एम.एम. महाविद्यालय, कोतमा अनूपपुर (म.प्र.)

भारतीय समाज वर्तमान समय तक विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पश्चिमी वैज्ञानिक, पश्चिमी देशो को ही विज्ञान का जनक मानते चले आ रहे हैं। अपने ही देश के बौद्विक संस्थानो और प्रचार माध्यमों ने भारतीय इतिहास को ग्लानि ओर आत्मनिंदा की दृष्टि से ही देखने की चेष्ठा की है। देश कि सर्व साधारण लोगो में यह मिथ्या धारणा प्रचलित है कि विज्ञान के क्षेत्र में प्रकाश की किरण पश्चिम के आकाश में ही फुटी थी। पूर्व के आकाश में विज्ञान के क्षेत्र में अन्धकार व्याप्त था। इस धारणा के कारण मात्र पश्चिम का अनुकरण करने की वृत्ति देश में दिखाई देती है। इस बात की पुष्टि भारतवर्ष के पूर्व राश्ट्रपति व महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. कलाम अपने ग्रंथ– ''इण्डिया टू थाउजेन्ड ट्वेन्टी : ए विजन फार न्यू मिलेनियम'' में लिखते हैं कि– '' दुर्भाग्य से भारत में हम अपने श्रेष्ठतम सृजनात्मक पुरूषों को भूल चुके हैं। बिट्रिश लोग कोनग्रेव्ह के बारे में सारी जानकारी रखते हैं। पर हम कुछ नही जानते उन महान् इंजीनियरो के बारे में जिन्होने श्रेष्ठ अविष्कार किए। इसका कारण यह है कि विदेशियत के प्रभाव और अपने बारे में हीनता बोध की मानसिक ग्रंन्थि से देश के बुद्धिमान लोग ग्रस्त हैं और यह मानसिकता देश के लिए सबसे बड़ी बाधा है।'' वर्तमान मीडिया (सेटेलाइट चैनल) ने समाज को पश्चिम के रंग में रंगने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इस चित्र को बदलना है तो हीनता बोध की ग्रन्थि से भारतीय जनमानस को मुक्त होना होगा। दूसरे के सहारे कोई महान् नही बनता।

''कालः सृजति भूतानि कालः संहरते प्रजाः'' अर्थात, काल के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति और समाप्ति होती है, इसी के कारण ऋतुओं में परिवर्तन होते हैं। काल बीतने पर ही बालक पुरूष बन जाता है। काल से ही इतिहास का ज्ञान होता है। काल की गति अवाध है। समय किसी के लिए रूकता नही। आजकल काल की गणना 'वर्श' द्वारा की जाती है लेकिन बहुत प्राचीन काल में यह गणना चन्द्रमा के उदय व विकास तथा ऋतुओ के परिवर्तन द्वारा की जाती थी। वर्ष का अभिप्राय ही एक वर्ष से है। संसार कि प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में एक वर्ष में तीन ऋतुओं– शरद, बसन्त और हेमन्त का होना बतलाया गया है। –''शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तांछतमु वसंतान।'' (ऋग्वेद मण्डल 10/161/4)

ऋतुओं की उत्पत्ति, परिवर्तन सूर्य के कारण होता है अतः सूर्य को ऋतुओ को पिता या सविता कहा गया है। पश्चिमी जगत के प्रख्यात ब्रह्माण्ड विज्ञानी स्टीफन हॉकिन्स ने अपने ग्रंथ 'द ब्राइफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' (समय का संक्षिप्त इतिहास) में लिखते हैं कि– '' सृष्टि और समय एक साथ प्रारंभ हुए जब ब्रह्माण्डोत्पत्ति की कारणीभूत घटना आदिदृव्य में बिग–बैंग (महाविस्फोट) हुआ और इस विस्फोट के साथ ही अव्यक्त अवस्था से ब्रहाण्ड व्यक्त अवस्था में आने लगा। इसी के साथ समय भी उत्पन्न हुआ अतः सृष्टि और समय एक साथ प्रारंभ हुए।''

संसार के सबसे प्राचीन व प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद के 'नासदीय सूक्त' में सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व का वर्णन करते हुए कहा गया कि– '' तब न सत् था न असत् था, न परमाणु था न आकाश, तो उस समय क्या था? तब न मृत्यु थी, न अमरत्व था, न दिन था, न रात थी। उस समय स्पंदन शक्ति युक्त वह एक तत्व था।'' इस प्रकार सर्वप्रथम इच्छा शक्ति के प्रभाव से वह साम्यावस्था टूटी और अव्यक्त अवस्था से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति प्रारंभ हुई। इस प्रकार सृष्टि व काल की यात्रा साथ–साथ चलती है।

भारत वर्ष के ऋषियो ने काल की परिभाषा करते हुए कहा– 'कलयति सर्वाणि भूतानि', जो सम्पर्ण ब्रह्माण्ड को, सृष्टि को खा जाता है। यह ब्रहाण्ड एक बार बना और नष्ट हुआ, ऐसा नहीं होता। अपितु उत्पत्ति और लय पुनः उत्पत्ति और लय यह चक्र चलता रहता है। श्रीमद्भागवत् में शुकदेव मुनि राजा परीक्षित से कहते हैं– '' विषयो का रूपान्तर (बदलना) ही काल का आकार है, उसी को निमित्त बना वह काल तत्व अपने को अभिव्यक्त करता है। वह अव्यक्त से व्यक्त होता है।''

इस काल का सूक्ष्मतम अंश एक परमाणु काल अर्थात एक सेकण्ड का 37968 वॉ हिस्सा और महत्तम अंश ब्रह्म आयु अर्थात ब्रह्माण्ड की आयु– 31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष होता होता है भारतीय मनीषा की इस गणना को देखकर यूरोप के प्रसिद्ध ब्रह्माण्ड विज्ञानी कार्ल सेगन ने अपने ग्रंथ 'COSMOS' में कहा– '' विश्व में हिन्दू धर्म एक मात्र ऐसा धर्म है जो इस विश्वास पर समर्पित है कि इस ब्रह्माण्ड में उत्पत्ति और लय की एक सतत् प्रक्रिया चल रही है और यही एक धर्म है, जिसने समय के सूक्ष्मतम से लेकर बृहत्तम माप जो सामान्य दिनरात से लेकर 8 अरब 64 करोड़ वर्ष के ब्रम्हा के दिन रात तक की गणना की है जो संयोग से आधुनिक खगोलीय मापो के निकट है यह गणना पृथ्वी व सूर्य की उम्र से भी अधिक है तथा इनके पास और भी लम्बी गणना के माप हैं।''

भारतवर्ष में ग्रहीय गतियों का सूक्ष्म अध्ययन करने की परम्परा रही है। कालगणना पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य की गति के आधार पर होती रही। पृथ्वी अपनी धुरी पर 1600 कि.मी. प्रति धंटा की गति से घूमति हुई 24 घंटे में एक चक्र पूरा करती है। जो भाग सूर्य के सामने उसे अहः तथा जो पीछे उसे रात्र कहा गया। इस प्रकार 24 होरा (1 आहोरात्र में) ऐसा लगता है अंग्रेजी का Hour शब्द भी होरा का अपभ्रंश रूप है। पृथ्वी का 1^0 चलन सौर दिन कहलाता है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 1 लाख कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से कर रही है। पृथ्वी की परिक्रमा करते चन्द्र का 12 अंश तक चलन एक तिथि कहलाता है सारे विश्व में सप्ताह के दिन व क्रम भारतवर्ष में खोजे गये क्रम के अनुसार अर्थात पृथ्वी से उत्तरोत्तर दूरी के आधार पर ग्रहो का क्रम से सातो ग्रह एक –एक घंटे अधिपति, यह चक्र चलता रहता है। 24 घंटे पूरे होने पर अगले दिन के पहले घंटे का जो अधिपति ग्रह होगा, उसके नाम पर दिन का नाम रखा गया। सूर्य से सृष्टि हुई, अतः प्रथम दिन रविवार मानकर ऊपर बताये क्रम से शेष वारों का नाम रखा गया।

काल गणना के लिए आकाशस्थ 27 नक्षत्र माने गये। इन 27 नक्षत्रो के 4 पाद किये गये। इनमें से नौपाद की आकृति के अनुसार 12 राशियों के नाम रखे गये। पृथ्वी पर इन राशियो की रेखा निश्चित की गई जिसे क्रांति कहते है। जो नक्षत्र मास भर सायंकाल से प्रातः काल तक दिखाई दे तथा जिसमें चंन्द्रमा पूर्णताः प्राप्त करे, उस नक्षत्र के नाम पर चान्द्रमासो के नाम पड़े हैं। 1. चित्रा–चैत्र 2. विशाखा–वैशाख 3. ज्येष्ठा–ज्येष्ठ 4. अषाढ़ा–अषाढ़ 5. श्रवण–श्रावण 6. भाद्रपद–भाद्रपद 7. अश्विनी–आश्विन 8. कृत्तिका– कृतिका 9. मृगशिरा–मार्गशीर्ष 10. पुष्य–पौष 11. मघा–माध 12. फाल्गुनी–फाल्गुन नाम पड़े।

पृथ्वी सूर्य की एक लाख कि.मी. प्रति घंटे की गति से 96 करोड़ 60 लाख कि.मी. लम्बे पथ का $365^{1/2}$ दिन में एक चक्र पूरा करती है। इस काल को ही वर्ष माना गया है। यूरोप के प्रसिद्ध खगोलवेत्ता बेली का कथन दृष्टव्य है– '' हिन्दुओं की खगोलीय गणना के अनुसार विश्व का वर्तमान समय याने कलियुग का आरंभ ईसा के जन्म के 3102 वर्ष पूर्व 20 फरवरी को 2 बजकर 27 मिनट तथा 30 सेकेण्ड पर हुआ था। इस प्रकार यह काल गणना मिनट तथा सेकेण्ड तक की गई। आगे वे याने हिन्दु कहते हैं, कलियुग के समय सभी गृह एक ही राशि में थे तथा उनके पंचाग या टेबिल भी यही बताते हैं बाह्माणों द्वारा की गई गणना हमारे खागोलीय टेविल द्वारा पूर्णतः प्रमाणित होती है। इसका कारण और कोई नहीं अपितु ग्रहों के प्रत्यक्ष निरीक्षण के कारण यह समान परिणाम निकला है।''

वैदिक ऋषियों के अनुसार वर्तमान सृष्टि पंचमंडल क्रमवाली है। चन्द्रमण्डल, पृथ्वीमंण्डल, सूर्यमण्डल, परमेष्ठीमण्डल और स्वायभूमण्डल। यह उत्तरोत्तर मण्डल का चक्कर लगा रहे हैं। ऋषियो की अद्भुत खोज 'संकल्प मंत्र' माने ऊँअस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रहाणां द्वितीय परार्धे ..... अर्थात अनंतकाल से आजतक की समय की स्थिति बताने वाला मंत्र है जिसमें व्यक्ति, अमुक स्थान, सवंतसर, ऋतु, मास, तिथि, पक्ष, दिन, समय, व्यक्ति, गोत्र उद्देश्य (काम कर रहा है) बोलकर संकल्प करता है। इस पद्धति से करोड़ो वर्ष की काल गणना सहज ही स्मरण में आ जाती है।

पश्चिम में कालगणना का इतिहास चिल्ड्रन्स ब्रिटानिका VOL–3–1964 में संक्षिप्त वर्णन किया गया है। लैटिन में Moon के लिए Luna वSun के लिए Sol शब्द आते है। अतः Solar वर्ष कहते है। पश्चिमी जगत में ईसा के जन्म को मानक मानकर उनके पूर्व की घटनाओं को B.C. तथा पश्चात की घटनाओं को A.D. से व्यक्त किया जाता है। रोमन कैलेंडर में प्रारंभ से दस माह का वर्ष होता था। जिसमें 304 दिन होते थे बाद में राजा नूमा पिम्पोलियस ने ही माह Jonu arius व Februarius जोड कर 12 माह 355 दिन) का वर्ष बनाया। तब 46 बी.सी. में जूनियस सीजर ने कैलेंडर के संशोधन का आदेश दिया। तथा 7 वे महिने Ruinitiles को बदलकर जुलाई किया। ऐसे ही सम्राट अगस्टस ने आठवे महिने का नाम Sextilis बदलकर अगस्त कर दिया। एवं फरवरी के माह से 1 दिन लेकर अगस्त 31 दिन का कर दिया। 16 वी सदी में जुलियन कैलेंडर में 10 दिन बढ़ गये ओर चर्च फेस्टीवल आदि गडबडाने लगे, तो पोप ग्रेगोरी XIII ने 1582 में इस ठीक करने हुक्म जारी किया 4 अक्टूबर को 15 अक्टूबर माना जाये। वर्श का आरंभ 25 मार्च की बजाय 1 जनवरी से करने का आदेश दिया व कोलिको ने आदेश को तुरंत व प्रोटस्टेंटों ने धीरे–धीरे माना। 1752 तक विट्रेन में जूलियट कैलेन्डर में 11 दिन का अंतर आ गया। अंत ठीक करने हेतु 2 सितम्बर के बाद अगला दिन 14 सितम्बर कहा गया। इस प्रकार पश्चिम का कैलेन्डर बार–बार गडबड हो जाता था तो बार–बार बदला गया। किंतु भारतीय हिन्दु पंचाग पूर्णतः वैज्ञानिक गणनाओं पर आधारित हैं जो अनादिकाल से निरंतर चला आ रहा है। जिसमें एक सेकण्ड के अंदर 37968 व हिस्से तक की सूक्ष्म कालगणना की गई थी। इस पंचाग में विश्व–ब्राह्माण का मापन कर लिया। जो आज भी पश्चिमी जगत के लिए अद्भुत, अतुल्य, आश्चर्य बना हुआ है।

बड़े दुख व दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे देशवासी अपने हाँथो अपनी संस्कृति का गला घोंट रहे हैं। ऐसा लगता है कि राष्ट्रीय स्वाभीमान, देश प्रेम सब समाप्त हो चुका है

पश्चिमी संस्कृति की आंधी में समाज उन्मत्त होकर, आधी रात को मदमस्त होकर नाच रहा है। हम भूल गये कि भारतीय कालगणना से सारा विश्व, ब्राह्मण्ड व सृष्टि चल रही है जो हजारो वर्ष आगे का सूर्यग्रहण चन्द्रग्रहण पहले ही बता देता है जबकि पश्चिमी कैलेण्डर से दुनिया के मुठठी भर देश चल रहे है बेली, स्टीफन हकिन्स, कार्लसेगन, आइंसटीन इत्यादि पश्चिमी जगत् के महान वैज्ञानिकों ने भारतीय मनीषा की मेघा के आगे सर झुकाया । ये कैसी समझदारो की नासमझी है कि हमने स्वयं ही अपनी संस्कृति को विस्मृत कर दिया है। सारे विश्व का मार्गदर्शन करने वाली विश्व की प्रथम व सनातन–पुरातन देव संस्कृति जिसने नर पशु को देव मानव (महापुरूष) बनाया। जिसका गुणगान करके स्वामी विवेकानंद जी ने सारे विश्व को जगाया। ऐसी अमृतमयी, अनादी, अखण्ड, अजेय संस्कृति के वंशज आज अपनी नाभी की कस्तूरी को भूलकर पश्चिम की ओर जा रहे हैं। भटक रहे हैं। स्वामी रामतीर्थ ने कहा था– '' जिस देश का समाज अपनी संस्कृति से विमुख हो जाता है तब उसका पतन निश्चित है।''

सारे विश्व को ''जीवन जीने की कला'' सिखाने वाला दुनियॉ का सिरमौर राष्ट्र भारत आज भटक रहा है शायद हमने देशभक्त भाहीदों की कुर्वानी को विस्मृत कर दिया है। हम निष्ठुर, संवेदनाहीन, कापुरूष होते जा रहे है। हमने कर्त्तव्य, धर्म को तिलांजली देकर संकीर्ण स्वार्थ को गले लगा लिया है। कापुरूष वाला मार्ग अपना लिया है। '' हे गौरीनाथ! हे जगदम्बे! मेरे बंधुओ/ भगनियों को मनुष्यत्व दो, माँ! हम सभी की दुर्बलता और कापुरूषता दूर कर दो। माँ! हमें मनुष्य बना दो।''

संदर्भः

1. डॉ. ए.पी.जे. कलाम– इण्डिया 2020, पृ. 27–28।
2. वासुदेव पोद्दार– विश्व की कालयात्रा, पृ. 14। अ.भा. इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली, 2000।
3. ऋग्वेद 10/161/4
4. कार्ल सेगन– कॉसमोस, पृ. 214।
5. डॉ. रवि प्रकाश आर्य– भारतीय काल गणना, अ.भा. इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली।
6. डॉ. मुरली मनोहर जोशी– भारत वर्ष में विज्ञान व प्रोद्योगिकी की स्थिति, पृ. 8।
7. आर्थर सी. क्लार्क– मेन एण्ड स्पेस, पृ. 166।
8. डॉ. बी.जी. नायक– विज्ञान अध्यात्मना मार्गे, पृ. 40।

कलचुरि कालीन गौण देवी–देवताओं की संयुक्त प्रतिमाएँ

डॉ. अभय सिंह, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग, रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

सूर्य की संयुक्त प्रतिमाः सूर्य की गणना ब्राह्मण देवों में मुख्य देवता के रूप में की जाती थी। सूर्य के उपासकों का एक स्वतंत्र और सम्प्रदाय पाँच मुख्य ब्राह्मण सम्प्रदायों में से एक है। हिन्दु धर्म में विष्णु के बाद सूर्य का स्थान आता है। सूर्य आकाशीय ग्रह है, अंधकार का नाश सूर्योदय से ही होता है। अतः देववाद में सूर्य का वैदिक काल से ही मुख्य स्थान है। वैदिक काल में सूर्य के 12 रूपों की उपासना होती थी, उनके नाम सूर्य, वरूण, भग, विवस्वान, धाता, मित्र, अर्यमा, विष्णु, सावित, पूषण, त्वस्ट्रा रूद्र है।[1] इन बारह रूपों को पुराणों एवं महाकाव्यों ने भी समर्थन किया है। सूर्य सविता की दिव्य शक्ति का मानवीय रूप का वर्णन वैदिक कवियों की दृष्टि में भी है, जबकि सूर्य, एक अधिक स्थूल देवता है।[2] वेदों में कुछ स्थानों पर सूर्य, सुनहरे पंख वाले सुन्दर पक्षी रूप में उल्लेखित किए गए हैं तथा कही श्वेत चमकते घोड़े के रूप में, जो उमष द्वारा चलाए जाते है। विष्णु के वाहन गरूड़ का विकास इसी दिव्य सुवर्ण गरूतमान से हुआ।[3] ऋग्वेद में उल्लेख है कि सूर्य 4 या 7 घोड़ों द्वारा खीचे जाने वाली गाड़ी पर बैठकर चलते है।[4] पौराणिक विवरणों के अनुसार उनका विवाह (त्वस्ट्रा) की पुत्री संज्ञा (सरव्यू) के साथ हुआ था।[5] महाभारत में सूर्य को पीत वर्ण, कवच, कुण्डल एवं आभूषणधारी तथा विशाल बाहु बतलाया है।[6]

सूर्य की त्रिमुखी संयुक्त प्रतिमा बिलहरी से प्राप्त हुई है। जो वही विष्णु मंदिर के अंदर संरक्षित है।[7] यह 10वीं शती इस्वी की त्रिमुखी सूर्य प्रतिमा, इसमें सात घोड़ों के रथ के ऊपर सूर्य स्थानक मुद्रा में सवार है। प्रतिमा अष्ट भुजी है, जिसके सभी हाथ खण्डित है। सूर्य का सारथी ''अरूण'' चला रहा है। सूर्य देव के पैरों के बीच भू–देवी का अंकन है उनका बायां हाथ अभय मुद्रा में है। दोनों ओर चवर धारक हैं तथा इनके बाजू में एक–एक स्थानक पुष्पाकृति उत्कीर्ण है। पादपीठ के दोनों कोनों पर हाथ जोड़ें अंजलिबद्ध मुद्रा मे उपासक उपासिकाएं बैठी अवस्था में है। देव दायें नीचे वृषभ का अंकन है। प्रतिमा के ऊपरी भाग के दोनों ओर माल लिए उड़ते युगल विद्याधर और देव के मध्य दोनों ओर गजशर्दुल अलंकृत हैं सूर्य देव के मस्तक के पीछे प्रभामण्डल है। देव को किरीट, मुकुट, कुण्डल, चन्द्रहार, कटिमेखला, वनमाल एवं यज्ञोपवीत ग्रहण किए दिखाया गया है।

कलचुरि युग की इस संयुक्त प्रतिमा श्रेष्ठ तथा अनोखी मानी जा सकती है, क्योंकि इसके तीन मुख होना अपनी कला शैली दुर्लभ प्रतिमा का बोध कराती है।

जबलपुर जिले से प्राप्त हुई सूर्य के संयुक्त प्रतिमा सूर्य प्रतिमा लक्षण के विकास की पराकाष्ठा प्रदर्शित करती है, जिनमें उषा–प्रत्यूषा, कामदेव सप्ताश्व, गंधर्व आदि अन्य आकृतियां भी उत्कीर्ण है। अलंकरण एवं मुख आकर्षक होते हुए भी शरीर की बनावट में स्पष्टतः कड़ापन और भाव के स्तर पर ठहराव दिखाई देता है। सूर्य के मुख पर मदास्मित का भाव मनमोहक है। अतिसूक्ष्मता से अलंकरण को उत्कीर्ण किया गया है। नारी प्रतिमाओं में पयोधरों उदरभाग और जानुभाग विशेष रूप से आकर्षक एवं मृदु दिखाए गए है। प्रतिमाओं के चेहरे छोटे, गोल या अण्डाकार, कपोल भरे हुए, चिबुक तीखे एवं नासिका जिसका नीचे का भाग कुछ फूला हुआ एवं दोनों होंठ पतले और तीखे है। जिले की सूर्य की संयुक्त प्रतिमाएं सामान्यतः शिल्प शास्त्रीय विवरण से साम्य है।

ब्रह्माः ब्राह्मण धर्म के त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) ब्रह्मा को प्रथम दिया गया है और उन्हें सृष्टि के रचना कार्य से संबंधित माना गया है। वैदिक साहित्य में इस देवता के विभिन्न रूपों का वर्णन मिलता है, सृष्टि के निर्माण करने वाले देवता के लिए विश्वकर्मण, हिरण्यगर्भ, ब्राह्मणस्पति, ब्रह्मा और प्रजापति आदि विशेषण[1], प्रयुक्त हुए है इनमें से प्रजापति का संबंध सृष्टि रचना के साथ–साथ यज्ञ से भी है।[2] ऋग्वेद के दशम् मण्डल और ब्राह्मण ग्रंथों में ब्रह्मा को प्रजापति कहा गया है वैदिक मंत्रों में इनको समस्थ जीवों के जन्मदाता के रूप में वर्णित है। शतपथ ब्राह्मण में प्रजापति (ब्रह्मा) ने मत्स्य, वराह, कच्छप रूप धारण किया था किन्तु महाभारत एवं पौराणिक काल में ब्रह्मा का वह स्थान न रहा। विष्णु पुराण के अनुसार भगवान ब्रह्मा रूप से विश्व की रचना करते है विष्णु रूप से पालन करते है तथा शिव रूप से संहार करते है। वायु पुराण में त्रिदेवों का अंकन मिलता है।[3]

ब्राह्मण साहित्य एवं उपनिषद् में देवों से पूर्व इनकी उत्पत्ति मानी गई है।[4] नारायण की नाभि से उत्पन्न कमल से ब्रह्मा का जन्म हुआ है। ब्रह्माजी ने नारायण की स्तुति की और सृष्टि रचना के लिए पुनः कमल पर विराजमान हो गए। शिल्पग्रंथों में ब्रह्मा की कमल पर आसीन चतुर्भुजी, कमण्डल लिए, स्त्रुव, अक्षमाला व वेद धारण करते है।[5]

गुप्तकाल में ब्रह्मा की प्रतिमाओं की प्राप्ति से यह अनुमान होता है कि उस काल में ब्रह्मा की पूजा होती थी। देवगढ़ के दशावतार मंदिर के शिलापट्ट पर ब्रह्मा कमलासन प्रतिमा बनी हुई है।[6]

जबलपुर से भी ब्रह्मा की गुप्तकालीन प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। तिगवा के गुप्ताकालीन कंकाली मंदिर की दीवार पर शेषसायी विष्णु जी की नाभि से निकले हुए कमल पर आसीन दिखाया गया है।[7]

ब्रह्मा की मण्डला से प्राप्त त्रिमुखी प्रतिमा 11वीं शती इस्वी की है जो रानी दुर्गावती संग्रहालय में प्रदर्शित है कलचुरि कालीन है[8] यह प्रतिमा चतुर्भुजी है, कमल पर खड़े प्रदर्शित है कमल के नीचे मयूर का अंकन है। मस्तक पर एक विशेष प्रकार की पगड़ी है दायें–बायें दोनों तरफ उपासक, उपासिकाएं बैठी हैं मस्तक के पीछे प्रभामण्डल का अंकन है एवं मुख के दोनों तरफ हाथ जोड़े देवताओं का अंकन है। उनकी लम्बी दाढ़ी, कुण्डल, यज्ञोपवीत आदि से सुशोभित है। उपरोक्त प्रतिमा एक दुर्लभ प्रतिमा है, क्योंकि ब्रह्मा के तीन मुख, शास्त्रों में चार का उल्लेख है किन्तु यह त्रिमुखी प्रतिमा कलचुरि कला की वैशिष्टता की ओर संकेत करती है। ब्रह्मा की सर्वाधिक प्रतिमाएं खजुराहों से प्राप्त है।

संदर्भ सूची :

1. ऋग्वेद 10/72, 82, 121 एवं शतपथ ब्रह्मण 10/6/5–9
2. वहीं 10/121, मिश्र, इन्दुमति प्रतिमा विज्ञान पृ. 110
3. मिश्र, इंदुमति – प्रतिमा विज्ञान, पृष्ठ 110–112
4. वैदिक, माइथोलॉजी, पृष्ठ 118–119
5. महाभारत वनपर्व 272/47
6. वृहत संहिता 58/41
7. विष्णु धर्मोत्तर पुराण 44/3–4
8. चित्र संख्या